

पाठ-12 : हिंदी गद्य का विकास और गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ (तृतीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

भाग-क : हिंदी गद्य का विकास

1.0	हिंदी गद्य का विकास	6
1.1	आधुनिककालीन गद्य साहित्य	6
1.2	भारतेंदु युगीन गद्य साहित्य	6
1.3	द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य	9
1.4	छायावाद युगीन गद्य साहित्य	13
1.5	छायावादोत्तर गद्य साहित्य	15

भाग-ख : गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ

2.0	गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ	19
2.1	उपन्यास	20
2.2	कहानी	21
2.3	नाटक	23
2.4	एकांकी नाटक	24
2.5	निबंध	25
2.6	जीवनी	26
2.7	आत्मकथा	26
2.8	संस्मरण	27
2.9	रेखाचित्र	27
2.10	रिपोर्टाज	27
2.11	साक्षात्कार	27
2.12	यात्रा वृत्तांत	27

भाग-क : हिंदी गद्य का विकास

1.0 हिंदी गद्य का विकास

आधुनिक काल से पूर्व हिंदी गद्य का विकसित रूप नहीं मिलता है। तब राजस्थानी, मैथिली, ब्रजभाषा और खड़ीबोली रूपों में गद्य साहित्य की रचना हुई। राजस्थानी गद्य मुख्यतः जैन धर्म और राजपूत नरेशों के आश्रय में लिखा गया। मैथिली गद्य में विद्यापति की 'कीर्तिलता' पुस्तक चर्चित है। ब्रजभाषा रूप में गद्य को वैविध्य प्राप्त हुआ। पुष्टि संप्रदाय के कई भक्त कवियों तथा अष्टछाप के अनेक कवियों ने गद्य में भी लेखन किया। इनमें श्री गुसाई जी की रचनाएँ 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' उल्लेखनीय हैं। मौलिक रचनाओं के साथ गद्य में टीका साहित्य तथा संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं से ब्रजभाषा में अनूदित कृतियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कुल मिलाकर धर्म, राजनीति, अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, लोकवार्ता और गणित आदि विषयों पर गद्य का प्रारंभिक प्रयास देखने को मिलता है। खड़ी बोली रूप में गद्य का उद्भव दक्षिण भारत से प्रारंभ होता है जो दक्खिनी गद्य कहलाता है। ख्वाजा बंदे नवाज नेसुदराज की 'मीराजुल आशकीन', 'हिदायतनामा' और 'बारहमासा' तत्कालीन गद्य की चर्चित रचनाएँ हैं। अठारहवीं सदी में उर्दू का प्रचार बढ़ने से दक्खिनी गद्य का विकास नहीं हो सका। किंतु उत्तर भारत में गद्य का निरंतर विकास हुआ।

1.1 आधुनिककालीन गद्य साहित्य

आधुनिक काल में गद्य का आरंभ भारतेंदु युग (1850-1900) से माना जाता है। यह युग सांस्कृतिक नवजागरण और सामाजिक चेतना से युक्त था। इस दौरान लल्लू लाल के 'प्रेम सागर', सदन मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' मुंशी सदासुखलाल के 'सुखसागर' ग्रंथों और इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' में अच्छा गद्य देखने को मिलता है। इस क्रम में आर्य समाज के संस्थापक, गुजराती भाषी समाज सुधारक दयानंद सरस्वती का 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ अनेक लेखकों के लिए गद्य लेखन की प्रेरणा भी बना।

1.2 भारतेंदु युगीन गद्य साहित्य (1857-1900 ई.)

1857 की क्रांति की विफलता से भारत में विदेशी सत्ता की जड़ें और मजबूत हो गईं। भारत ब्रिटिश राज्य का उपनिवेश बन गया। भारत के लोगों में जागरूकता और उनमें राष्ट्रीयता की भावना पनपी जिसका असर इस काल के साहित्य में प्रकट हुआ। इसलिए इस काल को राष्ट्रीय जागरण काल कहा जाता है।

इसी समय भारत के साहित्याकाश में भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1900 ई.) का उदय हुआ। हरिश्चंद्र अद्वितीय प्रतिभा संपन्न लेखक थे। उन्हें हिंदी खड़ी बोली का प्रवर्तक माना जाता है। उनकी लेखनी साहित्य की सभी विधाओं में अबाध गति से चली।

नाटक, उपन्यास, निबंध, समालोचना, अन्य भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद आदि सभी कुछ उन्होंने पैंतीस वर्ष की अल्पायु में कर दिखाया। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन और प्रकाशन भी किया। उनकी सभी रचनाएँ भारतेंदु ग्रंथावली में संकलित हैं। उनकी रचनाओं में परिपक्वता है। जैसे, भारत की दुर्दशा पर उनकी प्रतिक्रिया -

रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई।

हा ! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

स्वभाषा की उन्नति पर वे टिप्पणी करते हैं—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सभी विधाओं में रचनाएँ की हैं—

- (क) अनूदित नाटक : 1. विद्या सुंदर (1868), 2. पाखंड विडंबन (1872), 3. मुद्राराक्षस (1876)
- (ख) मौलिक नाटक : 1. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873), 2. सत्य हरिश्चंद्र (1875), 3. श्री चंद्रावली नाटिका (1876), 4. विषस्य विषमौषधम (1876), 5. भारत जननी [नाट्य गीत (1877)], 6. भारत दुर्दशा (1880), 7. नीलदेवी (1881), 8. अंधेर नगरी (1881)
- (ग) उपन्यास : 1. सुलोचना, 2. मदालसोपाख्यान
- (घ) निबंध : 1. काश्मीर कुसुम, 2. उदय पुरोदय
- (ङ) समालोचना : 'नाटक' (नाट्य शास्त्र का आलोचनात्मक ग्रंथ)
- (च) पत्र-पत्रिकाएँ : कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन (महिलाओं के लिए)

(क) नाटक

जैसा कि कहा गया है, खड़ी बोली के नाटकों के उन्नयन में भारतेंदु का बहुत बड़ा योगदान है। इस काल में ऐतिहासिक, सामाजिक आदि सभी तरह के नाटकों की रचना की गई।

देश की तत्कालीन दुर्दशा को लेकर लिखे गए नाटकों में बालकृष्ण भट्ट कृत 'नई रोशनी का विष' (1884 ई.), राधाकृष्ण दास कृत 'दुखिनी बाला' (1880 ई.), काशीनाथ खत्री कृत 'विधवा विवाह' (1899 ई.), देवकीनंदन त्रिपाठी कृत 'भारत हरण' (1889 ई.) आदि उल्लेखनीय हैं।

इस काल में कई प्रहसन भी लिखे गए, यथा—

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'अंधेर नगरी'

— भारतेंदु हरिश्चंद्र

'जैसा काम वैसा परिणाम' (1877 ई.), 'आधार विडंबन' (1899 ई.)

— बालकृष्ण भट्ट

'कलि कौतुक'

— प्रताप नारायण मिश्र

स्वयं भारतेंदु ने संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी के नाटकों का अनुवाद प्रस्तुत किया। इस काल में संस्कृत से भवभूति, कालिदास, शूद्रक तथा हर्ष के नाटकों के अनुवाद किए गए। भारतेंदु ने 1880 ई. में शेक्सपीयर कृत मर्चेंट ऑफ वेनिस का 'दुर्लभ बंधु' (वेशपुर का महाजन) के नाम से अनुवाद किया।

बालेश्वर प्रसाद ने इसका 'वेनिस का व्यापारी' नाम से अनुवाद किया है। मथुरा प्रसाद शर्मा ने 1893 में 'साहसेंद्र साहस' नाम से 'मैकबेथ' का अनुवाद किया। गोपीनाथ पुरोहित ने सन् 1896 में 'एज यू लाइक इट' का 'मनभावन' नाम से अनुवाद किया।

भारतेंदु का हिंदी रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। न केवल वे एक सफल नाटककार थे वरन वे एक कुशल अभिनेता भी थे। उनके नाटक अंधेर नगरी और भारत दुर्दशा का कई बार मंचन हुआ जिसमें उन्होंने स्वयं भाग लिया।

(ख) उपन्यास

हिंदी में उपन्यासों की रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी उपन्यासों से मिली।

इस काल में सामाजिक बुराइयों को लेकर कई महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की गई। श्रीनिवास कृत 'परीक्षा गुरु' में नायक मदनमोहन सामाजिक कुरीतियों के जाल में फँसकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है। श्रीनिवास दास कृत 'नूतन ब्रह्मचारी' और 'सौ अजान एक सुजान' में मौलिक नैतिक चेतना को प्रचार-प्रसार दिया गया है।

किशोरीलाल गोस्वामी ने 'त्रिवेणी या सौभाग्य श्रेणी', 'आदर्श सती', 'स्वर्गीय कुसुम', 'सुख सर्वरी' की रचना की। 'बड़ा भाई' नामक उपन्यास गोपालदास गहमरी ने 1898 में लिखा और इस परंपरा में 'सास पतोहू' उपन्यास सन 1898 में लिखा गया।

इस युग की रचनाओं में कई सामाजिक समस्याएँ उठाई गईं यथा अनमेल विवाह ('पूर्ण प्रकाश चंद्रप्रभा'), वेश्यावृत्ति ('चंद्रावती', 'काजर की कोठरी', 'वीरांगना रहस्य'), स्वच्छंद प्रेम ('प्रणयिनी-परिणय', 'चपला', 'तरुण तपस्वी', 'प्रेममयी'), गृहस्थ जीवन ('आदर्श दंपति', 'सास पतोहू') आदि।

(ग) निबंध

भारतेंदु युग के निबंध साहित्य के प्रमुख लेखक थे बालकृष्ण भट्ट जिन्होंने "माता का स्नेह, 'कालचक्र का चक्कर', 'शब्द की आकर्षण शक्ति', 'आत्मगौरव' आदि निबंध लिखे।

प्रताप नारायण मिश्र ने 'हमारी आवश्यकता', 'आप', 'बात', 'भौं', 'धोखा' आदि निबंध लिखे।

बालमुकुंद गुप्त (1865-1908) ने 'ब्रजभाषा', 'भारत की भाषा - एक लिपि की जरूरत', 'हिंदी में आलोचना', 'प्रवासी की आलोचना' आदि विषयों पर निबंध लिखे।

(घ) जीवनी साहित्य

जीवनी साहित्य का विकास भी भारतेंदु युग से ही प्रारंभ हुआ। स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कालिदास, रामानुज, जयदेव, शंकराचार्य आदि की जीवनियाँ लिखीं।

कार्तिक प्रसाद खत्री ने 'अहिल्या बाई' (1887 ई.), 'छत्रपति शिवाजी' (1890 ई.), 'मीराबाई' (1893 ई.) का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया।

काशीनाथ खत्री ने 'भारत की अनेक रानियाँ' (1879 ई.), 'भारत की विख्यात स्त्रियों का जीवन चरित्र' (1883 ई.) आदि जीवनियाँ लिखीं।

राधाकृष्ण दास ने 'बाप्पा रावल' (1884 ई.), 'नागरीदास' (1894 ई.), 'बिहारीलाल' (1893 ई.), 'सूरदास' (1990 ई.) आदि की जीवनियाँ लिखीं।

(ड) यात्रा वृत्तांत

स्वयं भारतेन्दु ने कई यात्रा वृत्तांत लिखे, उनमें 'सरयूपार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'हरिद्वार की यात्रा' उल्लेखनीय हैं। बालकृष्ण भट्ट ने 'गया यात्रा' लिखी। प्रतापनारायण मिश्र ने 'विलायत यात्रा' का विवरण दिया।

1.3 द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य : (1900-1918 ई.)

द्विवेदी युग में साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। राष्ट्रीय चेतना में सामाजिक जागरूकता और धार्मिक उदारता भी शामिल हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार, शोध एवं उच्च कोटि के साहित्य के प्रकाशन की दिशा में भी इस युग में कई कदम उठाए गए।

16 जुलाई 1893 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। सन् 1900 में काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका निकली। 1903 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसके प्रथम संपादक श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी थे।

द्विवेदी जी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने अन्य साहित्यकारों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं उनका मार्ग दर्शन भी किया तथा लेखों में भाषा का परिमार्जन भी वे स्वयं किया करते थे।

द्विवेदी जी की कृतियाँ –

साहित्यिक निबंध	:	कवि और कविता, नाट्य शास्त्र, कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता, कालिदास के मेघदूत का रहस्य
जीवन चरित्र	:	हर्बर्ट स्पेंसर, गायनाचार्य पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर
वैज्ञानिक	:	मंगल ग्रह तक तार, कुछ आधुनिक आविष्कार
ऐतिहासिक	:	आर्यों की जन्मभूमि, भारत वर्ष की सभ्यता की प्राचीनता, प्राचीन भारत में जहाज।
भौगोलिक	:	दक्षिणी ध्रुव की यात्रा, जापान की स्त्रियाँ
उद्योग शिल्प	:	खेती की बुरी दशा, भारत में औद्योगिक शिक्षा
व्याकरण	:	भाषा और व्याकरण, नवरत्न
आध्यात्मिक	:	परमात्मा की परिभाषा, पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष प्रमाण
अनुवाद	:	कुमार संभवसार, हिंदी महाभारत, मेघदूत, बेकन विचार रत्नावली

(क) नाटक

इस युग में नाटकों को उतना महत्व नहीं दिया गया जितना साहित्य की अन्य विधाओं को। इस युग के नाटकों में विषयों की विविधता अवश्य रही।

धार्मिक पौराणिक नाटकों में जो उल्लेखनीय हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :-

गंगाप्रसाद गुप्त – वीर जयमल (1903 ई.)

वृंदावनलाल वर्मा	—	सेनापति ऊदल (1909 ई.)
जयशंकर प्रसाद	—	राज्यश्री (1915 ई.)

सामाजिक समस्याओं पर लिखे गए नाटक—

भगवती प्रसाद	—	वृद्ध विवाह (1905 ई.)
मिश्र बंधु	—	नेत्रोन्मीलन (1915 ई.)

(ख) उपन्यास

इस समय के अधिकांश ऐतिहासिक उपन्यास मुस्लिम काल के इतिहास पर आधारित हैं। जैसे—

लेखक	रचनाएँ
किशोरीलाल	— सुलताना रजिया बेगम (1865-1932 ई.), रंगमहल में हलाहल (1904 ई.)
गंगाप्रसाद गुप्त	— नूरजहाँ (1902 ई.), हम्मीद (1907 ई.)
जयरामदास गुप्त	— कश्मीर पतन (1907 ई.), मलका चाँदबीबी (1909 ई.)
मथुराप्रसाद शर्मा	— नूरजहाँ बेगम, जहाँगीर (1905 ई.)

द्विवेदी युग में सामाजिक समस्याओं पर भी उपन्यास लिखे गए। कुछ उपन्यासों का विवरण इस प्रकार है —

लेखक	रचनाएँ
अयोध्यासिंह उपाध्याय	— अधखिला फूल (1907), ठेठ हिंदी का ठाठ (1899 ई.)
लज्जाराम शर्मा	— आदर्श दंपत्ति (1904 ई.), सती सुखदेवी (1907 ई.), आदर्श हिंदी (1914 ई.) इत्यादि
मन्नन द्विवेदी	— रामलाल (1917 ई.)
ब्रजनंदन सहाय	— सौंदर्योपासक (1911 ई.), राधाकांत (1912 ई.)

इस युग के जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक थे गोपालराम गहमरी (1866-1946)। उनका अनूदित ग्रंथ गोविंदराम (1905) है जो आर्थर कानन डायल की रचना पर आधारित था। उनकी रचनाएँ हैं—‘सरकटी लाश’ (1900), ‘चक्करदार चोरी’ (1901), ‘जासूस की भूल’ (1901), ‘जासूस पर जासूसी’ (1904) इत्यादि। इस क्षेत्र में अन्य लेखक थे—रामलाल वर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी और जयरामदास गुप्त। किशोरीलाल गोस्वामी ने तिलस्मी उपन्यासों की रचना की थी।

(ग) कहानी

इस काल में उच्च कोटि की कहानियाँ लिखी गईं। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, वृंदावन लाल वर्मा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन आदि लेखकों ने कहानी विधा को नई दिशा दी और उसे उच्च स्तर पर पहुँचा

दिया। इस युग में संस्कृत और बंगला भाषाओं से कहानियों का अनुवाद भी किया गया। किशोरीलाल गोस्वामी ने शेक्सपीयर के 'टैपेस्ट' का अनुवाद 'इंदुमती' (1900) नाम से किया।

इस युग के कहानीकारों में उल्लेखनीय कहानीकार हैं—

लेखक	रचनाएँ
भगवान दीन	— प्लेग की चुड़ैल
माधवप्रसाद मिश्र	— मन की चंचलता
रामचंद्र शुक्ल	— ग्यारह वर्ष का समय
जयशंकर प्रसाद	— छाया (कहानी संग्रह 1912)
वृंदावन लाल वर्मा	— राखीबंद भाई (1909)
चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	— उसने कहा था (1915), बुद्धू का काँटा, सुखमय जीवन
प्रेमचंद	— मानसरोवर (आठ भागों में संकलित कहानियों का संग्रह)

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ अत्यधिक लोकप्रिय हुईं। इन्होंने तत्कालीन समस्याओं पर कहानियाँ लिखीं। जन सामान्य, गरीब वर्ग के दुखपूर्ण जीवन को, उनकी परेशानियों, उनकी विवशता को इन्होंने जाँचा-परखा और अपनी कहानियों का विषय बनाया।

(घ) निबंध

इस युग से पूर्व ही निबंध एक स्वतंत्र और सशक्त विधा का रूप ले चुका था। पंडित गोविंद नारायण मिश्र (1859-1923 ई.) के निबंधों का संकलन है 'गोविंद निबंधावली'।

पद्मसिंह शर्मा (1876-1932) ने 'बिहारी सतसई' पर संजीवनी भाष्य लिखा। इनकी निबंध रचनाएँ—'पद्मपुराण' और 'प्रबंध मंजरी' में संग्रहीत हैं।

श्यामसुंदर दास (1875-1945) की प्रमुख रचनाएँ हैं—'भारतीय साहित्य की विशेषताएँ', 'समाज और साहित्य', 'कर्तव्य और सभ्यता', 'रासो शब्द', 'हमारी भाषा', 'तुलसीदास', 'सूरदास की कला-विवेचना', 'नागरी अक्षर और भाषा'।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रारंभ में अंग्रेजी से कुछ निबंधों का अनुवाद किया। इन्होंने 'ईर्ष्या', 'घृणा', 'उत्साह', 'क्रोध', 'श्रद्धा', 'लज्जा', 'लोभ', 'ग्लानि' जैसे मनोवैज्ञानिक विषयों पर विद्वत्तापूर्ण तर्कयुक्त निबंध लिखे।

बालमुकुंद गुप्त अपनी व्यंग्य विनोदपूर्ण शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। 'शिवशंभू के चिट्ठे' उनके निबंधों का संग्रह है।

अध्यापक पूर्ण सिंह के निबंध हैं 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता' आदि। इनमें बहुजता के साथ भावुकता का समावेश है।

(ङ) आलोचनात्मक कृतियाँ

आलोचना पद्धति का आधार संस्कृत का साहित्य शास्त्र है। निम्नलिखित लेखकों ने विवेचनात्मक टीका तथा शास्त्रीय आधार पर तुलनात्मक व्याख्यात्मक शैलियों में आलोचना ग्रंथों का सृजन किया।

लेखक

रचनाएँ

लाला भगवानदीन व कृष्ण बिहारी मिश्र	—	बिहारी और देव (तुलना)
जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'	—	बिहारी रत्नाकर - बिहारी सतसई की टीका
मिश्र बंधु	—	हिंदी नवरत्न (1910)

राजनीतिक चेतना का जैसे-जैसे विकास होता गया वैसे-वैसे साहित्य में राष्ट्रीय भावना का विकास होता गया

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य-सेवा में अपना जीवन लगा दिया। सरस्वती के संपादक के रूप में इन्होंने भाषा में एकरूपता लाने और उसके परिष्कार का सराहनीय कार्य किया। ये कवि, निबंधकार, आलोचक, पत्रकार, अनुवादक और संपादक थे।

(च) जीवनी

इस युग के जीवनी लेखकों में द्विवेदी जी, दयाराम, संपूर्णानंद आदि प्रमुख हैं। इन लेखकों ने स्वामी दयानंद, अरविंद, महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय आदि की जीवनियाँ लिखीं। महान महिलाओं की जीवनियाँ भी प्रकाशित हुईं जिनमें रानी दुर्गावती, नूरजहाँ, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवनवृत्त आदि उल्लेखनीय हैं।

(छ) यात्रा वृत्तांत

यात्रा वृत्तांत विधा के क्षेत्र में यह युग काफी संपन्न है। इस काल में अनेक यात्रा वृत्त प्रकाशित हुए। यथा—

स्वामी मंगलानंद	—	मारीशस यात्रा (1912 ई.)
श्रीधर पाठक	—	देहरादून शिमला यात्रा (1913 ई.)
गोपालराम गहमरी	—	लंका यात्रा (1916 ई.)
ठाकुर गदाधर सिंह	—	चीन में तेरह मास (1902 ई.)
सत्यदेव परिव्राजक	—	अमरीका दिग्दर्शन (1911 ई.), मेरी कैलाश यात्रा (1915 ई.), अमरीका भ्रमण (1916 ई.)

(ज) संस्मरण

संस्मरण लेखकों में कुछ अग्रणी लेखक थे—

महावीर प्रसाद द्विवेदी	—	अनुमोदन का अंत (1905), सभा की सभ्यता (1907)
प्यारेलाल मिश्र	—	लंदन का फॉग या कुहरा (1908)
जगदबिहारी सेठ	—	मेरी बड़ी छुट्टियों का प्रथम सप्ताह (1913)
रामकुमार खेमका	—	इधर-उधर की बातें (1918) आदि।

1.4 छायावाद युगीन गद्य साहित्य

छायावाद काल की समय सीमा 1920-1936 ई. निर्धारित की गई है। 'छायावाद' वस्तुतः एक काव्य प्रवृत्ति है। छायावाद युगीन गद्य रचनाओं की संक्षिप्त जानकारी आगे दी जा रही है।

(क) नाटक

जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.) के नाटक 'अजातशत्रु' (1922), 'जनमेजय का नागयज्ञ' (1926), 'स्कंदगुप्त' (1928), 'चंद्रगुप्त' (1931), 'ध्रुव स्वामिनी' (1933) आदि से नाट्य विधा को अपार ख्याति मिली। इनकी रचनाएँ अन्य नाटककारों के लिए प्रेरक बनीं।

आगे चलकर नाट्य विधा अपनाने वालों में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण 'प्रेमी', अंबिकादत्त त्रिपाठी, गोविंद वल्लभ पंत, सेठ गोविंददास आदि प्रमुख हैं।

लक्ष्मीनारायण मिश्र की कुछ नाट्य रचनाएँ हैं—'संन्यासी' (1929), 'मुक्ति का रहस्य' (1932), 'सिंदूर की होली' (1934)। इसी युग के हरिकृष्ण प्रेमी ने 'रक्षाबंधन' (1934), 'प्रतिशोध' (1937) आदि नाटकों की रचना की।

(ख) उपन्यास

प्रेमचंद मुख्य रूप से मध्य वर्ग और निम्न वर्ग के कथाकार हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ है जो आदर्श की ओर संकेत करता है। प्रेमचंद (1880-1936 ई.) ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी। उन्हें उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है। युग की माँग के अनुसार उन्होंने गांधीवाद को भी अपनाया। मानव चरित्र की तह तक जाना और उसे अभिव्यक्ति देना प्रेमचंद की प्रमुख विशेषता थी। उनके प्रमुख उपन्यास हैं—सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान।

इस काल के महत्वपूर्ण लेखकों में जयशंकर प्रसाद (कंकाल, तितली), यशपाल (दिव्या, दादा कामरेड), वृंदावन लाल वर्मा (गढ़ कुंडार, विराटा की पद्मिनी, झाँसी की रानी, मृगनयनी), आचार्य चतुरसेन शास्त्री (वैशाली की नगर वधू) तथा रांगेय राघव (कब तक पुकारूँ) उल्लेखनीय हैं।

(ग) कहानी

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने कहानी के क्षेत्र में भी अपनी उतनी ही धाक बनाए रखी जितनी उपन्यास के क्षेत्र में। उनकी कहानियों में जीवन के हर पहलू का चित्रण मिलता है।

उनकी कहानियों की सूची लंबी है, उनमें से कुछेक हैं—'ठाकुर का कुआँ', 'बूढ़ी काकी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'मंत्र', 'पूँस की रात', 'नशा', 'कफन' आदि।

दूसरे अत्यंत प्रतिभाशाली कहानीकार जयशंकर प्रसाद हैं। इनकी 'आकाशदीप', 'पुरस्कार', 'छोटा जादूगर', 'इंद्रजाल' आदि कहानियाँ अत्यधिक रोचक हैं।

प्रेमचंद की परंपरा के कहानीकार हैं पंडित सुदर्शन (हार की जीत) और विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' (ताई)।

चतुरसेन शास्त्री की 'दुखवा कासे कहूँ मोरी सजनी' कहानी अत्यधिक लोकप्रिय रही।

अन्य प्रमुख कहानीकारों में रायकृष्ण दास, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', यशपाल, राहुल सांकृत्यायन,

जैनेन्द्र, भगवती चरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, चंद्रगुप्त विद्यालंकार आदि ख्यातिप्राप्त रचनाकार हैं।

(घ) निबंध

इस युग के निबंधकारों में रामचंद्र शुक्ल, गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बखशी, बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय, शांतिप्रिय द्विवेदी आदि रचनाकार प्रमुख हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध- 'चिंतामणि' भाग-1, भाग-2 और भाग-3 में संग्रहीत हैं। इनके निबंध मनोवैज्ञानिक और तर्कपूर्ण हैं। इनका सूक्ष्म चिंतन, इनके निबंधों में दिखाई देता है। इनकी भाषा में तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है।

बाबू गुलाबराय (1888-1963 ई.) के निबंधों का संग्रह 'मेरी असफलताएँ', 'फिर निराशा क्यों' में संग्रहीत हैं। इनकी भाषा सरल, स्पष्ट और भावपूर्ण है।

पदुमलाल पुन्नालाल बखशी जी के निबंध 'पंच पात्र' में संकलित हैं।

(ङ) समालोचना

साहित्यिक समालोचना का कार्य द्विवेदी युग में ही प्रारंभ हो चुका था परंतु समालोचना को ठोस धरातल पर स्थापित करने में श्यामसुंदर दास और आचार्य रामचंद्र शुक्ल का बड़ा हाथ था। इस युग तक गद्य की सभी विधाएँ पूर्णतः विकसित हो चुकी थीं। इस काल में समानांतर रूप से संस्कृत काव्यशास्त्र पर आधारित काव्य के सिद्धांत, लक्षण, रस, अलंकार आदि से संबंधित तथा समालोचनात्मक रचनाएँ भी लिखी गईं।

इस काल के कुछ रचनाकारों और उनकी कृतियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

श्यामसुंदर दास	—	साहित्यालोचन, रूपक रहस्य
बाबू गुलाब राय	—	नवरस
विश्वनाथ प्रसाद	—	काव्यांग कौमुदी
अयोध्यासिंह उपाध्याय	—	रस कलश
पदुमलाल पुन्नालाल बखशी	—	विश्व साहित्य

रामचंद्र शुक्ल ने 'तुलसी ग्रंथावली', 'गोस्वामी तुलसीदास' और 'जायसी ग्रंथावली' का संपादन किया। इन संपादित ग्रंथों में कृतियों की सूक्ष्म समालोचना भी समाविष्ट है।

(च) जीवनी

इस युग में राष्ट्रीय आंदोलन पूरे जोर-शोर से चल रहा था। लोगों में अपार उत्साह था। तत्कालीन राजनेताओं के प्रति उनकी पूरी आस्था थी। ऐसी स्थिति से प्रेरित हो साहित्यकारों ने राजनीतिज्ञ नेताओं की जीवनियाँ लिखीं। जिनकी जीवनियाँ लिखी गईं उनमें कुछ हैं—लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आजाद।

जीवनी लेखकों में प्रमुख नाम हैं—डॉ. राजेंद्र प्रसाद, गणेशशंकर विद्यार्थी, इंद्र विद्यावाचस्पति, मन्मथनाथ गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी आदि।

(छ) यात्रा वृत्तांत

इस युग में यात्रा वृत्तांत भी प्रचुर संख्या में लिखे गए। कुछ नाम नीचे दिए जा रहे हैं :-

लेखक	कृति
सत्यदेव परिव्राजक	मेरी जर्मन यात्रा (1926)
राहुल सांकृत्यायन	तिब्बत में सवा वर्ष (1933), मेरी यूरोप यात्रा (1935)
सेठ गोविंद दास	हमारा प्रधान उपनिवेश (1938)

(ज) रेखाचित्र

इस काल में रेखाचित्र भी पर्याप्त मात्रा में लिखे गए। कुछ उल्लेखनीय कृतियों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं :-

लेखक	कृति
श्रीराम शर्मा	शिकार, बोलती प्रतिमा
मन्मथनाथ गुप्त	क्रांति युग के संस्मरण
महादेवी वर्मा	रामा, घीसा, गिल्लू

(झ) आत्मकथा

आत्मकथाएँ स्वयं के जीवन से संबंधित होती हैं अतएव इनमें वर्णन तथ्यपरक होते हैं। छायावाद युग की प्रमुख आत्मकथाओं में से कुछ के नाम नीचे दिए जा रहे हैं :-

भाई परमानंद	आप बीती
महात्मा गाँधी	सत्य के प्रयोग
डॉ. राजेंद्र प्रसाद	आत्मकथा

1.5 छायावादोत्तर गद्य साहित्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिंदी साहित्य का सर्वांगीण विकास हुआ। इस युग में गद्य साहित्य की सभी विधाओं में काफी सशक्त और उच्च स्तर की रचनाएँ प्रकाश में आईं।

(क) नाटक

इस काल में नाट्य रचना और रंगमंच के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। प्रकाश और ध्वनि व्यवस्था ने इस मंच को जीवंत बनाया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना ने नौटंकी को रंगमंचीय बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। रेडियो रूपक और टी.वी. धारावाहिकों ने दृश्य और श्रव्य जगत में नए-नए प्रयोग शुरू किए। जैसे—

उपेंद्रनाथ अशक	छठा बेटा
विष्णु प्रभाकर	डॉक्टर
जगदीशचंद्र माथुर	कोणार्क, शारदीया

धर्मवीर भारती	—	अंधायुग (गीति नाट्य)
लक्ष्मीनारायण लाल	—	अंधा कुआँ, सूखा सरोवर, मादा कैक्टस
मोहन राकेश	—	लहरों के राजहंस, आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे
सुरेंद्र वर्मा	—	सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक
शंकर शेष	—	घरौंदा

(ख) एकांकी नाटक

एकांकी नाटक में एक ही अंक होता है और यह सीमित काल खंड को प्रस्तुत करता है। एकांकी नाटक प्रायः रंगमंचीय होते हैं। जैसे—

रामकुमार वर्मा	—	रेशमी टाई, दीपदान
उदयशंकर भट्ट	—	पर्दे के पीछे,
उपेंद्रनाथ अशक	—	पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ
जगदीश चंद्र माथुर	—	भोर का तारा
विष्णु प्रभाकर	—	रक्त चंदन, प्रकाश और परछाई
भुवनेश्वर	—	कारवाँ
लक्ष्मीनारायण लाल	—	ताजमहल के आँसू, दूसरा दरवाजा, यक्ष प्रश्न आदि।

(ग) उपन्यास

उपन्यास-लेखन की परंपरा मुंशी प्रेमचंद के पश्चात् भी अबाध गति से चलती रही। आगे चलकर लेखकों की सोच में बदलाव आया और शिल्प, भाषा, कथ्य और प्रस्तुतीकरण का तरीका भी बदला।

फ्रायड के मनोवैज्ञानिक दर्शन से प्रभावित उपन्यास लेखकों में—जैनेंद्र कुमार प्रमुख हैं। उनके द्वारा लिखे उपन्यासों में 'कल्याणी', 'सुखदा', 'जयवर्धन', 'त्यागपत्र', 'सुनीता' और 'परख' आदि प्रमुख हैं।

अज्ञेय कृत 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी' में कुंठा एवं अहम् का सुंदर विश्लेषण है।

इलाचंद्र जोशी द्वारा लिखे गए 'पर्दे की रानी', 'प्रेम और छाया', 'भूत का भविष्य' आदि उपन्यासों पर फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत का प्रभाव है।

उपन्यासकार यशपाल ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। उनके कुछ उपन्यास हैं—'दादा कामरेड', 'झूठा-सच' (दो भागों में), 'दिव्या' आदि।

भगवतीचरण वर्मा कृत 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते', 'भूले-बिसरे चित्र', 'चित्रलेखा' उपन्यास आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस काल में आंचलिक उपन्यास लेखन की नई परंपरा शुरू हुई। फणीश्वरनाथ रेणु ने 'मैला आंचल' लिखकर इस धारा का प्रारंभ किया। आगे चलकर आधुनिक काल में कुंठा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार,

सांप्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक विसंगतियों (दांपत्य जीवन) आदि विषयों को आधार बनाकर कुछ महत्वपूर्ण लेखकों ने उपन्यास लिखे जिनमें प्रमुख हैं कमलेश्वर, राजेंद्र यादव (सारा आकाश), भीष्म साहनी (तमस), अमृतलाल नागर (मानस का हंस), हजारी प्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा), नागार्जुन (बलचनमा) आदि।

(घ) कहानी

जिस तरह काव्य में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद की विचारधाराएँ प्रवाहमान रहीं उसी तरह कहानियों को प्रगतिवादी, प्रयोगवादी विचारधाराओं ने प्रभावित किया। इस धारा के कहानीकारों में प्रमुख हैं—

मोहन राकेश	—	मलबे का मालिक
राजेंद्र यादव	—	जहाँ लक्ष्मी कैद है
कमलेश्वर	—	मांस का दरिया
निर्मल वर्मा	—	परिंदे

(ङ) निबंध

भावनात्मक, विचारोत्तेजक निबंधों की परंपरा आचार्य रामचंद्र शुक्ल से प्रारंभ हुई थी। इस युग में उसका स्थान आलोचनात्मक और समीक्षात्मक निबंधों ने ले लिया। इस तरह के निबंधों का दिशा-निर्देश किया आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने। 'आधुनिक साहित्य', 'नया साहित्य नए प्रश्न' इनके उल्लेखनीय निबंध संग्रह हैं।

निबंध के क्षेत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का वर्चस्व रहा है। 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'विचार प्रवाह' इनके समीक्षात्मक निबंधों के संग्रह हैं।

कुछ अन्य निबंधकारों में वासुदेव शरण अग्रवाल और रामवृक्ष बेनीपुरी, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय, नामवर सिंह, डॉ. नगेंद्र, डॉ. रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई, राहुल सांकृत्यायन आदि प्रमुख हैं।

(च) समालोचना

किसी कृति के गुण-दोषों को तटस्थ रहकर उजागर करना ही उसकी समालोचना है। समालोचना साहित्य को नई दिशा देने वालों में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी और हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रमुख स्थान रखते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'सूर और कबीर' की समीक्षा आदि प्रमुख हैं।

नंददुलारे वाजपेयी की समीक्षात्मक कृतियाँ 'आधुनिक साहित्य', 'नया साहित्य नए प्रश्न' और 'कवि निराला' उल्लेखनीय हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा की 'प्रगति और परंपरा', 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ', 'आस्था और सौंदर्य' आदि पुस्तकें समीक्षात्मक कृतियों में प्रमुख स्थान रखती हैं।

(छ) जीवनी तथा आत्मकथा

महापुरुषों, संतों, महात्माओं, वैज्ञानिकों, राजनेताओं आदि के जीवन पर लिखा साहित्य इस काल में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। जैसे—

लेखक	कृति
जैनैन्द्र कुमार	— बापू
छविनाथ पांडेय	— नेताजी सुभाष
रामवृक्ष बेनीपुरी	— कार्ल मार्क्स
राहुल सांकृत्यायन	— माओ-चे तुंग

इस युग की आत्मकथाओं में से कुछ के नाम नीचे दिए जा रहे हैं :-

लेखक	कृति
डॉ. राजेंद्र प्रसाद	— आत्मकथा
राहुल सांकृत्यायन	— मेरी जीवन यात्रा
यशपाल	— सिंहावलोकन

(ज) यात्रा वृत्तांत

कुछ यात्रा वृत्तांतों का विवरण नीचे दिया गया है :-

लेखक	रचना
अज्ञेय	— अरे ! यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली
संतराम	— स्वदेश विदेश यात्रा
राहुल सांकृत्यायन	— किन्नर देश में, घुमक्कड़ शास्त्र
जवाहरलाल नेहरू	— आँखों देखा रूप
गोपालप्रसाद व्यास	— अरबों के देश में
हिमांशु जोशी	— यात्राएँ
शंकरदयाल सिंह	— धार के इस पार : धार के उस पार

(झ) संस्मरण और रेखाचित्र

संस्मरण और रेखाचित्र हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। महादेवी वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा, रामनारायण उपाध्याय आदि ने संस्मरण और रेखाचित्र रचना के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान किया।

लेखक	रचना
महादेवी वर्मा	— अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ
रामवृक्ष बेनीपुरी	— माटी की मूरतें, गेहूँ और गुलाब

बनारसीदास चतुर्वेदी	—	रेखाचित्र, संस्मरण
राहुल सांकृत्यायन	—	जिनका मैं कृतज्ञ हूँ
गोपालप्रसाद व्यास	—	अरबों के देश में
प्रकाशचंद गुप्त	—	रेखाचित्र
उपेन्द्रनाथ अशक	—	रेखाएँ और चित्र

(अ) रिपोर्टाज

रिपोर्टाज लिखने वाले कुछ प्रमुख रचनाकार इस प्रकार हैं—

लेखक	रचना
शिवदानसिंह चौहान	— लक्ष्मीपुरा
रांगेय राघव	— तूफानों के बीच
धर्मवीर भारती	— ब्रह्मपुत्र के मोर्चे से

इस प्रकार हिंदी गद्य साहित्य आदिकाल से अब तक निरंतर समृद्ध होता जा रहा है। नई विधाओं के प्रकाश में आने से साहित्य के स्वरूप में विविधता भी दिखाई पड़ रही है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद हो रहा है, जिससे साहित्य के क्षेत्र में नए आयाम विकसित हो रहे हैं।

भाग-ख : गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ

2.0 गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ

कलाकारों, लेखकों, रचनाकारों और साहित्यकारों के पास अपने भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए कई माध्यम होते हैं जिन्हें साहित्य में 'विधा' नाम से जाना जाता है। हिंदी में गद्य साहित्य की निम्नलिखित प्रमुख विधाएँ हैं :-

- (1) उपन्यास (Novel / Fiction)
- (2) कहानी (Story)
- (3) नाटक (Drama)
- (4) एकांकी नाटक (One Act Play)
- (5) निबंध (Essay)
- (6) जीवनी (Life Sketch)
- (7) आत्मकथा (Autobiography)
- (8) संस्मरण (Memoir)

- (9) रेखाचित्र (Sketch)
- (10) रिपोर्टाज (Reportage)
- (11) साक्षात्कार (Interview)
- (12) यात्रा वृत्तांत (Travelogue)

उपर्युक्त विधाओं पर संक्षिप्त जानकारी इस पाठ में दी गई है।

2.1 उपन्यास

उपन्यास दो शब्दों के मेल से बना है 'उप' अर्थात् समीप और 'न्यास' अर्थात् थाती। मनुष्य के निकट रखी हुई वस्तु या रचना जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी है और व्यक्ति उसमें अपने को पा सके। हिंदी साहित्य कोश (भाग-1) जिसके प्रधान संपादक धीरेंद्र वर्मा थे, के अनुसार, "उपन्यास आधुनिक युग की उपज है... इसमें जो लचीलापन है, बंधनहीनता है यह कभी भी कोई भी रूप धारण कर सकता है।" उपन्यास की परिभाषा कुछ विद्वानों के अनुसार इस प्रकार है—

- मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा को उपन्यास कहते हैं।
- डॉ. श्यामसुंदर दास
- मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। - प्रेमचंद
- उपन्यास जीवन की यथार्थताओं से रस खींचकर चित्त-विनोदन के साथ ही साथ मनुष्य की समस्याओं के सम्मुखीन होने का आह्वान लेकर साहित्य क्षेत्र में आया।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी

उपन्यास में जो कहानी कही जाती है, उसके कई सहायक तत्व होते हैं। उन्हीं तत्वों के शास्त्रीय नाम इस प्रकार हैं। जो छह माने गए हैं—

- कथावस्तु या कथानक
- पात्र एवं चरित्र-चित्रण
- संवाद या कथोपकथन
- देश काल और वातावरण
- भाषा और शैली
- उद्देश्य

(क) कथावस्तु या कथानक

कथावस्तु उस सामग्री का नाम है जिसे लेखक जीवन के विशाल क्षेत्र से चुनता है। उपन्यास की मूल कथा ही उपन्यास की कथावस्तु कही जाती है। मूलकथा में नवीनता और मौलिकता होनी चाहिए। उससे संबंधित घटनाक्रम में क्रमिक विकास का निर्वाह बड़ी खूबी से किया जाना चाहिए ताकि उसका अंत विश्वसनीय प्रतीत हो।

मौलिकता कथानक के चुनाव में, उसके प्रस्तुतीकरण में, उसके निर्वाह में, उसके समापन में

सभी जगह दिखाई दे। चाहे विषय का चुनाव तत्कालीन सामाजिक जीवन से, इतिहास से, पुराण से या अन्य किसी स्रोत से हो। उपन्यास लेखक हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि उपन्यास अपना उद्देश्य न खो दे। उपन्यास में रोचकता, मनोरंजन, कौतुहल उसे आगे बढ़ाने में और पाठकों को बाँधे रखने में सहायक होते हैं।

(ख) पात्र एवं चरित्र-चित्रण

उपन्यासों के पात्रों के क्रिया कलाप से ही कथावस्तु का निर्माण होता है। अतः पात्र जितने सजीव और यथार्थ होंगे, कथानक में उतना ही आकर्षण लाया जा सकेगा।

पात्रों का चरित्र-चित्रण दो प्रकार से किया जा सकता है। उपन्यास लेखक स्वयं यदा-कदा पात्रों के चरित्र की व्याख्या करता रहता है। उसके विचार, उसके मनोभाव, उसके हाव-भाव, चाल-चलन, व्यवहार आदि पर स्वयं टिप्पणी करता चलता है। दूसरा तरीका यह है कि घटनाओं, कथोपकथन, परिस्थितियों के बीच पात्र क्या कहते हैं, कैसा व्यवहार करते हैं उससे भी उनके चरित्र पर प्रकाश पड़ता है।

(ग) संवाद या कथोपकथन

पात्रों की बातचीत के द्वारा ही हम उनसे भली-भाँति परिचित होते हैं। संवाद के द्वारा घटनाओं का विकास और पात्रों का चरित्र-चित्रण होता है। कथोपकथन के द्वारा पात्रों का चरित्र उभरता है। इसीलिए संवाद पात्रानुकूल होते हैं।

(घ) देशकाल और वातावरण

उपन्यास की वस्तु, पात्र, कथ्य, देशकाल और वातावरण के भीतर से उत्पन्न होते हैं। देशकाल और वातावरण का चित्रण उन्हें मूर्त या वास्तविक बनाने के लिए किया जाता है।

(ङ) भाषा और शैली

उपन्यास की भाषा सरल और जनसामान्य के लिए बोधगम्य हो। वह भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम हो। साथ ही देशकाल और वातावरण के अनुकूल हो। वह जनता के हृदय के सन्निकट हो। उसे लगे कि यह तो वही भाषा है जिसका हम सब प्रयोग कर रहे हैं।

(च) उद्देश्य

उपन्यास में जो कथा कही जाती है उसमें कोई न कोई संदेश होता है। वह संदेश ही उसका उद्देश्य है। उपन्यासकार उपन्यास लिखते समय अपने जीवन के अनुभवों को भी दर्शाता चलता है। इससे पाठक कथावस्तु के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करता चलता है।

2.2 कहानी

कहानी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। कौतुहल कहानी की आत्मा है जो कथावस्तु को पठनीय बनाता है। इसीलिए एडगर एलेन पो ने लिखा है—“कहानी एक ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा है कि एक ही बैठक में पढ़ा जा सके।”

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार “कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसमें ऐसा रमणीय उद्यान नहीं कि जिसमें भांति-भांति के फूल, बेल-बूटे सजे हुए हों। बल्कि वह एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।”

कहानी के निम्नलिखित छह तत्व माने गए हैं :-

- कथावस्तु
- चरित्र-चित्रण
- कथोपकथन
- देश, काल और वातावरण
- शैली
- उद्देश्य

(क) कथावस्तु

कहानी आकार में उपन्यास से छोटी होती है। उपन्यास में समग्र जीवन का चित्रण होता है जबकि कहानी किसी एक काल खंड की घटना को लेकर चलती है।

कहानी के मुख्य वर्ण्य विषय को कथावस्तु कहते हैं। इसका प्रारंभ किसी पात्र के बारे में लेखक के मंतव्य से या दो व्यक्तियों के कथोपकथन से या मुख्य विषय से संबंधित वातावरण के वर्णन से होता है। कथावस्तु के कई स्रोत हैं – पुराण, इतिहास, समाज, राजनीति, जीवन के पहलू इत्यादि।

(ख) चरित्र-चित्रण

कहानी के क्रमिक विकास के साथ पात्रों के चरित्र का विकास जुड़ा रहता है। मानव के मनोविज्ञान चरित्र, व्यवहार, विचार श्रृंखला आदि के बारे में लेखक की सूक्ष्म दृष्टि पात्रों के चरित्र में उभरती है। कहानी पात्र के किसी मार्मिक पक्ष को ही उद्घाटित करती है।

(ग) कथोपकथन

संवाद के माध्यम से कहानीकार अपनी कहानी को आगे बढ़ाता है तथा पात्रों का चरित्र चित्रण करता है। कथोपकथन से कहानी में नाटकीयता आती है। पात्रों के तार्किक व्यवहार की कसौटी है कथोपकथन। इससे उभरता नजर आता है—पात्रों का मनोविचार, मनोविकार इत्यादि।

(घ) देश, काल और वातावरण

कहानी को सजीव बनाने हेतु उससे संबंधित परिवेश भी सजीव होना चाहिए। कहानी का संबंध जिस काल से, जिस देश से, जिस जाति या व्यवसाय से हो उसी के अनुरूप साज-सज्जा, पहनावा, भाषा-व्यवहार होना चाहिए। तभी उसका प्रभाव पाठकों पर पड़ता है और तभी पाठक को कहानी उस काल में ले जाती है।

(ड) उद्देश्य

हमारा जीवन सोद्देश्य है अतएव कहानी का भी कोई प्रयोजन या उद्देश्य होता है। उसी को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना कहानी का उद्देश्य होता है। कहानी का उद्देश्य है मनोरंजन, साथ ही जीवन-दर्शन की व्याख्या। कहानी में किसी एक विचार या अनुभूति या मान्यता को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर आदर्श स्थापित करने का प्रयास आयोजित होता है।

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी सबसे लोकप्रिय विधा है। कहानी को कथा, गाथा, आख्यायिका आदि कई नामों से जाना जाता रहा है, पर आज कहानी ही सर्वमान्य नाम हो गया है। प्राचीन काल में कहानी का उद्देश्य था शुद्ध मनोरंजन या नैतिक आदर्श की स्थापना करना और धर्म, कर्तव्य संबंधी उपदेश देना परंतु आज मानव जीवन की विविधता को, उसकी समस्याओं को तथा संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का उद्देश्य भी कहानी में जुड़ गया है।

2.3 नाटक

नाटक एक दृश्य काव्य है। आचार्य धनंजय के अनुसार "अवस्था का अनुकरण नाटक है।" अर्थात् रूप का अनुकरण। इसीलिए नाटक को रूपक भी कहा जाता है। अनुकरण की क्रिया को ही नाटक कहते हैं। नाटक अपने जन्म से ही शब्द की कला के साथ-साथ अभिनय की कला भी है। नाट्य शास्त्र में भरत मुनि ने नाटक को पंचम वेद कहा है।

नाटक के तीन तत्व हैं—

1. वस्तु
2. नेता (पात्र)
3. रस

इसके साथ ही अन्य तत्व हो सकते हैं—

- कथोपकथन
- देश-काल
- संकलन त्रय - वस्तु, देश-काल और कार्य की एकता को संकलन त्रय कहते हैं।
- उद्देश्य और
- भाषा शैली

वस्तु या कथावस्तु को कथानक भी कहते हैं। नाटककार को अपने विषय का चयन बड़ी सूझबूझ से करना पड़ता है। उसके पास समय की सीमा भी होती है, उसकी मर्यादा भी होती है। कथावस्तु में एक मुख्य कथा होती है और मुख्य कथा में प्रभावोत्पादकता लाने के लिए कुछेक गौण कथाएँ भी साथ-साथ चलती रहती हैं। यह गौण कथा भी मुख्य कथा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबद्ध रहती है। यह मुख्य कथा को अधिक प्रभावोत्पादक बनाती है।

मनुष्य समाज की कृतियाँ, कर्म, कार्य-कलाप, पारस्परिक व्यवहार सभी सोद्देश्य होते हैं। नाटक में भी मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के अतिरिक्त अनेकानेक उद्देश्य हो सकते हैं।

नाटक की भाषा सरल और सामान्य बोलचाल की भाषा होनी चाहिए। पात्र की सामाजिक स्थिति के अनुकूल विभिन्न पात्र प्रायः अलग-अलग भाषा का प्रयोग करते हैं।

नाटक का महत्वपूर्ण पात्र है 'नायक'। सारी घटनाएँ नायक के इर्द-गिर्द घूमती हैं। नायक की प्रिया या पत्नी 'नायिका' कही जाती है। परंतु अब विचारधारा बदल गई है। जो भी स्त्री पात्र मुख्य कथावस्तु के विकास में मुख्य भूमिका निभाए वही अब 'नायिका' मानी जाती है।

नाटक में पात्रों के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया जाता है। साथ ही इस बात का ध्यान रखा जाता है कि नाटक जन साधारण के लिए प्रस्तुत किया जाता है इसलिए कथोपकथन में भाषा सरल, सुबोध, सर्वग्राह्य तथा शिष्ट हो।

नाटक की आत्मा है 'रस'। नाटक में मुख्यतः शृंगार, वीर या करुण रसों में से एक की प्रधानता होती है।

2.4 एकांकी नाटक

आज के व्यस्त जीवन में लोगों के पास इतना समय नहीं है कि वे नाटक को देर तक बैठकर देख सकें। उसका छोटा रूप एकांकी नाटक है जो प्रायः तीस चालीस मिनटों में समाप्त हो जाता है—इसी से लोगों का मनोरंजन हो जाता है; नाटककार के उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है। आज का एकांकी पाश्चात्य साहित्य की देन है। एकांकी के तत्व प्रायः वही होते हैं जो पूर्ण नाटक के माने जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

(1) कथावस्तु, (2) पात्र / चरित्र, (3) कथोपकथन / संवाद, (4) उद्देश्य, (5) देश-काल, वातावरण, (6) शैली, (7) रंगमंच

एकांकी की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ मानी जाती हैं :-

- एकांकी नाटक का कथानक संक्षिप्त होता है।
- पात्र अपेक्षाकृत कम होते हैं।
- सामान्यतः तीस-चालीस मिनट में एकांकी समाप्त हो जाता है।
- समाज का, जीवन का कोई महत्वपूर्ण विषय कथानक बनता है।

नाटक के अन्य आधुनिक रूप

गीतिनाट्य—संगीत, भाव और कविता की शैली को प्रधान बनाकर गीतिनाट्य की रचना होती है। इसमें लय की प्रधानता होती है।

रेडियो नाटक—रेडियो तकनीक के आधार पर रेडियो रूपक का प्रचलन हुआ। इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है और यह पूर्णतः श्रव्य होता है।

वास्तव में नाटक, गीतिनाट्य, संगीत रूपक दृश्य काव्य हैं और रेडियो रूपक श्रव्य काव्य है। इस प्रकार आज दृश्य और श्रव्य काव्य का आधुनिक रूप दृष्टिगोचर होता है। झलकियाँ और फीचर गद्य में ध्वनि रूपक का ही रूपांतरण है।

2.5 निबंध

निबंध कहानी-कविता की तरह एक रचनात्मक विधा है। निबंध का अर्थ है भली-भाँति बांधना। किसी विषय, किसी भाव, किसी विचार, किसी मत, किसी मंतव्य, किसी धारणा को सुगठित रूप में प्रस्तुत करना ही निबंध रचना कहलाता है। आज निबंध 'ऐस्से' (essay) का पर्याय है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।"

बाबू श्यामसुंदर दास कहते हैं, "निबंध उस लेख को कहते हैं, जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पांडित्यपूर्ण विचार किया गया हो।"

बाबू गुलाबराय के अनुसार "निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन अथवा प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव, सजीवता, आवश्यक संगीत और संबद्धता के साथ किया गया हो।"

निबंध के मुख्य तत्व हैं –

- प्रस्तावना
- विस्तार
- भाषा-शैली
- उपसंहार

(क) प्रस्तावना

विषय का परिचय प्रस्तावना के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तावना के रूप में निबंधकार मूल विषय की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। उस विषय के स्वरूप, महत्व, उपयोगिता आदि को दर्शाते हुए वह आगे बढ़ती है।

(ख) विवेचन

विवेचन के अंतर्गत निर्धारित विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। लेखक चुने हुए विषय पर अपनी धारणा, अपनी राय, अपना दृष्टिकोण इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठक भी उसकी धारणा से अभिभूत हो जाते हैं। लेखक का व्यक्तित्व, उसकी धारणा, निबंध में साकार हो उठते हैं। हडसन के अनुसार – "The true essay is essentially personal." अर्थात् सच्चा निबंध व्यक्तिगत भाव है।

(ग) भाषा शैली

निबंध में विचारों की क्रमबद्धता होनी चाहिए। भाषा सहज, सरल और बोधगम्य हो। साथ ही भाषा शैली विषयानुकूल तथा मुहावरेदार हो।

(घ) उपसंहार

निबंध का अंतिम भाग उपसंहार कहलाता है। इसमें लेखक निबंध का सार देते हुए अपनी टिप्पणी भी करता है।

निबंध के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं-

- विचारात्मक निबंध
- वर्णनात्मक निबंध
- विवरणात्मक निबंध
- भावात्मक निबंध

विचारात्मक निबंध में विचार तत्व की प्रधानता रहती है। ये विचार तर्कसंगत होते हैं।

वर्णनात्मक निबंध में किसी दर्शनीय स्थल, प्राकृतिक वस्तु या विलक्षण, आह्लादकारी दृश्य का वर्णन किया जाता है।

विवरणात्मक निबंध का संबंध प्रायः कालक्रम से होता है। इसीलिए इसमें वस्तु को गतिशील रूप में देखने का अवसर मिलता है।

भावात्मक निबंधों का संबंध हृदय से होता है। इस प्रकार के निबंध का लेखन करते समय लेखक कल्पना का प्रयोग करता है। भावात्मक निबंध को ही ललित निबंध भी कहते हैं।

2.6 जीवनी

किसी व्यक्ति विशेष के जीवन को विषय बनाकर जब कोई अन्य व्यक्ति (लेखक) लिखता है तो उसे जीवनी कहते हैं। "जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं चिंतन है।" - गुलाब राय

जीवनी के संबंध में महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित हैं :-

- जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का वर्णन नहीं, वरन् उसका यथा तथ्य चित्रण है।
- जीवनी नायक के अंतर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण करती है।
- जीवनी में नायक के जीवन में आई घटनाओं का, उसके निराकरण की दिशा में नायक के प्रयास का, उसकी विजय या पराजय का अथवा सफलता या असफलता का चित्रण होता है।
- आशा व निराशा के क्षणों में नायक की चित्तवृत्ति का, उसके संघर्ष का वस्तुपरक वर्णन होता है।
- जीवनी के नायक के व्यक्तित्व, उसका गुणात्मक व ऋणात्मक पक्ष बिना लाग लपेट के प्रस्तुत किया जाता है।
- नायक की कमजोरियों का वर्णन करते समय शालीनता बरती जाती है।

2.7 आत्मकथा

आत्मकथा तथा जीवनी दोनों जीवन वृत्तांत हैं। जीवनी किसी अन्य के द्वारा लिखी जाती है जबकि आत्मकथा का लेखक स्वयं अपना वृत्तांत लिखता है। आत्मकथा लेखक अपने बारे में संपूर्ण जानकारी रखता है जबकि जीवनी लेखक अपने नायक के सान्निध्य, संपर्क, सहयोग से उसके बारे में सारी जानकारी प्राप्त करता है।

2.8 संस्मरण

संस्मरण में स्मृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें काल या समय महत्वपूर्ण होता है। इसमें लेखक के निजत्व को प्रधानता प्राप्त होती है। विषयवस्तु से किसी न किसी रूप में लेखक अतीत काल में झाँकता रहता है और तदनुसार शब्दचित्र का निर्माण करता है।

2.9 रेखाचित्र

चित्रकला में जिस प्रकार रेखाओं के माध्यम से दृश्य या रूप को उभार दिया जाता है उसी प्रकार जब साहित्य में शब्दों के माध्यम से दृश्य या रूप को उभारा जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र में चित्र का विशेष महत्व है, वहीं संस्मरण में स्मृति का।

रेखाचित्र का स्वरूप-विश्लेषण करते हुए सेठ गोविंददास ने कहा था, “रेखाचित्र गद्य काव्य से मिलती-जुलती विधा है।” इसमें वर्णन की प्रधानता होती है पर वे संस्मरणों से जुड़े होते हैं। इसमें बाहरी स्वरूप के साथ स्वभाव और चरित्र का भी चित्रण होता है और ये वास्तविकता से संबंधित होते हैं। ये सजीव और निर्जीव दोनों तरह के व्यक्ति या वस्तु के लिए लिखे जाते हैं। लेखक का दृष्टिकोण मुख्य होता है।

2.10 रिपोर्टाज

रिपोर्टाज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। अंग्रेजी के शब्द ‘रिपोर्ट’ से इसका संबंध है जिस का सरकारी और अखबारी सूचना, लेखा-जोखा या विवरण से संबंध रहता है। जबकि रिपोर्टाज तथ्यात्मक आँकड़ों का आकलन मात्र होता है।

रिपोर्टाज अधुनातन साहित्यिक विधा है। इसमें वर्ण्य विषय का आँखों देखी या सुनी घटना का विवरण पूरी सहृदयता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। रिपोर्टाज में छोटी-छोटी घटनाओं का बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से वर्णन किया जाता है। इन घटनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति पाठकों के मन पर सामूहिक प्रभाव डालती है।

2.11 साक्षात्कार

साक्षात्कार, भेंट-वार्ता, इंटरव्यू, विशेष परिचर्चा आदि अनेक नाम वाला ‘साक्षात्कार’ हिंदी की एक नवीन विधा है। इंटरव्यू या साक्षात्कार जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है—लेखक किसी व्यक्ति विशेष से अपनी पूर्व निर्धारित धारणा के अनुसार तैयार की गई प्रश्नमाला के आधार पर उसकी विचारधारा, उसकी धारणाएँ, उसके व्यक्तित्व और कृतित्व संबंधी आवश्यक जानकारी को एकत्र कर उसे समाज के सामने प्रस्तुत करता है।

2.12 यात्रा वृत्तांत

आज के युग में यात्रा वृत्तांत को भी एक विधा के रूप में स्वीकृति प्राप्त है। यात्रा स्थान, दृश्य, प्रदेश आदि का व्यक्तित्व (स्वरूप) वर्णन के माध्यम से उभरता है। यात्री अपने साहित्य में संवेदनशील होकर भी तटस्थ भाव से अपना अनुभव बताता है। अपने को केंद्र में रखकर भी प्रमुख न होने देना एक सफल यात्रा वृत्तांत की विशेषता होती है।

पाठ-13 : कहानी और निबंध (तृतीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

भाग-क : कहानी

1.0	कहानी	29
1.1	आधार पाठ : आशीर्वाद	29
1.2	शब्दावली	35
1.3	पर्यायवाची	40
1.4	विलोम शब्द	41
1.5	मुहावरे और कहावतें	41
1.6	व्याकरणिक टिप्पणी : संयुक्त क्रियाएँ	43
1.7	सांस्कृतिक टिप्पणियाँ	45

भाग-ख : निबंध

2.0	निबंध	46
2.1	आधार पाठ : देशप्रेम	46
2.2	शब्दावली	48
2.3	समानार्थी शब्द	51
2.4	विलोम शब्द	51
2.5	युग्म में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द	52
2.6	शब्दों / वाक्यांशों का वाक्य में प्रयोग	52
2.7	सारांश	52

भाग-क : कहानी

1.0 कहानी

प्रस्तुत पाठ में आप श्री सुदर्शन की लिखी कहानी पढ़ेंगे।

1.1 आधार पाठ

आशीर्वाद

- सुदर्शन

- (1) लाजवंती के कई पुत्र पैदा हुए, मगर सब-के-सब बचपन ही में मर गए। आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था। उसका मुँह देखकर वह पहले बच्चों की मौत का दुख भूल जाती थी। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण देहाती बालकों का-सा ही था, मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। माँ की ममता ने उसकी आँखों को धोखे में डाल दिया था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए फिरती थी। मानो वह कोई दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी—कहीं उसे किसी की नजर न लग जाए। गाँव के लड़के प्रायः खेतों में खेलते-फिरते, मगर लाजवंती, हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी और अगर कभी वह निकल भी जाता तो लाजवंती घबराकर दूढ़ने लग जाती थी।

- (2) गाँव की स्त्रियाँ कहतीं—“हमारे भी तो बच्चे हैं। तू जरा-जरा सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?”

लाजवंती यह सुनती, तो उसकी आँखों में आँसू लहराने लगते। भरीए हुए स्वर में उत्तर देती—“क्या कहूँ? मेरा जी डर जाता है।”

प्रातःकाल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला—“माँ!” आवाज में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बरतन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली—“क्यों हेम! क्या है बेटा? घबराया हुआ क्यों है तू? इस तरह क्यों बोलता है तू?”

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुककर बोला—“सिर में दर्द होता है—बहुत दर्द होता है।”

- (3) बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन मरा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था। उस समय भी लाजवंती ने उसकी सेवा-सुश्रूषा में दिन-रात एक कर दिया था। मगर जो होना होता है, उसे कौन टाल सकता है। निर्दयी मृत्यु ने लाजवंती का पुत्र छीन लिया। लाजवंती उस समय इस दुख से अधमरी-सी हो गई थी। वही घटना इस समय उसकी आँखों के सामने फिर गई। क्या अब फिर?

- (4) लाजवंती के पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। जिस तरह विद्यार्थी एक बार फेल होकर दूसरी बार परीक्षा में बैठते समय घबराता है, उसी प्रकार हेमराज के सिरदर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई। गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें लुकमान समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। आसपास के गाँवों में भी उनका बड़ा नाम था। लाजवंती उड़ती हुई उनके पास पहुँची। वैद्य जी बैठे एक पुराना साप्ताहिक समाचारपत्र

पढ़ रहे थे। लाजवंती को देखकर उन्होंने पत्र हाथ से रख दिया और आँखों से ऐनक उतारकर बोले—“क्यों बेटी! क्या बात है?”

- (5) वैद्य जी इस गाँव के रहने वाले न थे। उनकी अवस्था भी पचास से ऊपर थी। अतएव गाँव की बहू-बेटियाँ उनसे परदा न करती थीं। लाजवंती ने चिंतित-सा होकर उत्तर दिया, “हेम बीमार है।”

वैद्य जी ने सहानुभूति के साथ पूछा—“कब से?”

“आज ही से। कहता है, सिर में दर्द है।”

“बुखार तो नहीं?”

“मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते तो अच्छा था।”

वैद्य जी का मनोरथ सिद्ध हुआ। उन्होंने जल्दी से कपड़े पहने और लाजवंती के साथ हो लिए। जाकर देखा तो हेमराज बुखार से बेसुध पड़ा था।

वैद्य जी ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और फिर कहा—“कोई चिंता नहीं। दवा देता हूँ। बुखार उतर जाएगा।”

- (6) लाजवंती के डूबते हुए हृदय को सहारा मिल गया। उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंट कर दी। वैद्य जी ने मुँह से ‘नहीं-नहीं’ कहा मगर हाथों ने मुँह का साथ न दिया। उन्होंने पैसे ले लिए।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्य जी ने कई दवाइयाँ बदलीं, परंतु किसी ने अपना असर न दिखाया। लाजवंती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रात भर उसके सिरहाने बैठी रहती थी। लोग आते और धीरज दे-देकर चले जाते थे। परंतु लाजवंती का मन उनकी बातों की ओर न दौड़ता था। वह डरी-डरी रहती और अपने मन को पूरी शक्ति से हेम की सेवा में लगाए रहती थी।

- (7) एक दिन उसने वैद्य जी से पूछा—“आखिर क्या बात है, जो यह बुखार उतरने का नाम नहीं लेता?”

वैद्य जी ने उत्तर दिया—“मियादी बुखार है।”

लाजवंती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा—“मियादी बुखार क्या?”

“अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।”

“पर कब तक उतरेगा?”

“इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।”

“आज ग्यारह दिन तो हो गए हैं।”

“बस, दस दिन और हैं। किसी तरह दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।”

- (8) लाजवंती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली—“कोई अंदेसा तो नहीं? सच-सच बता दीजिए।”
वैद्य जी थोड़ी देर चुप रहे। इस समय वह सोच रहे थे कि उसे सच-सच बताएँ या न बताएँ? आखिर बोले—“देखो! बुखार सख्त है, हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।”

लाजवंती सहम गई। रेत के स्थलों को मीठे जल की नदी समझकर जब हरिण पास पहुँचकर देखता है कि नदी अभी तक उतनी ही दूर है, तो जो दशा उसके मन की होती है, वही दशा इस समय लाजवंती की हुई। उसे आशा नहीं, निश्चय हो गया था कि हेम एक-आध दिन में ठीक हो जाएगा। फिर उसी तरह खेलता फिरेगा, फिर उसी तरह नाचता फिरेगा। माँ देखेगी, खुश होगी। लोग बधाइयाँ देंगे। मगर वैद्य जी की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। आशा के साथ निराशा भी सामने आकर खड़ी हो गई।

- (9) उसका पति रामलाल सचदेव मुलतान में नौकर था। उसने उसे तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। लाजवंती और रामलाल दोनों घबरा गए। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। सोचने लगे—क्या बुखार एकाएक उतरेगा?

वैद्य जी ने आकर नाड़ी देखी, तो घबराकर बोले—“आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना—बुखार एकाएक उतरेगा।”

लाजवंती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। वैद्य के शब्द किसी आने वाले भय की पूर्व सूचना थे। रामलाल दवाएँ सँभालकर बेटे के सिरहाने बैठ गए। परंतु लाजवंती के हृदय को कल न थी। उसने संध्या-समय थाल में घी के दीपक जलाए और मंदिर की ओर चली। इस समय उसे आशा अपनी पूरी जीवन-शक्ति के साथ सामने नाच करती हुई दिखाई दी। लाजवंती मंदिर में पहुँची और देवी के सामने गिरकर देर तक रोती रही। जब थककर उसने सिर उठाया, तो उसका मुख-मंडल शांत था, जैसे तूफान के बाद समुद्र शांत हो जाता है। उसको ऐसा मालूम हुआ, जैसे कोई दिव्य-शक्ति उसके कान में कह रही है—तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर लिया है। परंतु उसने इतने ही पर संतोष न किया, मातृ-स्नेह ने चरम भय को चरम-सीमा पर पहुँचा दिया था। लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की ओर प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मानता मानी—“देवी माता! मेरा हेम बच जाए, तो मैं तीर्थ-यात्रा करूँगी!”

- (10) यह मानता मानने के बाद लाजवंती को ऐसा जान पड़ा, जैसे उसके दिल पर से किसी ने कोई बोझ हटा लिया है, जैसे उसका संकट टल गया है, जैसे उसने देवताओं को खुश कर लिया है। उसे निश्चय हो गया कि अब हेम को कोई भय नहीं है। लौटी, तो उसके पाँव भूमि पर न पड़ते थे। उसके हृदय-समुद्र में आनंद की तरंगें उठ रही थीं।

वह उड़ती हुई घर पहुँची, तो उसके पति ने कहा—“लो बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया! बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।”

लाजवंती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली—“अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थ-यात्रा की मानता मान आई हूँ।”

- (11) रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया, तो हृदय बैठ गया। परंतु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक न ठहरने दिया। उसने बादलों से निकलते हुए चंद्रमा के समान मुस्कराकर उत्तर दिया—“अच्छा किया! रुपये का क्या है, हाथ का मैल है, आता है चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।”

लाजवंती ने स्वामी को सुला दिया और आप रात-भर जागती रही। उसके हृदय में ब्रह्मानंद की मस्ती छा रही थी। प्रभात हुआ तो हेम का बुखार बिलकुल उतर गया था। लाजवंती के मुख-मंडल से प्रसन्नता टपक रही थी, जैसे संध्या के समय गौओं के स्तनों से दूध की बूँदें टपकने लगती हैं।

वैद्य जी ने आकर देखा तो उनका मुँह भी चमक उठा। अभिमान से सिर उठाकर बोला—“अब कोई चिंता नहीं। तुम्हारा बच्चा बच गया।”

- (12) लाजवंती ने हेम की कमजोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा—“क्या से क्या हो गया है?”

वैद्य जी ने लाजवंती की ओर देखा और रामलाल से बोले—“यह सब इसी के परिश्रम का फल है।”

लाजवंती ने उत्तर दिया—“देवी माता की कृपा है, अथवा आपकी दवा के प्रभाव का फल है। मैंने क्या किया है, जो आप कहते हैं कि यह मेरे परिश्रम का फल है?”

“मैं तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को जिलाया था, तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है। तुम यदि दिन-रात एक न कर देतीं तो हेम का बचना असंभव था। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है। भगवान प्रसन्न हो गया। बच्चा बचा नहीं, दूसरी बार पैदा हुआ है।”

रामलाल के होंठों पर मुस्कराहट थी, आँखों में चमक। इसके सातवें दिन वह अपनी नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो।

- (13) तीन महीने बीत गए। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुई। अब उसके मुख पर फिर वही आभा थी, आँखों में फिर वही चमक, दिल में फिर वही खुशी। हेम आँगन में इस तरह चहकता फिरता था, जैसे फूलों पर बुलबुल चहकती है। लाजवंती उसे देखती थी तो फूली न समाती थी।

- (14) तीर्थ यात्रा पर जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थी। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं, शोर मचाती थीं। दूसरी तरफ कहीं पूरियाँ बन रही थीं, कहीं हलुआ। उनकी सुगंध से दिमाग तर हुए जाते थे। लाजवंती इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ी फिरती थी, मानो उसके यहाँ कोई ब्याह हो। एक ओर बेफिक्रे साधु सुलफे के दम लगाकर गाँव की हवा को शुद्ध कर रहे थे। उनकी ओर गाँव के लोग इस तरह देखते थे, जैसे किसान तहसीलदार को देखते हैं। आँखों में श्रद्धा-भाव के स्थान में भय और आतंक की मात्रा अधिक थी। लाजवंती से कोई मैदा माँगता था, कोई घी। कोई कहता था—हलवाई चीनी के लिए चिल्ला रहा है। कोई पूछता था—अमचूर का बरतन कहाँ है? कोई और समय होता, तो लाजवंती घबरा जाती, पर इस समय उसके मुँह पर जरा घबराहट न थी। सोचती थी—कैसा सौभाग्य है जो यह दिन मिला! आज घबराहट कैसी? आज वह पूर्ण खुश थी।

- (15) परंतु सारा गाँव प्रसन्न हो, यह बात न थी। वहीं स्त्रियों में बैठी हुई एक बूढ़ी स्त्री असीम दुख में डूबी हुई थी। वह लाजवंती की पड़ोसिन हरो थी। अत्यंत दुख के कारण उसके कंठ से आवाज न निकलती थी। शहर होता तो वह इस उत्सव में कभी सम्मिलित ही न होती। मगर गाँव की बात थी, न आती, तो उँगलियाँ उठने लगतीं। आनंदमय हास-परिहास के बीच उसका मस्तिष्क

दुख और शोक के कारण ऐसे खौल रहा था, जैसे ठंडे समुद्र में गरम जल का स्रोत उबल रहा हो। वह स्रोत बाकी समुद्र से कितना परे कितना अलग होता है।

- (16) इसी तरह रात के चार बज गए। लोग खा-पीकर आराम करने लगे। खाने में जो बच रहा, वह गरीबों में बाँट दिया गया। लाजवंती ने लोगों को विदा किया और चलने की तैयारी में लगी। उसने एक टीन के बक्से में जरूरी कपड़े रखे, एक बिस्तर तैयार किया, गले में लाल रंग की सूती माला पहनी, माथे पर चंदन का लेप किया। गऊ एक पड़ोसिन को सौंपी और उससे बार-बार कहा—“इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना। मैं जा रही हूँ, मगर मेरा मन अपनी गऊ में रहेगा।”

- (17) सहसा किसी की सिसकी भरने की आवाज सुनाई दी। लाजवंती के कान खड़े हो गए। उसने चारों तरफ देखा, मगर कोई दिखाई न दिया। इस समय सारा गाँव सुख-स्वप्न में बेसुध पड़ा था। वह आँगन में निकल आई और ध्यान से सुनने लगी। सिसकी की आवाज फिर सुनाई दी। लाजवंती छत पर चढ़ गई और पड़ोसिन के आँगन में झुककर जोर से बोली—“माँ, हरो!”

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर एक चारपाई पर से उत्तर मिला—“कौन है? लाजवंती?” आवाज में आँसू मिले हुए थे।

लाजवंती जल्दी से नीचे उतर गई और हरो के पास पहुँचकर बोली—“माँ, क्या बात है? तू रो क्यों रही है?”

हरो सचमुच रो रही थी। परंतु अपना रोना लाजवंती के सामने कहते हुए उसके नारी-दर्प को बट्टा लगता था, इसलिए अपनी वास्तविक अवस्था को छिपाती हुई बोली—“कुछ बात नहीं।”

“तू रो क्यों रही है?”

हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया। उसका दुखी हृदय सहानुभूति की एक चोट को भी सहन न कर सका। वह और भी सिसकियाँ भर-भरकर रोने लगी।

लाजवंती ने फिर पूछा—“माँ! बात क्या है, जो तू इस समय रो रही है? मैं तेरी पड़ोसिन हूँ मुझसे न छिपा।”

- (18) हरो ने कुछ उत्तर न दिया। वह सोच रही थी कि इसे बताऊँ या न बताऊँ। प्रभात हो चला था, कुछ-कुछ प्रकाश निकल आया था। लाजवंती चलने के लिए आतुर हो रही थी। मगर हरो को क्या दुख है, यह जाने बिना चले जाना उसके लिए कठिन था। उसने तीसरी बार फिर पूछा—“माँ! बता दो ना, तुम्हें क्या दुख है?”

हरो ने दुखी होकर पूछा—“क्या तुम उसे दूर कर दोगी?”

“हो सका तो जरूर दूर कर दूँगी।”

“यह असंभव है।”

“संसार में असंभव कोई बात नहीं। भगवान सब-कुछ कर सकता है।”

हरो थोड़ी देर तक चुप रही, फिर धीरे से बोली—“कुंवारी बेटी का दुख खा रहा है। रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नाव कैसे पार लगेगी?”

“यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च देना तो तुम्हारे जेठ ने मंजूर कर लिया है।”

“ऐसे भाग होते तो रोना काहे का था?”

लाजवंती ने अकुलाकर पूछा—“तो क्या यह झूठ है?”

- (19) “बिल्कुल झूठ भी नहीं। उन्होंने दो सौ रुपये के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं, मगर मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। अब चिंता यह है कि बारात आएगी, तो उसके सामने क्या धरूँगी? बाराती मिठाई माँगेंगे, पूरियाँ माँगेंगे, हलवा माँगेंगे। यहाँ सूखे सत्तू खिलाने की भी हिम्मत नहीं। यही सोच-सोचकर सूखती जाती हूँ।”

लाजवंती ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—“क्या गाँव के लोग एक गरीब ब्राह्मणी की कन्या का ब्याह नहीं कर सकते? और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।”

हरो की आँखें भर आईं। वह इस समय गरीब थी, परंतु कभी उसने अच्छे दिन भी देखे थे। लाजवंती के प्रस्ताव से उसे दुख हुआ, जैसे नया-नया भिखारी गालियाँ सुनकर पृथ्वी में गड़ जाता है। उसने धीरे से कहा—“बेटी! मुझसे भी तो यह अपमान न देखा जाएगा।”

“परंतु इस तरह तो गाँव-भर की नाक कट जाएगी।”

हरो ने बात काटकर कहा—“मैं भी तो इसे सहन नहीं कर सकूँगी। किसी के सामने हाथ फैलाना मरने से भी बुरा है।”

“तो क्या करोगी? कन्या कुंवारी बैठा रखोगी?”

“भगवान की यही इच्छा है तो मेरा क्या बस है? उसे लेकर कहीं निकल जाऊँगी। न कोई देखेगा, न कोई बात करेगा।”

- (20) लाजवंती ब्राह्मणी की अवस्था देखकर काँप गई। उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे कोई कह रहा है कि अगर यह हो गया तो ईश्वर का कोप गाँव-भर को जलाकर राख कर देगा। लाजवंती अपने-आपको भूल गई। उसका हृदय दुख से पानी-पानी हो गया। उसने जोश से कहा—“चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तुम्हारी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी तेरी ही नहीं है, मेरी भी है।”

हरो ने वह सुना, जिसकी उसको इच्छा थी, परंतु आशा न थी। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी, हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपये लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। वह रुपये जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी, पर उन्हें देते समय उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ।

लाजवंती के तीर्थ-यात्रा का विचार छोड़ देने पर सारे गाँव में आग-सी लग गई। लोग कहते थे, लाजवंती ने बहुत बुरा किया। देवी माता का क्रोध उसे नष्ट कर देगा। धीरे-धीरे गाँव की यह बात लाजवंती के कानों तक भी पहुँची। उसने उनकी कुछ परवाह नहीं की, एक कान से सुना, दूसरे कान से उड़ा दिया।

रात का समय था, मंदिर में घंटे बज रहे थे। लाजवंती ने आरती का थाल उठाया और पूजा के लिए चली। मगर दरवाजे पर पहुँचकर पाँव रुक गए।

सहसा उसने सुना, कोई प्रार्थना कर रहा था। लाजवंती का रोम-रोम कान बन गया। उसे निश्चय हो गया कि इस प्रार्थना का अवश्य ही उसके साथ संबंध है। और वह गलती पर न थी।

(21) "देवी माता! उसे सदा सुहागिन रखो। उसके बेटे को चिरंजीव बनाओ।

यह ब्राह्मणी हरो थी। लाजवंती के रोम-रोम में खुशी की लहर दौड़ गई।

रात को स्वप्न में वह फिर देवी के सम्मुख थी। एकाएक देवी की मूर्ति ने अपने सिंहासन से नीचे उतरकर लाजवंती को गले से लगा लिया और कहा – "तूने एक गरीब की सेवा की है, मानो मेरी सेवा की है। मैं तुमसे खुश हूँ, तेरे काम से खुश हूँ। लोग तीर्थ-यात्रा करते हैं, तूने महातीर्थ-यात्रा की है। सेवा तीर्थ-यात्रा से बढ़कर है। तूझे आशीर्वाद देती हूँ।"

लाजवंती की आँखें खुल गईं। आज उसने पूजा का रहस्य पा लिया था।

1.2 शब्दावली

शब्द	अर्थ
पैरा (1)	
आशीर्वाद (पु.)	आशिष, दुआ blessing
आखिरी (वि.)	अंत का, अंतिम the last, the latest
सहारा (पु.)	आधार support
ममता (स्त्री.)	माँ का प्यार, ममत्व affection
धोखे में डालना	छलना to deceive
दीपक (पु.)	दीया lamp
आक्रमण करना (सक. क्रिया)	हमला करना to attack
नजर लगना (मुहा.)	किसी के देखने से अनिष्ट की आशंका होना Look having hypnotic effect, to be a prey to an evil eye, sorceric look
चिंता (स्त्री.)	फिक्र anxiety
पैरा (2)	
भराया स्वर	गले की बदली हुई आवाज hoarse
सिर दर्द (पु.)	सिर में दर्द होना headache
पैरा (3)	
साधारण (विशे.)	सामान्य, आम simple, common

शब्द

सेवा-सुश्रूषा (स्त्री.)
निर्दयी (विशे.)
छीन लेना (संयुक्त क्रिया)
अधमरा (विशे.)
घटना (स्त्री.)

अर्थ

तीमारदारी nursing the sick
जिसमें दया न हो, कठोर cruel, unkind
लूट लेना to snatch away
आधा मरा half-dead (as if dead)
वाकया incident

पैरा (4)

पैरों के नीचे से धरती
खिसकना (मुहा.)
व्याकुल (विशे.)
अनुभवी (विशे.)
वैद्य (पु.)

अत्यधिक घबरा जाना
Earth slipping under one's feet
घबराया हुआ, विकल deeply perturbed
तजुर्बेकार experienced
डॉक्टर physician, doctor practicing Ayurvedic medicine system

लुकमान (पु.)

डॉक्टर name of physician who never failed in his medical practice

साप्ताहिक (विशे.)

सप्ताह का weekly

सप्ताह

हफ्ता week

ऐनक

चश्मा a pair of spectacles

पैरा (5)

अवस्था (स्त्री.)
परदा (पु.)
सहानुभूति (स्त्री.)
बुखार (पु.)
मनोरथ (पु.)
मनोरथ सिद्ध होना (मुहा.)
नाड़ी देखना (मुहा.)
असर (पु.)

(i) उम्र (स्त्री.), आयु (स्त्री.) age (ii) स्थिति situation
घूंघट (पु.) veil
हमदर्दी sympathy
ज्वर (पु.) fever
इच्छा (स्त्री.) desire
इच्छा पूरी होना to have one's desire fulfilled
कलाई की नाड़ी देखकर रोग का पता लगाना to feel one's pulse
प्रभाव (पु.) effect, result

शब्द**अर्थ**

धीरज देना (मुहा.)

धीरज बँधाना to console

पैरा (7)

मियादी बुखार

टायफाइड बुखार typhoid fever

चौंक पड़ना (मुहा.)

घबरा जाना to be stunned

भगवान भला करेगा

भगवान सहायता करेगा god will help

पैरा (8)

माथा (पु.)

सिर, मस्तक head, forehead

माथा ठनकना (मुहा.)

अनिष्ट की आशंका होना to become apprehensive

हिचकिचाना (क्रि. अक.)

संकोच करना to hesitate

अंदेशा (पु.)

आशंका (स्त्री.), डर की बात

सहम जाना (मुहा.)

घबरा जाना, डर जाना

बधाई देना (सक. क्रिया)

मुबारकबाद देना to congratulate

दिल बैठ जाना (मुहा.)

सहम जाना to get disheartened

पैरा (9)

प्राण सूखना (मुहा.)

पूरी तरह घबरा जाना

पूर्व-सूचना (स्त्री.)

पहले से ही प्राप्त सूचना pre-intimation

दिव्य शक्ति (स्त्री.)

पारलौकिक शक्ति supernatural power

पाषाण (पु.)

पत्थर stone

चरम सीमा (स्त्री.)

अंतिम सीमा climax

परिक्रमा करना (सक. क्रिया)

चारों ओर घूमना to take rounds

तीर्थ यात्रा (स्त्री.)

पवित्र स्थानों पर दर्शन स्नानादि के निमित्त जाना pilgrimage

पैरा (10)

मानता मानना (सक. क्रि.)

मनौंती मानना to take such a vow

संकट (पु.)

कष्ट (पु.) trouble, distress, adversity

शब्द**अर्थ**

पैरा (11)

खर्च (पु.)

अनुमान (पु.)

हृदय बैठना (मुहा.)

दौलत (स्त्री.)

व्यय (पु.) expenses, expenditure

आकलन (पु.), अंदाजा estimate

घबरा जाना sinking of heart

संपत्ति (स्त्री.) धन (पु.) wealth

पैरा (13)

आभा (स्त्री.)

फूला न समाना (मुहा.)

प्रकाश (पु.), चमक (स्त्री.) lusture

बहुत खुश (प्रसन्न) होना to be happy

पैरा (14)

करताल (स्त्री.)

ढोलक (पु.)

बेफिक्र (विशे.)

सुलफा (पु.)

श्रद्धा-भाव (पु.)

आतंक (पु.) / भय (पु.)

अमचूर (पु.)

small cymbal

small drum

चिंता रहित carefree

सूखा तंबाकू, चरस an intoxicating drug

आदर भाव feeling of devotion

डर fear apprehension

खटाई, सूखे आम का चूरा

पैरा (15)

असीम (विशे.)

उँगलियाँ उठना (मुहा.)

स्रोत (पु.)

सीमा से बाहर limitless

दोष लगाना to accuse

नदी आदि के निकलने का स्थान, जल निकलने का स्थल source

पैरा (16)

विदा करना (सक. क्रिया)

चंदन (पु.)

गऊ (स्त्री.)

प्रस्थान करने की अनुमति देना to bid good bye

एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी sandal wood

गौ, गाय cow

शब्द**अर्थ**

सिसकी भरना

सिसक-सिसककर रोना to sob

कान खड़े होना (मुहा.)

सुनने की मुद्रा में आना, चौकन्ना होना to be alert

पैरा (17)

सन्नाटा (पु.)

शांति (स्त्री.) complete silence, pin drop silence

नारी-दर्प (पु.)

स्त्री का अभिमान (पु.) pride of a woman

बट्टा लगना

नुकसान होना to blot

पड़ोसी (पु.) / पड़ोसिन (स्त्री.)

पड़ोस में रहने वाला neighbour

पैरा (18)

उत्तर (पु.)

जवाब (पु.) answer

प्रभात (पु.)

सुबह (स्त्री.) morning / सवेरा, प्रातःकाल

प्रकाश (पु.)

उजाला light

आतुर (क्रि. वि.)

तैयार, जल्दी में in a hurry, also keen to know

नाव पार लगना (मुहा.)

काम पूरा होना

पैरा (19)

सत्तू (पु.)

भुने हुए गेहूँ, जौ या भुने चने का आटा

प्रबंध (पु.)

इंतजाम arrangement

आँख भर आना (मुहा.)

रुलाई आना

नाक कटना (मुहा.)

अपमान होना

किसी के सामने हाथ

किसी से माँगना to beg

फैलाना (मुहा.)

पैरा (20)

कोप (पु.)

क्रोध (पु.), गुस्सा (पु.) anger

पानी-पानी होना (मुहा.)

द्रवित होना to melt

त्याग (पु.)

Sacrifice

शब्द**अर्थ**

ग्रहण (पु.)

(1) लेना, प्राप्त करना, पकड़ना

(2) also eclipse

सूर्य ग्रहण solar eclipse / चंद्र ग्रहण lunar eclipse

पैरा (21)

चिरंजीव

दीर्घायु long life

बाल बाँका न होना (मुहा.)

कोई हानि न होना not come to any harm

रहस्य (मुहा.)

राज secret

1.3 पर्यायवाची

शब्द	पर्यायवाची शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
पुत्र	लड़का, सुत, तनय	हानि	नुकसान
जीवन	जिंदगी	भयानक	डरावना
साधारण	सामान्य	परिश्रम	मेहनत
दीपक	दीया	आखिरी	अंतिम
हवा	वायु, पवन, समीर	सफल	कामयाब
प्रायः	अक्सर	आशा	उम्मीद
ढूँढ़ना	खोजना	सुगंध	खुशबू
स्वर	ध्वनि, आवाज	सौभाग्य	खुशकिस्मती
सेवा-सुश्रूषा	तीमारदारी	यात्रा	सफर
अवस्था	आयु, उम्र, स्थिति, हालत	सहसा	अचानक, एकाएक
मनोरथ	इच्छा	वास्तविक	असली
चिंता	फिक्र	प्रकाश	उजाला
असर	प्रभाव	प्रभात	सुबह-सवेरे, सहर
शक्ति	ताकत, बल	स्वस्थ	निरोग
सख्त	कठोर, कड़ा	अनुमान	अंदाज
प्रसन्नता	खुशी		

1.4 विलोम शब्द

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
आशीर्वाद	शाप	पहला	अंतिम, आखिरी
जीवन	मरण, मृत्यु	स्वस्थ	अस्वस्थ
प्रातःकाल	सायंकाल	पुराना	नया
सख्त	नरम	चिंतित	निश्चित
कठोर	कोमल	उतरना	चढ़ना
हानि	लाभ	आशा	निराशा
सफल	असफल	सावधानी	असावधानी
आशा	निराशा	शुद्ध	अशुद्ध
सुगंध	दुर्गंध	जरूरी	गैरजरूरी
प्रकाश	अंधकार	आवश्यक	अनावश्यक
कमजोर	ताकतवर, शक्तिशाली, बलवान	झूठ	सच
दुख	सुख	मान	अपमान
बुझाना	जलाना	प्यार	नफरत, घृणा

1.5 मुहावरे और कहावतें

(1) जीवन का सहारा – जीने का एकमात्र आधार।

(वृद्ध भीमशंकर के दोनों बड़े लड़के अपने परिवार के साथ अलग रहते हैं। अब उसका छोटा पुत्र अजयशंकर ही उसके जीवन का सहारा है।)

(2) छाती से लगाए रखना– लगातार ध्यान रखना, एक क्षण के लिए अलग न करना, आँखों से ओझल न होने देना।

(लहनासिंह कारगिल युद्ध में मारा गया। उसकी बूढ़ी माँ अपने बेटे के चित्र को छाती से लगाए रखती है।)

(3) नजर लगना / बुरी नजर लगना – किसी के देखने से अनिष्ट की आशंका होना।

(यह एक तरह का अंधविश्वास है कि किसी के देखने से खासकर बच्चों को नजर लग जाती है।)

(4) दिल बैठ जाना – हतोत्साहित हो जाना, घबरा जाना, परेशान हो जाना ।

(मेरी फैक्ट्री कई दिनों से बंद पड़ी है। पर जब मैंने पाँच हजार रुपए बिजली का बिल देखा तो मेरा दिल बैठ गया।)

- (5) रुपया हाथ का मैल है – धन, रुपया-पैसा, अधिक महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है। रुपया पैसा मेहनत से फिर से प्राप्त किया जा सकता है, परंतु पैसे से स्वास्थ्य या मान नहीं मिल सकता।
(बाबूलाल के घर डाका पड़ा, जिसमें उसकी पत्नी के सारे गहने और सारे पैसे चले गए। बाबूलाल टूट-सा गया। परंतु उसके पिता जी ने उसे धीरज बँधाया और बोले डाकू खून कर सकते थे। जान तो बच गई। रुपया तो हाथ का मैल है। चला गया। उसका गम न करो फिर कमा लोगे।)
- (6) पाँव भूमि / जमीन पर न पड़ना – अत्यधिक उतावला होना, जल्दी-जल्दी चलना, उत्साहित होना।
(सुधाकर को तार द्वारा नियुक्ति पत्र मिला। उसे दिखाने वह अपने पिता के दफ्तर की ओर भागा। उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।)
- (7) फूला न समाना – अत्यधिक प्रसन्न होना / बहुत खुश होना।
(सुधांशु को जब नियुक्ति पत्र मिला तो वह फूला न समाया।)
- (8) (की ओर) उँगलियाँ उठना – जिम्मेदार ठहराया जाना / बदनाम करना
(इस परियोजना के कार्यान्वयन में यदि कोई खामी रह गई तो उसकी असफलता के लिए सबकी उँगलियाँ तुम्हारी ओर उठेंगी।)
- (9) नाव पार लगना – कार्य की सिद्धि / संकट से उबरना
(लड़की के विवाह की रस्म पूरी हुई। लड़की के पिता अपने पुत्र से बोले “भाई अब मेरी नाव पार लग गई।”)
- (10) नाक कटना – बदनामी होना, अपमानित होना, शर्म की बात होना।
(सुधीर की छोटी बहन लक्ष्मी, अपने प्रेमी गंगाधर राव के साथ भाग गई। सुधीर समाज वालों से माफी माँगते हुए बोला, “सज्जनो, मैं क्या कहूँ लक्ष्मी के कारण समाज में मेरी नाक कट गई। मुझे बता देती तो मैं उसकी शादी गंगाधर राव से ही कर देता।”)
- (11) एक कान से सुनना दूसरे से उड़ा / निकाल देना – किसी के कहे की जरा भी परवाह न करना, बिल्कुल ध्यान न देना।
(तुम रमेश को कितना भी समझाओ वह समझेगा नहीं। वह तो एक कान से सुनता है और दूसरे से निकाल देता है।)
- (12) माथा ठनकना – आशंका / डर की भावना आना
(जब नेता जी ने शहर के नामी गुंडे को नोटों से भरा ब्रीफकेस दिया तभी मेरा माथा ठनका कि यह कोई गलत काम कराना चाहते हैं।)
- (13) रात-दिन एक कर देना – अनवरत काम करना / बिना रुके काम करना
– बिना विश्राम / आराम किए काम करना।
(प्रथम श्रेणी में पास होने के लिए महमूद ने पढ़ने में दिन-रात एक कर दिया था।)
- (14) किसी के आगे हाथ फैलाना – माँगना, याचना करना।
(किसी के आगे हाथ फैलाना मरने से भी बदतर है।)

(15) बाल बाँका न होना – कोई हानि / नुकसान / खतरा न होना

(रज्जाक ने महमूद को मारने के लिए कई प्रयत्न किए पर महमूद का बाल भी बाँका नहीं हुआ। कहा भी है “जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।”

1.6 व्याकरणिक टिप्पणी : संयुक्त क्रियाएँ

हिंदी में संयुक्त क्रिया की संकल्पना पर प्रश्न पत्र-1, पाठ-3 के क्रिया-पदबंध प्रकरण में चर्चा की गई है। संयुक्त क्रिया दो क्रियाओं का ऐसा प्रयोग है जो आपस में मिलकर एक संश्लिष्ट भाव प्रकट करते हैं। पहली क्रिया मुख्य क्रिया तथा दूसरी रंजक क्रिया होती है। हिंदी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग बड़ा ही सहज और सामान्य है। रंजक क्रिया अपना मूल अर्थ खोकर मुख्य क्रिया के अर्थ को विशिष्टता प्रदान करती है। कहीं-कहीं उसमें तीव्रता भी लाती है।

इस पाठ में आई संयुक्त क्रियाओं को सूचीकृत किया गया है।

पैराग्राफ

1. क्रिया + जा (मुख्य क्रिया के भाव को पूर्णता प्रदान करती है)

—लाजवंती के सब-के-सब बच्चे बचपन में ही <u>मर गए</u> ।	1
—पहले बच्चे की मौत का दुख भूल <u>जाती थी</u> ।	1
—कभी वह निकल जाता तो लाजवंती ढूँढ़ने <u>लग जाती</u> ।	1
—जरा-सी बात में पागल हो <u>जाती</u> ।	2
—लाजवंती के हाथ से बरतन <u>गिर गया</u> ।	2
—उसके मन में भय <u>बैठ जाता</u> ।	2
—लाजवंती का नारी हृदय <u>काँप गया</u> ।	3
—लाजवंती अधमरी-सी हो <u>गई थी</u> ।	3
—बुखार उतर <u>जाएगा</u> ।	5
—इबते हुए को सहारा <u>मिल गया</u> ।	5
—वैद्य जी धीरज दे-देकर <u>चले गए</u> ।	6
—दोनों के प्राण <u>सूख गए</u> ।	9
—खर्च के अनुमान से हृदय <u>बैठ गया</u> ।	11
—तुम्हारा बच्चा <u>बच गया</u> ।	11
—क्या से क्या हो <u>गया</u> ।	12
—तीन महीने <u>बीत गए</u> ।	12
—इसी तरह रात के चार <u>बज गए</u> ।	16
—सारे गाँव में आग-सी <u>लग गई</u> ।	21

—दरवाजे पर पहुँचकर पाँव <u>रुक गए</u> ।	21
—लाजवंती का रोम-रोम कान <u>बन गया</u> ।	21
—खुशी की लहर <u>दौड़ गई</u> ।	21
—लाजवंती की आँख <u>खुल गई</u> ।	21
2. क्रिया + लग (शुरू होने का भाव)	
—उसकी आँखों में आँसू <u>लहराने लगते</u> ।	2
—लाजवंती की चिंता <u>बढ़ने लगी</u> ।	6
—लाजवंती ढूँढ़ने <u>लग जाती</u> ।	1
—दोनों <u>सोचने लगे</u> ।	9
—दूध की बूँदें <u>टपकने लगती हैं</u> ।	11
—लाजवंती ध्यान से <u>सुनने लगी</u> ।	16
—हरो सिसकियाँ भरकर <u>रौने लगी</u> ।	17
—आँसू <u>छलकने लगे</u> ।	
3. क्रिया + दे (पूर्णता बोधक—अन्य के लिए)	
—ममता ने उसकी आँखों को धोखे में <u>डाल दिया था</u> ।	1
—लाजवंती ने दिन-रात एक <u>कर दिया था</u> ।	3
—वैद्य जी को अठन्नी <u>भेंट कर दी</u> ।	5
—किसी तरह यह दिन <u>निकाल दो</u> ।	7
—सच-सच <u>बता दीजिए</u> ।	11
—लाजवंती ने स्वामी को <u>सुला दिया</u> ।	8
—दुख दूर कर दोगी? हाँ <u>कर दूँगी</u> ।	18
—ईश्वर का कोप गाँव-भर को जलाकर राख <u>कर देगा</u> ।	20
4. क्रिया + ले (पूर्णता + स्वयं के लिए)	
—मृत्यु ने लाजवंती का पुत्र <u>छीन लिया था</u> ।	3
—वैद्य जी ने पैसे <u>ले लिए</u> ।	6
—हेम के पिता को <u>बुलवा लो</u> ।	8
—तुम्हारे जेठ ने मंजूर <u>कर लिया है</u> ।	18
5. क्रिया + सक (सामर्थ्य बोधक)	
—हेमराज बुरी नजर से न <u>बच सका</u> ।	2

1.7 सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

प्रायः देखा गया है कि लोगों की भावनाएँ दो चरम सीमाओं को छूती चलती हैं। नदी के दो किनारों की तरह ये कभी मिल नहीं पातीं। परंतु समानांतर रूप से चलती-बहती दो विपरीत भावनाएँ एक-दूसरे की पूरक होती पाई जाती हैं। इस पाठ में लाजवंती की आस्था और उसके अंधविश्वास के रूप में दोनों भावधाराओं के दर्शन होते हैं।

भारत एक धर्मप्राण देश है। लोगों की, विशेषकर महिलाओं की, धर्म में अत्यधिक आस्था है। ईश्वर में अटूट विश्वास है। विश्व के सभी धर्मावलंबियों में प्रायः यह माना जाता है कि ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास से मानव-जीवन सुखमय होता है। लोगों को मानसिक शांति मिलती है। आने वाले और आए हुए संकट टल जाते हैं। हिंदुओं में प्रार्थना, अर्चना, पूजा, जप, ध्यान, मनन, कीर्तन आदि कई प्रक्रियाएँ हैं ईश्वरभक्ति की।

मुस्लिम और ईसाई तथा विश्व के कई अन्य धर्मों में भी इस तरह की धारणाएँ पाई जाती हैं। इस दिशा में टेनीसन की कविता 'पासिंग आव आर्थर' की एक पंक्ति है—

More things are brought by prayer than this world dreams of अर्थात् प्रार्थना से हम इतना कुछ पा सकते हैं जिसका हम स्वप्न में भी अनुमान नहीं कर सकते। हम इसे उस संदर्भ में जोड़ना चाहते हैं जिसमें लाजवंती अपने पुत्र की रक्षा हेतु देवी के मंदिर में जाकर पूजा करती है, प्रार्थना करती है और मानता मानती है कि उसके पुत्र के अच्छा हो जाने पर वह तीर्थ-यात्रा करेगी। इसके बाद लाजवंती पूर्णतया आश्वस्त हो जाती है कि उसका बीमार पुत्र हेमू अवश्य अच्छा हो जाएगा और मौत भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। भगवती उसकी रक्षा अवश्य करेगी। उसका विश्वास फलदायक हुआ।

हिंदुओं का दूसरा विश्वास बहुदेववाद पर है—देवता कई हैं—त्रिदेवों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं। अन्य देव हैं—इंद्र, सूर्य, चंद्र, वरुण, वायु, हनुमान इत्यादि। मातृरूप में भगवती दुर्गा का बड़ा माहात्म्य है।

हिंदुओं की तीसरी मान्यता है 'अवतारवाद' की। जब-जब धर्म का हास होता है, अधर्म बढ़ता है तब-तब जनता और साधुजनों की रक्षा, दुष्कर्मों के नाश करने हेतु ईश्वर अवतार लेता है। राम, कृष्ण, बुद्ध अवतारी माने गए हैं।

उचित शिक्षा की कमी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में अंधविश्वास पनपता है। भारत में निचले तबके के लोगों में प्रायः ग्रामीण अंचल में अंधविश्वास की जड़ें गहरा गई हैं। लोग तंत्र-मंत्र, टोटका, जादू-टोना, टोनही कर्म (witchcraft) पर विश्वास करते हैं। कई स्थितियों में बीमार को डॉक्टर/वैद्य के पास न ले जाकर ओझा से झाड़-फूँक द्वारा इलाज कराते हैं और रोगी कभी-कभी उचित दवा के अभाव में मर भी जाता है। इसका दोष टोना, टोटका या नजर लगने को या भाग्य को दिया जाता है।

इस पाठ में नजर लगने की जो बात कही गई है, वह भी अंधविश्वास का एक उदाहरण है। कुछ लोगों की मान्यता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) की कुदृष्टि से प्रायः छोटे बच्चे बीमार हो सकते हैं। इसे ही 'नजर लगना' कहते हैं। बच्चे को नजर लगने से बचाने के लिए माँएँ उसके माथे पर काजल का काला टीका लगा देती हैं।

कहा जाता है कि अंधविश्वास विश्व की सभी जातियों में पाया जाता है, चाहे वे कितनी ही शिक्षित क्यों न हों। इसी बात को सिद्ध करने के लिए एक हास्य कथा है कि इंग्लैंड, अमरीका में घर के बाहर घोड़े की नाल लगाएँ तो भाग्योदय (rise of fortune, good luck) होता है।

एक वैज्ञानिक जब विख्यात वैज्ञानिक आपनहीमर से मिलने गया तो उसने देखा कि उनके दरवाजे पर घोड़े की नाल (horse-shoe) लगी थी। उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा वैज्ञानिक इतना अंधविश्वासी है कि सामान्यजन की तरह यह मानने लगा है कि घोड़े की नाल लगाने से भाग्योदय होता है।

उसने आपनहीमर से पूछ ही लिया, “महाशय, क्या आप यह मानते हैं कि घोड़े की नाल दरवाजे पर लगाने से भाग्योदय होता है?”

आपनहीमर ने तपाक से कहा, “बिल्कुल नहीं, मुझे इस बात पर जरा भी विश्वास नहीं है।”

“फिर आपने इस घोड़े की नाल को दरवाजे पर क्यों लगाया?”

आपनहीमर ने बड़ी ही सहज मुद्रा में कहा, “लोगों का कहना है कि चाहे आप उस पर विश्वास करें या न करें भाग्योदय तो होता ही है।”

भाग-ख : निबंध

2.0 निबंध

प्रस्तुत निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल के ‘काव्य में प्राकृतिक दृश्य’ का एक अंश है।

2.1 आधार पाठ

देशप्रेम

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल

1. जो हृदय संसार की जातियों के बीच अपनी जाति की स्वतंत्र सत्ता का अनुभव नहीं कर सकता, वह देश-प्रेम का दावा नहीं कर सकता। इस स्वतंत्र सत्ता से अभिप्राय स्वरूप की स्वतंत्र सत्ता है, केवल अन्न-धन संचित करने और अधिकार भोगने की स्वतंत्रता से नहीं। अपने स्वरूप को भूलकर यदि भारतवासियों ने संसार में सुख-समृद्धि प्राप्ति की तो क्या? क्योंकि उन्होंने उदात्तवृत्तियों को उत्तेजित करने वाली बंधी-बंधाई परंपरा से अपना संबंध तोड़ लिया, नई उभरी हुई इतिहास शून्य जंगली जातियों में अपना नाम लिखाया।
2. देश-प्रेम है क्या? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलंबन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन, पर्वत सहित सारी भूमि। यह प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्य गत प्रेम है। जिनके बीच हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते रहते हैं, जिनका हमारा हर घड़ी का साथ रहता है। सारांश यह है कि जिनके सान्निध्य में हमें अच्छा लगता है, उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। यदि यह नहीं है तो वह कोरी बकवास या किसी और भाव के संकेत के लिए गढ़ा हुआ शब्द है।
3. यदि किसी को अपने देश से सचमुच प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता,

गुल्म, पेड़, पत्ते, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सबसे प्रेम होगा, वह सबको चाहभरी दृष्टि से देखेगा, वह सबकी सुध करके विदेश में आँसू बहाएगा। जो यह भी नहीं जानते कि कोयल किस चिड़िया का नाम है, जो यह भी नहीं सुनते कि चातक कहाँ चिल्लाता है, जो यह भी आँख भर नहीं देखते कि आम प्रणय-सौरभपूर्ण मंजरियों से कैसे लदे हुए हैं, जो यह भी नहीं झाँकते कि किसानों के झोपड़ों के भीतर क्या हो रहा है, वे यदि दस बने-ठने मित्रों के बीच प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर देश-प्रेम का दावा करें तो उनसे पूछना चाहिए कि भाइयो, बिना रूप-परिचय का यह प्रेम कैसा? जिनके दुख-सुख के तुम कभी साथी नहीं हुए, उन्हें तुम सुखी देखना चाहते हो, यह कैसे समझें। उनसे कोसों दूर बैठे-बैठे, पड़े-पड़े या खड़े-खड़े तुम विलायती बोली में “अर्थशास्त्र की दुहाई दिया करो, पर प्रेम का नाम उसके साथ न घसीटो।” प्रेम हिसाब-किताब नहीं है। हिसाब-किताब करने वाले भाड़े पर भी मिल सकते हैं, पर प्रेम करने वाले नहीं।

4. हिसाब-किताब से देश की दशा का ज्ञानमात्र हो सकता है। हितचिंतन और हितसाधन की प्रवृत्ति कोरे ज्ञान से भिन्न है। वह मन के वेग या ‘भाव’ पर अवलंबित है, उसका संबंध लोभ या प्रेम से है, जिसके बिना अन्य पक्ष में आवश्यक त्याग का उत्साह हो नहीं सकता। जिसे ब्रज की भूमि से प्रेम होगा वह इस प्रकार कहेगा –

नैनन सों ‘रसखान’ जबै ब्रज के वन, बाग, तड़ाग, निहारों,
कोटिक वे कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

रसखान तो किसी की ‘लकुटी अरु कामरिया’ पर तीनों पुरों का राजसिंहासन तक त्यागने को तैयार थे, पर देश-प्रेम की दुहाई देने वालों में से कितने अपने किसी थके मांदे भाई के फटे-पुराने कपड़ों पर रीझकर या कम से कम न खीझकर बिना मन मैला किए कमरे का फर्श भी मैला होने देंगे? मोटे आदमियों ! तुम जरा-सा दुबले हो जाते – अपने अंदर से ही सही – तो न जाने कितनी ठठरियों पर माँस चढ़ जाता।

5. पशु और बालक भी जिनके साथ अधिक रहते हैं, उनसे परच जाते हैं। यह परचना परिचय ही है। परिचय प्रेम का प्रवर्तक है। बिना परिचय के प्रेम नहीं हो सकता। यदि देश-प्रेम के लिए हृदय में जगह करनी है तो देश के स्वरूप से परिचित और अभ्यस्त हो जाइए। बाहर निकलिये तो आँख खोलकर देखिए कि खेत कैसे लहलहा रहे हैं, नाले झाड़ियों के बीच कैसे बह रहे हैं, टेसू के फूलों से वनस्थली कैसी लाल हो रही है, कछारों में चौपायों के झुंड इधर-उधर चरते हैं, चरवाहे तान लड़ा रहे हैं, अमराइयों के बीच गाँव झाँक रहे हैं, उनमें घुसिए, देखिए तो क्या हो रहा है। जो मिलें उनसे दो-दो बातें कीजिए, उनके साथ किसी पेड़ की छाया के नीचे घड़ी आध-घड़ी बैठ जाइए और समझिए कि ये सब हमारे देश के हैं। इस प्रकार जब देश का रूप आपकी आँखों में समा जाएगा, आप उसके अंग-प्रत्यंग से परिचित हो जाएँगे, तब आपके अंतःकरण में इस इच्छा का सचमुच उदय होगा कि वह कभी न छूटे, वह सदा हरा-भरा और फला-फूला रहे, उसके धनधान्य की वृद्धि हो, उसके सब प्राणी सुखी रहें।
6. पर आजकल इस प्रकार का परिचय बाबाओं की लज्जा का एक विषय हो रहा है। वे देश के स्वरूप से अनजान रहने या बनने में अपनी बड़ी शान समझते हैं। मैं अपने एक लखनवी दोस्त के साथ साँची का स्तूप देखने गया। वह स्तूप एक बहुत सुंदर छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर है। नीचे

छोटा-मोटा जंगल है, जिसमें महुए के पेड़ भी बहुत-से हैं। संयोग से उन दिनों वहाँ पुरातत्व विभाग का कैंप पड़ा हुआ था। रात हो जाने से उस दिन हम लोग स्तूप नहीं देख सके, सवेरे देखने का विचार करके नीचे उतर रहे थे। वसंत का समय था। महुए चारों ओर टपक रहे थे। मेरे मुँह से निकला—“महुओं की कैसी महक आ रही है।” इस पर लखनवी महाशय ने चट मुझे रोककर कहा—“यहाँ महुए का नाम न लीजिए, लोग देहाती समझेंगे।” मैं चुप ही रहा, समझ गया कि महुए का नाम जानने से बाबूपन में बड़ा भारी बट्टा लगता है। पीछे ध्यान आया कि यह वही लखनऊ है जहाँ कभी यह पूछने वाले भी थे कि गेहूँ का पेड़ आम के पेड़ से छोटा है या बड़ा।

2.2 शब्दावली

शब्द

अर्थ

पैरा (1)

हृदय (पु.)

दिल, अंतःकरण heart

जाति (स्त्री.)

समुदाय community, caste

सत्ता (स्त्री.)

शासन existence

दावा (पु.)

अधिकार claim

अभिप्राय (पु.)

मतलब, उद्देश्य purpose, meaning

संचित करना (सक. क्रि.)

इकट्ठा करना, एकत्र करना to collect, to amoss

समृद्धि (स्त्री.)

संपन्नता (स्त्री.) prosperity

उदात्तवृत्ति (स्त्री.)

महान भावना

उत्तेजित करना (सक. क्रि.)

किसी काम के लिए प्रेरित करना to inspire, also to provoke

इतिहास शून्य

जिसका इतिहास न हो

परंपरा (स्त्री.)

रीति tradition

पैरा (2)

आलंबन (पु.)

सहारा, आश्रय support, prop

साहचर्य (पु.)

साथ रहना staying / living / moving together

सान्निध्य (पु.)

निकटता या नजदीकी proximity, nearness

लोभ (पु.)

लालच greed

राग (पु.)

प्रेम, लगाव attachment

शब्द

अंतःकरण (पु.)

पैरा 3

निर्झर (पु.)

कोयल (स्त्री.)

चातक (पु.)

गुल्म

विलायती

दुहाई (स्त्री.)

भाड़ा

प्रणय (पु.) सौरभपूर्ण

मंजरी (स्त्री.)

घसीटना (सक. क्रिया)

औसत (पु.)

आमदनी (स्त्री.)

परता

पैरा (4)

हित (पु.)

हितचिंतन (पु.)

हित साधन (पु.)

कोरा (विशे.)

प्रवृत्ति (स्त्री.)

भाव

रीझना (अक. क्रि.)

अर्थ

दिल, हृदय heart

झरना

एक पक्षी cuckoo

एक पक्षी जो वर्षा की बूँद; जो स्वाति नक्षत्र में गिरती है; को पीकर जीवित रहता है।

झाड़ (पेड़)

अंग्रेजी English

घोषणा to entreat

किराया

मादक गंध से युक्त आम का बौर

to drag

average

आय income

दर, भाव

भलाई (स्त्री.) welfare

भलाई के बारे में सोचना

भलाई करना

केवल, सिर्फ, खाली only, blank

झुकाव, अभिमुख होना tendency

(i) मन का वेग feeling

(ii) दर, कीमत rate

किसी की ओर आकर्षित होना, प्यार हो जाना

to be attracted

शब्द

खीझना (अक. क्रि.)

अंदेशा (पु.)

ठठरी (स्त्री.)

अर्थ

नाराज होना to be annoyed

डर (पु.), आशंका apprehension, fear

कंकाल, अस्थिपंजर skeleton

पैराग्राफ (4) में रसखान के पद में आए शब्दों के अर्थ

नैनन (पु. बहु.)

आँखें

तड़ाग (पु.)

जलाशय, तालाब

निहारों

देखूँ

निहारना

देखना

कोटिक

करोड़ों

कलधौत

सोना-चाँदी

धाम

भवन, घर

करील

एक पौधा जिसका फल कडुवा होता है

कुँज

पौधों का झुंड

वारों

न्यौछावर करूँ

लकुटी

लाठी

कामरिया

कंबल

रसखान कहते हैं “जब इन आँखों से ब्रज के वन, बाग, जलाशय देखूँ तो वहाँ के करील (कडुवे फल वाले वृक्ष) के कुँजों पर करोड़ों सोने-चाँदी के भवनों को न्यौछावर कर दूँ।”

पैरा (5)

परच जाना (अक. क्रि.)

अधिक परिचित हो जाना, जान-पहचान

प्रवर्तक (पु.)

किसी काम को करने वाला initiator

अभ्यस्त होना (अक. क्रि.)

आदत हो जाना to habituate

वनस्थली (स्त्री.)

जंगल, जंगल में बना आश्रम

कछार

नदी आदि से लगा क्षेत्र alluvial land

अमराई

आम के बाग mango-grove

शब्द**अर्थ**

पैरा (6)

बट्टा लगाना

धब्बा लगाना, दाग लगाना

साँची का स्तूप

भोपाल (म. प्र.) के समीप साँची में स्थित महात्मा बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित स्तूप, जिसका निर्माण काल 250 ई. पू. है।

पुरातत्व

प्राचीन वस्तुओं, कला आदि के अनुसंधान से संबंधित विद्या।

2.3 समानार्थी शब्द

प्रेम	प्यार, इश्क, मोहब्बत	love
केवल	सिर्फ, मात्र	only
स्वतंत्र	आजाद, स्वाधीन	independent
संबंध	नाता, रिश्ता	relation
संसार	दुनिया, जगत, जहान	the world
भीतर	अंदर	inside
आमदनी	आय	income
परिचित	जाना-पहचाना, ज्ञात	known

2.4 विलोम शब्द

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
प्रेम	घृणा, नफरत	त्याग	ग्रहण, प्राप्ति
स्वतंत्र	परतंत्र	नया	पुराना
देश	विदेश	सुख	दुख
ज्ञान	अज्ञान	आवश्यक	अनावश्यक
रीझना	खीझना	जरूरी	गैरजरूरी
दुबला	मोटा	आय / आमदनी	व्यय / खर्च
परिचित	अपरिचित	तोड़ना	जोड़ना
भारी	हलका		

2.5 युग्म में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द

सुख-समृद्धि	जात-पाँत	पशु-पक्षी	नदी-नाले
वन-पर्वत	हिसाब-किताब	फटे-पुराने	घिसे-पिटे
दुबला-पतला	मैला-कुचैला	फूलना-फलना	हरा-भरा
छोटा-मोटा	थका-माँदा	जात-बिरादरी	सगे-संबंधी

2.6 शब्दों / वाक्यांशों का वाक्य में प्रयोग

(1) दावा करना—to claim

जब इस मकान में मेरा कोई हक (अधिकार) नहीं है तो मैं इसे पाने के लिए दावा क्यों करूँ?

(2) अभिप्राय—मतलब, अर्थ meaning

मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि फैक्टरी से आप स्वयं अपनी साझेदारी (partnership) खतम कर दें।

(3) उत्तेजित होना—आवेश में आना to get excited

शेरसिंह ने जैसे ही मधुकर को पिस्तौल ताने खड़ा पाया वह उत्तेजित हो गया और उसने पहले गोली चला दी।

(4) प्रवर्तक—किसी काम को आरंभ करने वाला founder

महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के प्रवर्तक थे।

(5) वास्तव में—सचमुच में, वस्तुतः in fact

कमल ने जो कुछ तुम्हें बताया वह सच नहीं था। वास्तव में जब वह घटना हुई, कमल तो वहाँ मौजूद ही नहीं था।

(6) संयोग—इत्तेफाक by chance

मैं बाजार गया था, संयोग से किशोर भी वहीं मिल गया।

2.7 सारांश

लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंध में देश-प्रेम को परिभाषित किया है और उसका विशद विवेचन भी किया है।

विश्व की सभी जातियों में अपनी जाति की स्वतंत्र सत्ता की प्रतीति ही देश-प्रेम है। स्वतंत्र सत्ता से तात्पर्य है अपने स्वरूप का अस्तित्व एवं उसकी सबसे अलग सत्ता का होना। अपनी परंपरा एवं संस्कृति के दायरे में उन्नति करना और ऊँची उपलब्धि देश-प्रेम का पर्याय है।

जिसे देश के प्रति प्रेम है वह विदेश जाकर भी स्वदेश के लोगों, पशु-पक्षियों, नदी-नालों, वन-पर्वतों, झरनों को भुला नहीं पाता और उनकी याद में दुखी रहता है। वह उन्हें पुनः देखने, उनका सान्निध्य पाने के लिए लालायित रहता है।

प्रेम हिसाब-किताब या केवल चर्चा की वस्तु नहीं है। प्रेम मन का वेग है, मन की भावना है, लगाव है, व्यक्ति जहाँ कहीं भी रहेगा देश के प्रति आतुर रहेगा।

परिचय और साहचर्य से प्रेम बढ़ता है। बाहर निकलकर प्रकृति को, खेतों को, झाड़ियों को, वनों को निकट से देखिए। जो लोग मिलते हैं उनसे कुछ बातें कीजिए। मन में इस भावना का प्रादुर्भाव होगा कि देश सदा हरा-भरा रहे; धन-धान्य से परिपूर्ण हो; सभी क्षेत्रों में समृद्ध हो, सभी स्वस्थ हों, संतुष्ट हों और सुखी हों।

आज के युग में आधुनिकता की दौड़ में कुछ लोग अपने को विदेशों से लगाव और अपने राष्ट्र से अलगाव जताना शान की बात समझते हैं। यह तो राष्ट्र-प्रेम पर बट्टा लगाना है।

पाठ-14 : एकांकी और साक्षात्कार
(तृतीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

भाग-क : एकांकी

1.0	एकांकी	55
1.1	आधार पाठ : दो कलाकार	55
1.2	शब्दावली	60
1.3	वाक्यांश और मुहावरे	61
1.4	संबद्ध शब्द	62
1.5	विलोम शब्द	63
1.6	शब्द युग्म	63

भाग-ख : साक्षात्कार

2.0	साक्षात्कार	64
2.1	आधार पाठ : कविवर हरिवंशराय बच्चन	64
2.2	शब्दावली	71
2.3	पर्यायवाची शब्द	77
2.4	विलोम शब्द	77
2.5	संबद्ध शब्द	78
2.6	साक्षात्कार : सरल व्याख्या	79

भाग-क : एकांकी

1.0 एकांकी

नाटक का छोटा रूप एकांकी होता है। प्रस्तुत पाठ में आप भगवतीचरण वर्मा का लिखा एकांकी 'दो कलाकार' पढ़ेंगे।

1.1 आधार पाठ

दो कलाकार

- भगवतीचरण वर्मा

पात्र-परिचय

चूड़ामणि	:	एक कवि
मार्टड	:	एक चित्रकार
परमानंद	:	एक प्रकाशक
रामनाथ	:	एक रईस
बुलाकीदास	:	मकान मालिक

स्थान - किसी बड़े नगर के एक बड़े मकान का एक कमरा।

समय - दिन का कोई समय।

(एक बड़ा-सा कमरा। कमरे में किसी प्रकार का कोई फर्नीचर नहीं है। अंदर की तरफ कमरे के आधे भाग में तस्वीरें बिखरी पड़ी हैं और दूसरे आधे भाग में पुस्तकें बिखरी पड़ी हैं। फर्श पर स्टेज (मंच) के एक विंग से लेकर दूसरे विंग तक एक चटाई बिछी है। चटाई के बीचों-बीच एक तकिया है जो मंच के सामने न होकर दोनों विंगों के सामने है। तकिये को अपनी पीठ पर रखकर विंग की ओर मुँह किए एक ओर पंडित चूड़ामणि बैठे हैं और दूसरी ओर मिस्टर मार्टड बैठे हैं। चूड़ामणि के आगे एक मोटा-सा रजिस्टर है जिस पर वे फाउंटेन पेन से लिख रहे हैं। मार्टड के आगे एक छोटा-सा स्टैंड है जिस पर एक अधबनी तस्वीर लगी है। उसके हाथ में एक तूली है और वह तस्वीर बना रहा है।)

चूड़ामणि : (लिखते-लिखते कलम रोककर, पर उसकी आँखें रजिस्टर पर ही लगी हैं) सुना मार्टड! आज मैं प्रकाशक परमानंद के यहाँ गया था। वह बोला कि किताबें बिकती ही नहीं, पैसा कहाँ से आए ! एक पैसा मेरे पास नहीं। और बदमाश ने कल ही एक मोटर खरीदी है।

मार्टड : (तूली रोककर और तस्वीर की ओर ध्यान से देखते हुए) भाई, यह तो बुरी सुनाई। मैं तो सोचता था कि तुम रुपए ले आए होंगे, नहीं तो मैं ही लाला रामनाथ के हाथ सात रुपए में ही तस्वीर बेच देता।

चूड़ामणि : (रजिस्टर पर आँखें गड़ाता है, मस्तक पर बल पड़ जाते हैं।) क्या कहा ? तुम भी रुपए नहीं लाए ?

मार्टड : (चित्र पर तूली से रंग देते हुए) लाता कैसे? भला बताओ, पचास रुपए की तस्वीर के अगर कोई पच्चीस तक दे, तो भी वह बेची जा सकती है। लेकिन जब कोई

यह कहे कि मैं सात रुपए के ऊपर एक कौड़ी भी नहीं दे सकता, तब भला तुम्हीं बताओ मैं क्या कर सकता था?

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) हूँ ! ऐसी बात है ! तुम्हारी जगह अगर मैं होता तो मैं उससे साफ कहता कि तुम्हारे बाप ने भी कभी तस्वीर खरीदी है कि तुम्हीं खरीदोगे – और यह कहकर मैं सीधा वापस आता।

मार्तंड : (तस्वीर बनाता हुआ) अच्छा होता कि तुम्हीं मेरी जगह वहाँ होते।

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) तो क्या तुम बुद्धू की तरह चले आए?

मार्तंड : (तस्वीर बनाना रोककर तस्वीर की ओर देखता है।) नहीं यार ! मैंने तो उठने की तैयारी करते हुए सिर्फ इतना कहा – तुम चोर हो। और जब उसने सिर उठाया तब मुझसे रहा न गया और मैंने उससे कहा – तुम उठाईगीर हो! और जब उसने मेरी तरफ देखा तब मैं उससे इतना कहने का लालच न रोक सका और मैंने उससे कहा—तुम गिरहकट हो !

चूड़ामणि : (हँसते हुए रजिस्टर को देखता है) बात तो तुमने बेजा नहीं कही!

मार्तंड : (मुस्कराते हुए तस्वीर पर तूली चलाने लगता है) नहीं, बात तो बेजा नहीं थी, लेकिन बात करने के जोश में मैं यह भूल गया था कि मैं उसके घर में बैठा हूँ और उसके दस-पाँच नौकर भी हैं।

चूड़ामणि : (कलम जमीन पर ठोकते हुए) तो फिर तुम पिटे भी !

मार्तंड : (तूली रोककर) अगर पिटता, तो भी अच्छा था क्योंकि इधर बहुत दिनों से पिटा नहीं हूँ, लेकिन इसकी नौबत ही न आई। उसने नौकरों को आवाज दी और चार आदमी कमरे में घुस आए। उसने कहा – मारो! और मैं समझा मुझसे कह रहा है। लिहाजा मैंने ताना घूँसा, और वह बैठा था सामने ! सो घूँसा ठीक उसकी नाक पर पड़ा।

चूड़ामणि : (चोंककर हाथ ऊपर उठाते हुए) वेल डन ! शाबाश ! (फिर लिखने लगता है) लेकिन तुम बच कैसे आए ?

मार्तंड : (तूली नीचे रखते हुए) यह बात हुई कि नौकरों ने सम्हाला उसे, और मैं तस्वीर उठाकर वहाँ से भागा। लोग ले-दे करते ही रहे और मैंने सीधे घर पहुँचकर साँस ली ! (कुछ रुककर) लेकिन आएगा वह जरूर! गलती से मैं अपनी तस्वीर की जगह उसके बाप की तस्वीर, जो उसी दिन विलायत से बनकर आई थी, उठा लाया हूँ !

चूड़ामणि : (लिखते हुए) खैर, चिंता न करो! मैं परमानंद की सोने की घड़ी उठाकर यह कहता भागा कि अगर दो घंटे के अंदर रुपया न दिया तो मैं घड़ी बेच दूँगा (जेब से घड़ी निकालकर वह देखता है। बाहर से दरवाजा पीटने की आवाज आती है। दोनों अपना-अपना काम रोककर दरवाजे की ओर देखते हैं।)

आवाज : चूड़ामणि जी!

मार्तंड : नहीं हैं।

(मुँह फेरकर तस्वीर बनाने लगता है।)

- आवाज : मार्तंड जी!
- चूड़ामणि : नहीं हैं। (मुँह फेरकर लिखने लगता है।)
- आवाज : आप दोनों मौजूद हैं। किवाड़ खोलिए !
- दोनों : नहीं खोलेंगे !
- आवाज : हम दरवाजा तोड़ देंगे।
- चूड़ामणि : बड़ी खुशी से ! आपका दरवाजा है।
- मार्तंड : और अपनी चीज अगर आप तोड़ें तो भला हम रोकने वाले कौन होते हैं?
- आवाज : हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि दरवाजा खोलिए।
- चूड़ामणि : किससे ? चूड़ामणि से या मार्तंड से?
- आवाज : दोनों से!
- मार्तंड : दरवाजा खोलने का काम सिर्फ एक आदमी कर सकता है।
- आवाज : अगर आप लोग दरवाजा नहीं खोलते तो मैं बाहर से ताला बंद किए देता हूँ!
- चूड़ामणि : ऐसी हालत में दरवाजा हमें तोड़ना पड़ेगा।
- मार्तंड : और नुकसान आपका होगा।
- आवाज : मार्तंड जी, आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दरवाजा खोलिए।
- मार्तंड : हाँ, अब तुमने बात ढंग से की। (मार्तंड उठकर जंजीर खोलता है। बुलाकीदास का प्रवेश। मार्तंड जंजीर खुली छोड़कर लौटता है और अपनी जगह बैठकर तस्वीर बनाने लगता है।)
- बुलाकीदास : (बीच कमरे में खड़े होकर) छह महीने हो गए! मुझे किराया चाहिए।
(दोनों चुप रहते हैं)
- बुलाकीदास : आप लोग सुनते हैं ?
- चूड़ामणि : कृपा करके आप बात मार्तंड जी से करें !
- बुलाकीदास : क्यों ? आपसे क्यों नहीं ?
- चूड़ामणि : इसलिए कि आपने किवाड़ खुलवाया है मार्तंड से, मेरा किवाड़ अभी तक बंद है !
लिहाजा आपको मुझसे बात करने का कोई अधिकार नहीं ! (लिखने लगता है।)
- मार्तंड : (बुलाकीदास की तरफ मुड़कर) लाला बुलाकीदास, आपने पहले आवाज दी चूड़ामणि को। वे यहाँ मौजूद हैं, आप उनसे बातचीत करें। (तस्वीर बनाने लगता है।)
- बुलाकीदास : मैं आप दोनों से कहता हूँ कि जब से आप लोग इस कमरे में आए हैं, तब से आप लोगों ने एक पैसा भी नहीं दिया। छह महीने हो गए। पच्चीस रुपये के हिसाब से डेढ़ सौ रुपये होते हैं।

- चूड़ामणि : (लिखना बंद करके बुलाकीदास की ओर घूमता है।) बिल्कुल झूठ! आपके नाती के मुंडन के निमंत्रण-पत्र पर मंगलाचरण की कविता मैंने लिखी थी, एक महीने का किराया वह अदा हुआ। (चूड़ामणि फिर से लिखना शुरू कर देता है, बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि की ओर देखता है।)
- मार्तंड : (तेजी से घूमकर) और आपको पूजा करने के लिए राधाकृष्ण की तस्वीर मैंने बनाकर दी थी, दूसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (यह कहकर तस्वीर बनाने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से मार्तंड को देखता है।)
- चूड़ामणि : (घूमकर) आपके छोटे लड़के के विवाह पर मैंने कवि-सम्मेलन करवा दिया था, तीसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (कहकर लिखने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि को देखता है, फिर कुछ चुप रहकर।)
- बुलाकीदास : अजी वाह ! इतने जरा-जरा से काम के रुपए! वह तो आपने अपनेपन में कर दिया था।
- मार्तंड : (तस्वीर बनाता हुआ) हमने काम तो किया, आप तो बिना काम किए हुए ही रुपया मांगते हैं।
- चूड़ामणि : (लिखता हुआ) और आप भी अपनेपन में किराया जाने दीजिए !
- बुलाकीदास : आप लोग अजीब तरह के आदमी हैं। अच्छा यह चार महीने का किराया हुआ। अब दो महीने का किराया दीजिए और मकान खाली कीजिए।
- चूड़ामणि : (घूमकर) संसार का एक महाकवि आपके इस चिड़ियाखाने-नुमा मकान में रहा – पाँचवें महीने का किराया वह अदा हुआ।
- मार्तंड : (घूमकर) संसार का एक श्रेष्ठ चित्रकार आपके इस जानवरों के रहने काबिल मकान में रहा, छठे महीने का किराया वह अदा हुआ !
(परमानंद का प्रवेश। उन्हें देखते ही चूड़ामणि उठ खड़ा होता है।)
- चूड़ामणि : आइए परमानंद जी, पधारिए, आपका स्वागत है। अभी-अभी आपकी कीर्ति-गाथा पर एक पुराण आरंभ किया है। (बैठकर पढ़ता है) झूठ, दगाबाजी, मक्कारी, दुनिया के जितने छल-छंद नहीं बचे हैं इनसे कोई; धन्य प्रकाशक परमानंद। इसलिए हम लिखने बैठे लंबा-चौड़ा एक पुराण।
- परमानंद : (हाथ जोड़ता है) चूड़ामणि जी, अब बस कीजिए। मैं आपके रुपए लाया हूँ।
- चूड़ामणि : (घूमकर) अच्छा रुपए लाए हैं ? (मुस्कराता हुआ रजिस्टर की कविता काटता है) तो फिर यह पुराण लिखना बंद किए देता हूँ। (परमानंद जेब से कुछ नोट निकालकर देता है। चूड़ामणि बैठे-बैठे नोट लेकर बिना गिने उन्हें अपनी जेब में रख लेता है।)
- परमानंद : अच्छा, अब मेरी घड़ी?
- चूड़ामणि : (आश्चर्य से परमानंद को देखता है) तो आप घड़ी वापस ले जाएँगे?
- परमानंद : जी हाँ !

- चूड़ामणि : बहुत अच्छा ! (बाएँ हाथ से घड़ी निकालकर परमानंद को देता है। दाहिने हाथ से रजिस्टर पर लिखता है) यह लीजिए अपनी घड़ी और यह शुरू हुआ परमानंद पुराण ! उनकी बीबी मना रही, हो जाए वह जल्दी राँड !
- परमानंद : (हाथ जोड़ते हुए) नहीं, नहीं, यह घड़ी मेरी ओर से आपको भेंट है !
(चूड़ामणि घड़ी वापस लेते हैं। इसी समय लाला रामनाथ का प्रवेश। लाला रामनाथ के हाथ में एक चित्र है। मार्तंड उठ खड़ा होता है।)
- मार्तंड : आइए, पधारिए, लाला रामनाथ साहेब ! कैसे कष्ट करना पड़ा ?
- रामनाथ : मार्तंड जी, आप अपनी तस्वीर की जगह मेरे पिता जी का चित्र ले आए हैं। यह लीजिए और मेरे पिता जी का चित्र वापस कीजिए।
- मार्तंड : अरे हाँ, बड़ी गलती हो गई, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। (बगल से चित्र उठाकर रामनाथ को देता है) यह लीजिए अपने पिता जी का चित्र।
- रामनाथ : (चित्र देखता है और क्रोध में) यह आपने क्या किया ! नाक गायब कर दी ?
- मार्तंड : लाला जी, नाक तो आपने अपने पिता जी की कटवा दी पचास रुपए के चित्र के दाम सात रुपए लगाकर ! (मार्तंड सब लोगों की ओर घूमता है) आप लोग जानते हैं – ये हैं लाला रामनाथ ! आपके पिता बड़े पुण्यात्मा थे, और आज, उनके पुत्र ने उनकी नाक कटवा दी ! आपकी तारीफ...
- रामनाथ : (बात काटकर) अच्छा ! अच्छा । यह तस्वीर मैंने ले ली ! यह लीजिए पचास रुपए और यह तस्वीर ठीक कर दीजिए !
(रामनाथ मार्तंड को नोट देता है। मार्तंड बिना गिने ही नोट अपनी जेब में रख लेता है, फिर रामनाथ के हाथ से चित्र लेकर तूली से नाक ठीक कर देता है)
- मार्तंड : यह लीजिए उनकी नाक सही सलामत वापस आ गई। (रामनाथ चित्र लेकर जल्दी-जल्दी जाता है और पीछे-पीछे परमानंद जाता है।)
- बुलाकीदास : अब आपके पास रुपए आ गए हैं। किराया अदा कर दीजिए।
- चूड़ामणि : कह तो दिया किराया हम लोग दे चुके। अब जब चढ़ेगा तब ले लेना।
- बुलाकीदास : किराया चढ़ने की नौबत ही न आएगी ! आप लोग अभी यह मकान खाली कीजिए।
- मार्तंड : बुलाकीदास, हम आपकी तस्वीर बनाकर प्रदर्शनी में भेजें और आपकी उस तस्वीर में आपकी नाक का होना या न होना हमारे इस मकान में रहने या इस मकान से जाने पर निर्भर है।
- चूड़ामणि : और अगर हम इस मकान से गए तो परमानंद पुराण को हम बुलाकी पुराण बना देंगे!
- बुलाकीदास : आप दोनों बड़े बदमाश हैं – हम आप लोगों को समझ लेंगे।
(तेजी से जाता है। चूड़ामणि उठकर दरवाजा बंद करता है। फिर अपनी जगह बैठकर लिखने लगता है। मार्तंड चित्र बनाने लगता है।)

1.2 शब्दावली (Vocabulary)

शब्द	अर्थ
कला (स्त्री०)	art
कलाकार (पु०)	artist
कवि (पु०)	poet (स्त्री० कवयित्री poetess)
कौड़ी (स्त्री०)	pie (प्राचीन समय में लेन-देन का साधन) (घोंघे का अस्थिकोश)
चित्रकार (पु०)	चित्र बनाने वाला painter
पात्र (पु०)	नाटक में काम करने वाले व्यक्ति cast
प्रकाशक (पु०)	publisher
रईस (विशे०)	धनी व्यक्ति a rich person
अधबनी (विशे०)	आधी बनी half-finished, half done
बदमाश (विशे०)	मक्कार scoundrel
तूली (स्त्री०)	brush
उठाईगीर (विशे०)	किसी का सामान चोरी से उठाकर ले जाने वाला
गिरहकट (विशे०)	जेबकतरा, पाकेटमार pick pocket
बेजा (विशे०)	गलत wrong
नौबत (स्त्री०)	मौका (पु०), अवसर (पु०) chance
लिहाजा (क्रि० विशे०, समु०)	इसलिए therefore, so
सिर्फ	केवल only
ऐसी हालत में	ऐसी स्थिति में under these circumstances
नुकसान	हानि loss
प्रवेश (पु०)	आना, अंदर आना entry
अधिकार (पु०)	हक (पु०) right
मौजूद (विशे०)	उपस्थित present
के हिसाब से (वाक्यांश)	की दर से at the rate of
आश्चर्य से (क्रि० वि०)	हैरत से, चकित होकर surprisingly
निमंत्रण पत्र (पु०)	invitation card
मंगलाचरण (पु०)	initial prayer-song

शब्द

कवि सम्मेलन (पु०)

अदा हुआ (अक० क्रि०)

जन्माष्टमी (स्त्री०)

झाँकी (स्त्री०)

चिड़ियाखाना (पु०)

रहने के काबिल (विशे०)

कीर्ति (स्त्री०)

पधारिए (क्रि०)

छल-छंद (पु०)

बस कीजिए (क्रि०)

बायाँ हाथ (पु०)

राँड (स्त्री०)

मनाना (क्रि० सक०)

दगाबाज (विशे०)

मक्कार (विशे०)

क्षमा-प्रार्थी हूँ (वाक्यांश)

दान (पु०)

नाक कटवाना (मुहावरा)

सही-सलामत

प्रदर्शनी (स्त्री०)

पटाक्षेप

अर्थ

literary poets conference, a function where the poets present their poems

paid up

the birth day of Lord Krishna

tableau

चिड़ियाघर, a resting place for birds, zoo

रहने योग्य worth living

यश (पु०) fame

आइए please come

धोखा-धड़ी cheating

please stop, that's enough

left hand

widow

(i) त्यौहार के संदर्भ-होली / बड़ा दिन / ईद मनाना to celebrate

(ii) अपने पक्ष में लाना, जिद छुड़वाना, राजी कर लेना

धोखेबाज cheater

बदमाश mischief monger

I beg your pardon, I seek apology

donation, charity

लज्जित करना to put to shame

ठीक-ठाक, बिना नुकसान के proper and safe

exhibition

परदा गिरता है curtain drops / falls

1.3 वाक्यांश और मुहावरे

- एक पैसा मेरे पास नहीं है।
I don't have any money. / I don't have a penny.
- भला बताओ।
Just tell me.

- सात रुपए के ऊपर एक कौड़ी भी नहीं दे सकता।
I won't give you even a pie over (this amount of) seven rupees.
- तुम्हारी जगह अगर मैं होता
If I were in your place.
- (क्या) ऐसी बात है?
Is it so?
- बात कहने के जोश में
In the heat of the situation.
- अपनी चीज अगर आप तोड़ें तो हम रोकने वाले कौन होते हैं?
If you break your own thing who are we to stop you from doing so?
- कैसे कष्ट किया ?
How come ? / what is the purpose of your coming ?
- ऐसी हालत में
Under such circumstance
- मुझसे रहा नहीं गया। / मैं अपने आपको रोक न सका।
I could not restrain myself.
- मैंने सीधे घर पहुँचकर साँस ली। / मैं सीधे घर आकर ही रुका।
I stopped only after reaching home.
- आपने अपने पिता जी की नाक कटवा दी। / आपने अपने पिता जी को अपमानित किया है। आपने अपने पिता जी की बेइज्जती करा दी।
You have put your father to shame.

1.4 संबद्ध शब्द

कवि	: कविता / काव्य	poet	: poem
चित्र	: चित्रकार, चित्रित	painting	: painter, painted
प्रकाशक	: प्रकाशन, प्रकाशित	publisher	: publication, published
लालच	: लालची	greed	: greedy
झूठ	: झूठा	lie	: liar
अपना	: अपनाना / अपनापन	one's own	: to own affinity
दान	: दानी	donation	: donor
कला	: कलाकार, कलाकृति, कलात्मक	art	: artist, art piece, artistic
नौकर	: नौकरी	servant	: service

आरंभ	: आरंभिक	beginning (n) :	beginning (adj.)
नगर	: नागरिक	city	: citizen
भला	: भलाई	good (adj.) :	goodness (n.)
चिंता	: चिंतित	anxiety	: anxious
अधिकार	: अधिकारी	authority	: authority / officer
पूजा	: पुजारी	worship	: worshipper
मित्र	: मित्रता	friend	: friendship

1.5 विलोम शब्द

शब्द	विलोम
सामने आगे }	in front of
बाहर	outside
झूठ	false
नौकर	servant
शुरू आरंभ प्रारंभ }	beginning
मित्र	friend
बनाना	to make
पीछे	in the back
भीतर / अंदर	inside
सच	truth
मालिक	master
अंत	end
शत्रु	foe
बिगाड़ना	to spoil

1.6 शब्द युग्म

विलोम	{ छोटा-बड़ा आकाश-पाताल सुर-असुर	झूठ-सच खरीद-फरोख्त अच्छा-बुरा, ऊँच-नीच	भला-बुरा देव-दानव,
समानार्थी	{ भूल-चूक सोच-समझ सूझ-बूझ	थका-हारा अच्छा-भला जाँच-परख	सीधा-सादा जाँच-पड़ताल

भाग-ख : साक्षात्कार

2.0 साक्षात्कार

इस पाठ में आप डॉ. रणवीर रांग्रा द्वारा श्री हरिवंशराय बच्चन से लिया गया साक्षात्कार पढ़ेंगे।

2.1 आधार पाठ

कविवर हरिवंशराय बच्चन

- डॉ. रणवीर रांग्रा

कविवर हरिवंशराय बच्चन चले गए और उनके साथ ही चला गया हिंदी की 'छायावाद काल' के बाद की एक विशेष प्रकार की लोकप्रिय कविता का युग। उनके निधन का समाचार पाकर हिंदी-जगत ही नहीं पूरा साहित्य-संसार शोक में डूब गया और मुझे बार-बार उनकी यह कविता याद आ रही है - 'तीर पर कैसे रुकूँ मैं, आज लहरों में निमंत्रण'। लगा कि भीतर और बाहर ठाठ मार रहे सागर की लहरों का महानिमंत्रण स्वीकार करके वे काव्य-ब्रह्म में लीन हो गए और व्यष्टि की सभी सीमाएँ लांघकर समष्टि में समा गए।

- (1) बच्चन जी हिंदी-कविता में नया ही रंग लेकर आए। उनके साथ मस्ती का एक आलम था। जब वे जवानी की उमंग में अपने सुललित कंठ से 'मधुशाला' को सस्वर सुनाते तो समाँ बँध जाता, श्रोताओं के झुंड झूम उठते। युवक ही नहीं, बड़े-बूढ़े भी आपा खो बैठते। 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' का कवि यौवन के ज्वार का कवि था, सुखी जीवन के उल्लास का कवि था। तभी तो वह कह सका, "है आज भरा जीवन मुझमें। है आज भरी मेरी गागर।"
- (2) फिर जीवन ने पलटा खाया। अनभ्र वज्रपात हुआ। जीवन के स्वर्णिम प्रभात पर अवसाद की काली घटाएँ घिर आईं। वसंत-सेवित सपनों का उद्यान उजड़ गया। कवि का हृदय क्रंदन कर उठा, पहली पत्नी के असामयिक निधन पर - "रह गया मैं और आधी रात, आधी बात।" उसकी समझ में नहीं आता था कि "अगणित अवसादों के क्षण हैं, रजनी की सूनी घड़ियों को किन-किन से आबाद करूँ?" नियति ने निर्मम होकर उसकी अग्निपरीक्षा ली। उसके सत्य और सपनों के संसार को भस्म कर दिया। डूबे हुए दिल से, क्षीणतर होते हुए स्वर में उसने एक दिन यहाँ तक कह डाला, "आओ, सो जाएँ, मर जाएँ।"
- (3) अपने जीवन-काल में ही बच्चन जी को जितने पाठक और श्रोता मिले हैं उतने शायद ही किसी अन्य कवि को मिले हों। उनकी रचनाओं के पंद्रह से अधिक संस्करण निकल चुके हैं। पर उनके अधिकांश पाठकों को कवि का अलमस्त रूप ही अभिभूत किए हुए है। उनके निकट बच्चन जी आज भी 'मधुशाला' और 'मधुबाला' के मदमस्त कवि हैं, यौवन की बहार के कवि हैं। हाँ, ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो बच्चन जी के अवसाद के भी साक्षी रहे हैं, जिन्होंने उनके 'निशा-निमंत्रण' को पहचाना है, 'एकांत-संगीत' को दत्तचित्त होकर सुना है, 'आकुल अंतर' के तूफान को महसूस किया है और जो उनके गहन अवसाद में उनके साथ डूबे-उतराए हैं, उनके निपट एकाकीपन के साझी रहे हैं।
- (4) बच्चन जी को निकट से देखने-समझने का अवसर मुझे सन् 1965 में मिला जब अपनी 'साहित्यिकी' नामक संस्था के एक त्रिदिवसीय सेमिनार में पढ़े गए लेखों के आधार पर मैं एक पुस्तक 'साहित्य : साधना और संघर्ष' का संपादन कर रहा था। उनमें जैनेंद्र, अजेय, सियारामशरण गुप्त, नरेंद्र शर्मा, प्रभाकर माचवे, भारतभूषण अग्रवाल, नगेंद्र, विजयेंद्र स्नातक,

विष्णु प्रभाकर प्रभृति दिल्ली के कई दिग्गज लेखकों की रचनाएँ जा रही थीं। तब तक बच्चन जी भी यहाँ आ चुके थे। मैंने सोचा, उन्हें भी तो इसमें होना चाहिए। पर हों कैसे, पुस्तक तो तैयार होकर प्रेस में भेजी जा चुकी थी। एकाएक विचार आया कि इसकी भूमिका बच्चन जी लिख दें तो बढ़िया रहे। इसी आशय से मैं उनसे मिला। पुस्तक की डमी अपने साथ ले गया था। मेरा अनुरोध सुनकर उन्होंने हामी तो भर ली, पर इस शर्त के साथ कि डमी को पढ़कर ही वे अंतिम निर्णय करेंगे। मैं डमी उनके पास छोड़ आया। दो-चार दिनों में ही उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी तो मैंने उनसे अनुरोध किया कि प्रेस शोर मचा रहा है, इसलिए सप्ताह-भर में भूमिका लिख दें।

- (5) बच्चन जी ने मेरे अनुरोध की रक्षा की और एक सप्ताह के भीतर ही पुस्तक की भूमिका लिख दी तथा फोन पर बता भी दिया कि मैं उसे ले लूँ। मैं उनसे ले आया और घर पहुँचकर खड़े-खड़े ही उसे पढ़ डाला। भूमिका बहुत अच्छी थी, पर उसका आरंभ थोड़ा विषयेतर लगा। पुस्तक तो उसी से शुरू होनी थी, इसलिए संपादक के नाते मुझे कुछ चिंता हुई। अगले दिन उसे आराम से फिर पढ़ा तो लगा कि दूसरे पृष्ठ के अंतिम पैरे में वह विषय से पूरी तरह जुड़ गई है। इतने कम समय में इतनी अच्छी भूमिका लिख देने के लिए अगले दिन बच्चन जी के प्रति आभार व्यक्त किया और उसे वांछित स्थल से आरंभ करने के लिए उनकी अनुमति मांगी तो वे उदारतापूर्वक बोले “आपको सौंप देने के बाद यह आपकी हो गई। आपको जैसा उचित लगे कर लें।” इस तरह बच्चन जी की भूमिका के साथ वह पुस्तक छप गई। उसे देखकर वे प्रसन्न हुए।
- (6) धीरे-धीरे उनका सान्निध्य घनिष्ठ होता गया। उनकी काव्य कृतियाँ तो मैं पहले ही पढ़ चुका था। इधर उनकी आत्मकथा भी तीन खंडों में प्रकाशित हुई – ‘क्या भूलूँ क्या याद करूँ’, ‘नीड़ का निर्माण फिर’ और ‘बसेरे से दूर’। यह आत्मकथा अपनी रोचकता में बेजोड़ है और कवि के अंतरंग की निर्मम झाँकी प्रस्तुत करती है। एक दिन उनके साथ उनके साहित्य पर बातचीत की इच्छा की तो वे सहर्ष राजी हो गए। फिर उनके साथ मेरे दो लंबे साक्षात्कार हुए- ‘तीर पर कैसे रुकूँ मैं, आज लहरों में निमंत्रण?’ और ‘जीवन का सत्य बनाम शब्द का सत्य’ जो बाद में मेरी पुस्तक ‘हिंदी साहित्यकारों से साक्षात्कार’ में संकलित हुए।
- (7) यहाँ केवल एक-दो मुद्दों का उल्लेख पर्याप्त होगा। बच्चन जी के बाद के काव्य-संग्रहों में जो भारी-भरकम भूमिकाएँ आई हैं उनकी सार्थकता के प्रति अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए मैंने कहा, “अपनी कविता की आत्मनिर्भरता पर आपको सदा विश्वास रहा है और आपने अपनी काव्यकृतियों को बिना भूमिका के पाठकों के सम्मुख रखा है। पर इधर कुछ वर्षों से आपकी रचनाओं के साथ लंबी-लंबी भूमिकाएँ निकलने लगी हैं, यहाँ तक कि जो कृतियाँ पाँच-छह संस्करणों तक किसी भूमिका के बिना पढ़ी और समझी जाती रही हैं उनके नए संस्करण के साथ भी आपने व्याख्यात्मक अग्रलेख जोड़ दिए हैं। क्या अब आपको ऐसा लगता है कि आपका मंतव्य पाठकों तक अविकल रूप में नहीं पहुँचा जो आपने अपनी ओर से व्याख्या प्रस्तुत करने की आवश्यकता महसूस की ?”
- (8) वे बोले, “मैं मानता हूँ कि कविता में यह क्षमता होनी चाहिए कि वह अपने पाठकों के साथ सीधा संबंध बना सके। बीच में किसी वक्तव्य-व्याख्या की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। मेरी कविताओं ने, जैसा कि आपने भी माना है, प्रायः अपने में यह क्षमता सिद्ध की है। बाद के संस्करणों में मेरी ओर से भूमिकाएँ न भी दी जातीं तो कविताओं को समझने में कोई बाधा

न उपस्थित होती, ऐसा मैं मानता हूँ। परन्तु सौभाग्य या दुर्भाग्य से मेरे पाठक मेरी कविता में रुचि लेने के साथ मुझमें रुचि लेना आरंभ कर देते हैं। बहुत-से मुझे व्यक्तिगत पत्र लिखते हैं। बहुतों की जिज्ञासाएँ कविता के विभिन्न पक्षों पर होती हैं। कभी-कभी मैंने ऐसा भी अनुभव किया है कि कविताओं के विषय में बिल्कुल मौन रहकर मैंने अपने पाठकों की कल्पना पर जोर डाला है। आखिर सभी पाठक तो एक ही श्रेणी के नहीं होते। जहाँ तक संभव होता है, मैं अपने पाठकों का समाधान करता हूँ, पत्रोत्तर देकर। बाद के संस्करणों की भूमिकाओं में मैंने प्रायः उन्हीं प्रश्नों पर प्रकाश डाला है, जिनके विषय में मेरे पाठकों की जिज्ञासाएँ रही हैं।

- (9) “एक बात और, पहले मैं अपने पाठकों के संपर्क में अधिक आता था। आपस में कही-सुनी बातें दूर-दूर तक पहुँच जाती थीं। अब यह संभव नहीं हो पाता। इस कारण मैं अपनी भूमिकाओं में ‘अपने पाठकों से’ के अंतर्गत कुछ बातें कर लेता हूँ। उन्हें ठीक परिवेश में रख देता हूँ, वे कविताएँ पढ़ें और समझें। अपनी भूमिकाओं में मैंने वक्तव्य जैसा कोई काम नहीं किया है।”
- (10) चर्चा के दौरान एक प्रश्न मैंने उनके काव्य में उत्तरोत्तर बढ़ती बौद्धिकता के बारे में भी किया, “गीत आपके काव्य का प्राण रहा है। ‘मधुशाला’, ‘मधुबाला’ और ‘मधुकलश’ के गीतों का उल्लास तथा ‘निशा-निमंत्रण’, ‘एकांत संगीत’ और ‘आकुल अंतर’ के गीतों का अवसाद पाठक के मन और प्राण में बसता चला जाता है और वह आत्मविभोर हो उठता है, पर आपकी बाद की रचनाओं से लगता है कि आप गीत से दूर हटते जा रहे हैं। यह परिवर्तन क्या इस बात का द्योतक नहीं कि आपकी जीवन-सरिता चकरीली-पथरीली घाटियों से निकलकर उथल-पुथलविहीन समतल भूमि में आकर अब शांत हो गई है और आपकी अनुभूति की नौक अब इतनी तीखी नहीं रही कि गीत के रूप में फूट निकले ? ‘आकुल अंतर’ में आप ही ने तो कहा था – “भावनाओं का मधुर आधार साँसों से विनिर्मित / गीत कवि-उर का नहीं उपहार, उसकी विकलता है।”
- (11) बड़े सहज भाव से बच्चन जी बोले, “गीत भावजगत् की वाणी है। मनुष्य की भावनाएँ जब तीव्र होती हैं तब वह लयमय हो जाता है। तीव्र भावनाओं को झेलना कठिन होता है। लय उसके झेलने में सहायक होती है। प्रकृति विचलित, व्याकुल मनुष्य को लय में रख देती है, जैसे माँ रोते हुए बच्चे को पालने में डाल देती है – प्रकृति हमारी माँ है न। वह एक लय में टहलने लगता है। भीतर एक ही प्रकार की बातें बार-बार उठने लगती हैं, वे ही लय में आती चली जाती हैं और फिर-फिर आती हैं, और उस लय से मनुष्य शांत हो जाता है। यदि उसकी अभिव्यक्ति शब्द में की जाए तो वह स्वाभाविक ही गीत का रूप ले लेती है।
- (12) “मैंने अपनी तीव्रतम भावनाओं की अभिव्यक्ति गीतों में की है। पर अवस्था के साथ भावों का आवेश घटता है। यौवन में आदमी भावों के साथ जितना बहता है, उतना प्रौढ़ होने पर नहीं। कवि भी जीवन के क्रम को कैसे बदलेगा, उसे तो जीवन के क्रम को समझना है। ऐसा होता ही है। उस पर समालोचक या कवि को सिर धुनने से कोई लाभ न होगा। गीत ही लिखते जाने का आग्रह मेरा कभी नहीं रहा। कभी वह मेरी चेतना से सहसा झड़ गया। मुझे जो कहना था, वह मैं दूसरी तरह से कहने लगा। जीवन की कोई स्थिति-परिस्थिति मुझे फिर भावविह्वल कर सके तो संभव है मैं फिर गीत लिखने लगूँ।”
- (13) इस तरह बच्चन जी से जब भी मुलाकात होती, उनके अपने साहित्य पर या किसी अन्य साहित्यिक विषय पर गहरी बातचीत चल निकलती। वे जब बात करते तो खुलकर बोलते, अपने भीतर की गहराइयों में उतरते हुए। इन चर्चाओं का एक परिणाम यह निकला कि मैं उनके निकट

से निकटतर होता गया। यदि उनसे मिले कुछ अरसा बीत जाता तो वे इसका उलाहना दे डालते और जल्दी मिलने को कहते। वे शायद मेरे संकोच को भाँप गए थे। सत्ता से हट जाने के बाद इंदिरा गांधी, विलिंगटन क्रिसेंट पर बच्चन जी की बगल वाली कोठी में रहने लगी थीं। उनके मिलने वालों की भीड़ लगी रहती थी जिसमें सभी तरह के लोग होते थे। उनकी कोठी पर कड़ा पहरा रहता था, इसलिए लोग बच्चन जी की कोठी के आगे भी मंडराते रहते थे। अतः अमिताभ जी को उनकी सुरक्षा की चिंता हुई और उन्होंने अपनी कोठी के आगे भी पहरा बिठा दिया। जब मैंने बच्चन जी को बताया कि अब उनसे मिलने में संकोच होने लगा है तो उन्होंने यह सारी बात बताई और साथ ही यह भी जोड़ दिया, “पर इसकी चिंता आपको क्यों होनी चाहिए ? जब भी आपका इधर आने का मन हो, आप मुझे फोन पर दिन और समय बता दें। आपको कोई असुविधा नहीं होगी।”

- (14) अगली बार जब मैं उनसे मिलने गया तो इसी प्रक्रिया का पालन किया। ज्योंही मैं उनकी कोठी में प्रवेश-द्वार पर पहुँचा, बच्चन जी सामने बरामदे में खड़े दिखे। मुझे आया देख उन्होंने दरबान को इशारा किया और उसने मेरे लिए द्वार खोल दिया। बैठते ही उन्होंने कहा, “रांगा जी, पिछले सप्ताह आपके नाम का एक पत्र मेरे पते पर आया था; पता नहीं कैसे ? मैंने उसे आपके पते पर ‘रिडायरेक्ट’ कर दिया था। मिल गया होगा।” उत्तर में मैंने कहा, “जी हाँ, मिल गया था। धन्यवाद !” उस पत्र का रहस्य उन्हें बताते-बताते रुक गया, न जाने क्यों, शायद संकोचवश। उन्हें अपनी मूर्खता क्या बताता। हुआ यों कि वह अंतर्देशीय पत्र मैंने अपने आशुलिपिक से बच्चन जी के लिए लिखवाया था। पत्र तो उसने ठीक टंकित कर दिया था और उसे पढ़कर उस पर मैंने हस्ताक्षर भी कर दिए थे, पर प्रमादवश मैंने पता नहीं जाँचा था। बस, वहीं मात खा गया। उसने पता तो बच्चन जी का ही लिखा था, पर बेध्यानी में उसके ऊपर मेरा नाम लिख दिया। इस तरह मेरा पत्र अपने पते पर पाकर बच्चन जी निश्चय ही हैरान हुए होंगे। पर उनके द्वारा ‘रिडायरेक्ट’ किया गया पत्र जब मुझे मिला तो उस पर उनका हस्तलेख देख मेरी हैरानी-परेशानी का ठिकाना न रहा, और अपने प्रमाद पर खूब तरस आया।
- (15) बातचीत शुरू हुई तो चलते-चलते उनकी आत्मकथा पर आ टिकी, जिसके तब तक तीन भाग निकल चुके थे। उसे पढ़ते समय मेरे मन में कई जिज्ञासाएँ उमड़-धुमड़ पड़ी थीं। बच्चन जी की कविता तो वैसे ही आत्मकथा-संस्कारी है। इसलिए वह कवि को आत्म-साक्षात्कार का अधिक अवसर देती है और पाठक को उसके माध्यम से कवि की तत्कालीन मनोभूमि में झाँकने का। अतः मैंने उनसे पूछा, “कविता-जैसे विश्वसनीय माध्यम को अपनाने के बाद आपकी आत्मकथा-लेखन के पीछे क्या मजबूरी रही है ? ‘नीड़ का निर्माण फिर’ में तो आपने स्वयं यह स्वीकारा है कि कविता जो काम कर चुकी है, गद्य जब उसे करना चाहता है तो उसके हाथ-पाँव फूलने लगते हैं।”
- (16) प्रश्न की गहराइयों में उतरते हुए वे बोले, “कविता लिखने का मतलब ही यह होता है कि व्यक्तिगत जो बातें हैं उन्हें उसमें से हटाना, यानी वैयक्तिक भावनाओं को खूब छानना ताकि वे इतनी सूक्ष्म हो जाएँ कि मानवमात्र की बातें मालूम हों, बच्चन की अपनी बातें मालूम न हों। अगर कविता में मैं वे बातें लिखता जो व्यक्तिगत या पर्सनल हैं, तो शायद मेरी कविता की इतनी ज्यादा अपील नहीं होती। मेरे दुख-सुख-संघर्ष में आप क्यों ‘इंटेरेस्ट’ लेंगे ? हजारों आदमियों के अपने दुख-सुख-संघर्ष हैं और वे शायद उन्हें लिख भी सकते हैं, पर उनके लिखने

में और एक कवि के लिखने में अंतर है। सबसे बड़ा अंतर यही है कि जब साधारण आदमी अपना दुख-सुख कहता है तो अपनी निजी बात कहता है, अपनी पर्सनल बात कहता है; लेकिन कवि जब कहता है तो अपने को मानवता का एक मीडियम बनाकर कहता है। इसलिए उसकी कविता दूसरे को अपील करती है। उदाहरण के लिए 'निशा-निमंत्रण' में मेरी बहुत-सी निजी भावनाएँ हैं। उसके तो दस 'एडिशन' हुए हैं। पॉकेट बुक्स के एडिशन अलग हुए हैं। मेरा खयाल है, कम से कम एक लाख आदमियों ने 'निशा-निमंत्रण' को पढ़ा होगा। लेकिन लाख आदमी मेरी-जैसी वेदना से गुजरें हों, इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। इसलिए एक लाख आदमियों ने उसे पढ़ा और उसके साथ अपने को 'आईडेंटिफाई' किया, क्योंकि वह मेरी पर्सनल बात होकर व्यक्त नहीं हुई थी, 'इंपर्सनल' हो गई थी। 'इंपर्सनल' हुए बिना कविता हो ही नहीं सकती।

- (17) "इसलिए मुझे जरूरत महसूस हुई कि जहाँ मुझे पर्सनल बात कहनी है उसके लिए एक दूसरा माध्यम लूँ। मेरे बहुत-से पाठकों ने लिखा है कि आपकी कविता के पीछे जो पृष्ठभूमि है उसका पता हमें आपकी आत्मकथा से लगा। 'मधुशाला' ने तो एक गलत पिक्चर लोगों के सामने रखी थी। पर तब किन-किन परिस्थितियों से मैं गुजर चुका था, यह बात आत्मकथा के पहले भाग 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के लिखने के बाद ही प्रकट हुई है। इसलिए मैं समझता हूँ कि कविता में अपने भावों को व्यक्त करने के बाद भी कुछ ऐसी बातें रह गई थीं जो मैं केवल गद्य के माध्यम से ही व्यक्त कर सकता था। उनकी कल्पना मेरी कविता पढ़ने के बाद शायद कोई दूसरा आदमी नहीं कर सकता। इन बातों को अगर कवि न बताए तो दूसरे लोग, और समालोचक भी, उसको 'प्रोब' करते रहते हैं। कविता में जब कवि का व्यक्तित्व बोलने लगता है तो उसकी कविता को पूरी तरह समझने के लिए आवश्यक हो जाता है कि उसके निजी जीवन की भी खोज की जाए। मेरी आत्मकथा उसी आवश्यकता की पूर्ति करती है।"
- (18) आत्मकथा लिखना बहुत ही कठिन कार्य है। इसमें तटस्थ रहने की लाख चेष्टा के बावजूद लेखक पक्षधरता के आरोप से बच नहीं सकता। ऐसे ही एक आक्षेप की चर्चा करते हुए मैंने कहा, "अपनी आत्मकथा में आपने अपने को कहीं नहीं बखशा है। उसके कई प्रसंग – यथा, कर्कल-चंपा-आप, श्रीकृष्ण-रानी-आप और मुक्त-श्यामा आप-आपके बेबाक चित्रण के गवाह हैं, पर अपने को जानकार मानने वाले कुछ लोगों की शिकायत है कि इसमें तेजी जी के साथ पक्षपात हुआ है – वे मानवी नहीं, देवी के रूप में चित्रित हुई हैं। इसे आप तेजी जी के प्रति उनकी मात्र ईर्ष्या मानेंगे या कुछ और?"
- (19) मानव-स्वभाव की एक कमजोरी की ओर इशारा करते हुए बच्चन जी बोले, "मनुष्य-जीवन इतना अपूर्ण है कि अपूर्णता के प्रति हम जल्दी विश्वास कर लेते हैं। हमारे अंदर खुद ही इतनी कमजोरियाँ होती हैं – अच्छा है, कमजोरियाँ होती हैं और हम ज्यादा 'ह्यूमन' होते हैं कि जहाँ भी कमजोरियों का जिक्र आता है हम उसे बहुत जल्दी मान लेते हैं। अगर मैं अपनी बुराइयों का जिक्र करूँ तो आप जल्दी मान लेंगे। दूसरा कोई मेरी बुराई करे तो भी आप बड़ी जल्दी मान लेंगे। अगर कोई मेरी अच्छाई आपसे वर्णन करे तो आपके मन में संदेह होगा कि कहीं बच्चन जी का चमचा तो नहीं है या उनका अपना होने के कारण उनके साथ पक्षपात तो नहीं कर रहा। लेकिन जीवन में अपूर्णताएँ ही अपूर्णताएँ नहीं हैं, कमजोरियाँ ही कमजोरियाँ नहीं हैं, बहुत-सी ऐसी स्थितियाँ भी हैं और बहुत-से ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनके संपर्क में आने पर जीवन का एक विभूतिमय रूप आपके सामने आता है। अगर हमें अपने जीवन को कमजोर स्थितियों को

दिखाने की आजादी है तो क्या जीवन की ऐसी स्थितियाँ जिनमें एक वैभव है, एक परिपूर्णता है, छिपाने की चीजें हैं ? क्या मुझे उन्हें कहने का अधिकार नहीं है? और अगर कहता हूँ तो क्या बुरा करता हूँ।

- (20) “अब यह बात बहुत पर्सनल हो जाती है, फिर भी कहना चाहूँगा कि मेरे जीवन का जिसे कि आप मोड़ कह सकते हैं, वह मैं तेजी जी के आगमन से ही समझता हूँ। मेरे पहले के जीवन और बाद के जीवन का जो बाह्य रूप है उसे ही देख लें। मुझे और कुछ कहने की जरूरत नहीं। बाहरी रूप को देखकर आप अपने परिणाम स्वयं ही निकाल लें। मैंने तेजी जी के बारे में जितना भी कहा है वह बड़े संयम और नियंत्रण के साथ कहा है और मैं समझता हूँ कि तेजी जी के प्रति मैंने पूर्ण न्याय नहीं किया है। इस रूप के निर्माण में उनकी प्रेरणा, उनके साथ का योगदान है। इसलिए उनका जो बाह्यरूप है उसे ही देखने को कहता हूँ। जो अंदर का रूप है वह तो आप शायद न समझ सकें और वह समझने को है भी नहीं। उनका एक पत्नी का रूप है। दूसरा माँ का रूप है। मैं तो उनके संघर्ष में, अपने सृजन के संसार में, इतना व्यस्त रहा कि मैं शायद अपने बच्चों का संस्कार नहीं कर पाया। दूर से कोई छाया पड़ती हो तो उनके नजदीक जाने का मैंने प्रयास नहीं किया। लेकिन बच्चों को समझने का, उनके निर्देशन का और उन्हें बनाने का सारा श्रेय तेजी जी को है। ‘बसेरे से दूर’ में तो मैं पूरी बात लिख ही नहीं सका। मेरे बच्चे इन बातों को लिखेंगे। अगर अमिताभ ने कभी अपना जीवन-चरित्र लिखा तो शायद वह बता सकेगा कि ‘व्हाट ए मदर शी हैज बीन’। नारी की सबसे बड़ी परख मातृत्व की कसौटी पर ही होती है।”
- (21) बच्चन जी ने बाहर लॉन में कुर्सियाँ डलवा ली थीं, हम दोनों वहीं बैठे बतिया रहे थे और विषय की परत-दर-परत उतारने में खोए हुए थे। तभी कोठी के भीतर एक कार घुस आई। देखा, उसमें से तेजी जी उतरिं और हमें वहाँ बैठा देखकर उधर ही चली आईं। उनके हाथ में पूजा की थाली थी। उस दिन मंगलवार था और वे मंदिर से आ रही थीं। आते ही उन्होंने बच्चन जी के पाँव छुए और प्रसाद में मिला पुष्पहार पहनाकर उन्हें टीका लगाया और लड्डू भेंट किया। मुझे भी लड्डू का प्रसाद खिलाया। फिर मेरा हाल-चाल पूछकर हमें बातें करते छोड़ भीतर चली गईं। उनके जाने के बाद बच्चन जी बोले, “हम इन्हीं की बात कर रहे थे और वे स्वयं ही चली आईं। आपने स्वयं ही देख लिया। मेरे कहने को कुछ रहा ही नहीं।” उस दिन वे मूड में थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे मेरे लिए ‘मधुशाला’ की दो रुबाइयाँ सस्वर टेप करा दें। थोड़ी ना-नुकर के बाद वे तैयार हो गए, पर इस शर्त के साथ कि पहले अपनी एक इधर की कविता ‘तुम्हारे नील झील-से नयन / नीर निर्झर से लहरे केश’ सुनाएँगे। उनकी शर्त सुनकर मुझे और खुशी हुई। पहले उन्होंने अपनी आत्मकथा ‘बसेरे से दूर’ में से अपनी वह कविता सस्वर सुनाई और फिर ‘मधुशाला’ से अपनी दो रुबाइयाँ गाकर सुनाईं। मैंने उन दोनों को टेप कर लिया, और इस तरह वह स्वर-संध्या मेरे लिए अविस्मरणीय बन गई।
- (22) राज्यसभा के अपने कार्यकाल की समाप्ति पर बच्चन जी गुलमोहर पार्क-स्थित अपनी कोठी में चले गए। पर वहाँ पर पहरा इतना सख्त था कि साल में बस एक बार, उनके जन्मदिवस पर ही, उनसे मिलना हो पाता। इस प्रकार वे अपने प्रेमियों और प्रशंसकों से दूर होते गए और यह स्थिति कवि और उसके ‘फैन्ज’ के लिए असहज बनती गई। वहाँ भी वे अधिक नहीं रहे और फिर अमिताभ जी के पास बंबई (अब मुंबई) चले गए। जहाँ से उनकी खबर पाना उत्तरोत्तर कठिन होता गया।

- (23) एक बार मैं सरकारी काम से बंबई गया हुआ था। उन दिनों दिल्ली में उड़ती-उड़ती खबर आई थी कि बच्चन जी कुछ अस्वस्थ हैं। मन में आया कि उनसे मिला जाए। उन्हें फोन पर बताया कि उन दिनों वहीं हूँ और मिलना चाहता हूँ। वे बोले, “तो फिर सोचते क्या हैं ? चले आइए।” दिन और समय तभी तय हो गया और उन्होंने अपना पता अच्छी तरह समझा दिया। उस समय प्रतिभा बिटिया भी मेरे साथ थी। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के जीसस एंड मेरी कॉलेज में पढ़ने लगी थी। मेरे बच्चे बचपन से ही बच्चन जी पर मुग्ध थे। लिफाफे पर उनका सुलेख देखकर ही वे समझ जाते कि पत्र बच्चन जी का है और नीचे बाएँ कोने में उनके हस्ताक्षर ‘बच्चन’ देखकर खुशी से उछल पड़ते, क्योंकि उन्हें वह अंग्रेजी के शब्द ‘गुड’ जैसे लगते थे। पत्रोत्तर देने में बच्चन जी उदार थे और चुस्त भी, अपने समवयस्क महादेवी वर्मा और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के एकदम विपरीत, जो उत्तर देने में बेहद कंजूस थे। ये तीनों साहित्यकार सन् 1907 में जन्मे थे।
- (24) नियत समय पर हम अमिताभ जी के जुहू पार्क स्कीम वाले बंगले ‘प्रतीक्षा’ पर पहुँच गए। द्वार पर कड़ा पहरा था। हमारे पहुँचते ही एक दरबान ने हमारी तरफ देखे बिना पूछा, “किससे मिलना है?” वह बैठा कुछ पर्चियाँ छाँट रहा था। मैंने कहा, “भइया, जरा उठकर और आँख मिलाकर पूछेंगे तो जरूर बताएँगे कि किनसे मिलना है।” यह सुनकर वह खड़ा हो गया और उसने अपना प्रश्न दोहराया। मैंने बताया, “हम दिल्ली से आए हैं। हमें अमिताभ से नहीं, उनके पिता जी डॉ॰ बच्चन से मिलना है। वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।” उसने एक खाली पर्ची आगे बढ़ाई, उस पर मैंने अपना नाम लिख दिया। वह पर्ची लेकर फुर्ती से अंदर चला गया और तभी भीतर से बच्चन जी की आवाज आई, “रांगा जी, आइए।” उनसे मिलकर पाया कि सामान्यतः वे ठीक दिख रहे हैं। हाँ, कुछ कमजोर जरूर लग रहे हैं। बैठते ही बातें शुरू हो गईं। उन्होंने मेरी पूछी और अपनी बताई। बीच में जलपान आया, पर बातों का सिलसिला चलता रहा। बच्चन जी से मिलने का अपना ही आनंद है। भावों के हिलोरो पर झूलते दो घंटे बीत गए, पता ही नहीं चला। घड़ी की तरफ ध्यान गया तो उनके स्वास्थ्य के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए उनसे विदा ली।
- (25) उसके बाद बच्चन जी से दिल्ली में ही मुलाकात हुई एक सेमिनार में, जिसकी अध्यक्षता वे कर रहे थे। यह सेमिनार गार्गी गुप्त ने अपनी संस्था ‘अनुवाद परिषद्’ के वार्षिक अधिवेशन पर रखा था अनुवाद प्रक्रिया के विविध पक्षों को लेकर। उसमें मुझे भी अपना आलेख ‘काव्यानुवाद की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ’ पढ़ना था। मंच पर मैं बच्चन जी की बगल में बैठा था। वे बड़े स्नेह से मिले थे और धीरे-धीरे बोल रहे थे। पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें बोलने में दिक्कत होती है और डॉक्टरों ने उन्हें कम बोलने को कह रखा है। उस दिन उन्हें सुनने के लिए हॉल खचाखच भरा हुआ था। पर वे बोल नहीं पाए, अपनी मजबूरी बताते हुए उन्होंने प्रेमियों की अपार भीड़ से क्षमा माँग ली।
- (26) बच्चन जी से दिल्ली में मिलने का कालांतर में एक और अवसर आया जब उन्हें ‘सरस्वती सम्मान’ मिलने की घोषणा हुई। उनके प्रशंसक बड़ी बेताबी से उनकी प्रतीक्षा करने लगे। पुरस्कार-अर्पण समारोह में वे भारी संख्या में पहुँचे। पर जब मंच से घोषणा हुई कि अस्वस्थ होने के कारण बच्चन जी आ नहीं पाए तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। उनकी अनुपस्थिति में उनका पुरस्कार उनके सुपुत्र अमिताभ जी ने ग्रहण किया। समारोह की समाप्ति पर लोग भारी

मन से विदा हुए, बच्चन जी के स्वास्थ्य-लाभ की कामना करते हुए। उनकी लंबी बीमारी के बारे में और कभी-कभी गंभीर स्थिति के बारे में भी खबरें मिलती रहती थीं। कभी लगता कि इनकी तबीयत संभल रही है। अचानक 18 जनवरी, 2003 को उनके निधन का समाचार मिला तो समूचा साहित्य-जगत स्तब्ध रह गया, क्योंकि उनके प्रशंसक उम्मीद करने लगे थे कि वे शायद 27 जनवरी, 2007 तक जीवित रहकर अपने जीवन की शताब्दी स्वयं मना सकेंगे पर ऐसा संभव नहीं हुआ और उनका देहावसान हो गया। मात्र देहावसान। फिर भी मुझे लगता है कि उनकी कविताएँ और अन्य कृतियाँ अपनी गुणवत्ता के बल पर सहस्राब्दियों तक जीवित रहेंगी। यहाँ मैं उनकी कृतियों में सुपुत्र अमिताभ बच्चन, सुपौत्र अभिषेक बच्चन या सुपुत्रवधु जयाभादुड़ी को शामिल नहीं कर रहा, क्योंकि उन सबका अपना अलग व्यक्तित्व है। पर यदि कोई प्रशंसक चाहे तो उन्हें भी बच्चन जी की विशिष्ट कृतियाँ मान सकता है।

– (डॉ० रणवीर रांग्रा की पुस्तक 'साहित्यिक साक्षात्कार' से साभार)

2.2 शब्दावली

शब्द	अर्थ
पैरा (1)	
रंग (पु०)	colour
उमंग (स्त्री०)	उत्साह zeal
सुललित (विशे०)	सुंदर, मोहक melodious
सस्वर (क्रि०वि०)	लय और तान में, स्वर के साथ in tune
समा बँध जाना (पु०)	वातावरण एकरस हो जाना / आनंदमय हो जाना
आपा खोना (मुहा०)	अपने आप को भूल जाना
ज्वार (पु०)	उफान, ऊपर चढ़ना tide
उल्लास (पु०)	खुशी (स्त्री०), आनंद (पु०), प्रसन्नता (स्त्री०) happiness
गागर (स्त्री०)	घड़ा (पु०), गगरी (स्त्री०), मटका (पु०) Pitcher, earthen water jar

पैरा (2)

पलटा खाना (मुहा०)	उलट जाना reversed
अनभ्र (विशे०)	बिना बादल के, साफ आकाश cloudless
वज्रपात (पु०)	बिजली का गिरना, बड़ी विपत्ति का आना calamity
स्वर्णिम (विशे०)	सुनहरा, सोने के रंग का golden

शब्द

प्रभात (पु०)
उद्यान (पु०)
क्रंदन करना (सक० क्रि०)
असामयिक (विशे०)
निधन (पु०)
अगणित (विशे०)

उन्माद (पु०)
अवसाद (पु०)
नियति (स्त्री०)
निर्मम (विशे०)

पैरा (3)

पाठक (पु०)
श्रोता (पु०)
अलमस्त (विशे०)
अभिभूत करना (सक० क्रि०)
यौवन (पु०)
बहार (स्त्री०)
दत्तचित्त (विशे०)
तूफान (पु०)
गहन (विशे०)
एकाकीपन (पु०)
साझी (पु०)

पैरा (4)

प्रभृति
दिग्गज (विशे०)

अर्थ

सबेरा, सुबह, प्रातःकाल, morning, the time of sunrise
बाग, बगीचा, उपवन garden
चीखना, दुखी होकर रोना to cry, to lament
समय से पहले immature
मृत्यु (स्त्री०), मौत (स्त्री०), मरण (पु०) death
बहुत अधिक, जिसे गिना नहीं जा सकता innumerable, uncountable
पागलपन madness
दुख (पु०), पीड़ा (स्त्री०), क्लेश (पु०) sorrow
भाग्य (पु०), किस्मत (स्त्री०) fate
जिसमें दया न हो, निर्दय cruel, unkind

पढ़ने वाला reader
सुनने वाला listener
मदमस्त carefree, lost in oneself
मन / सोच पर छा जाना
जवानी (स्त्री०) youth
बसंत (पु०) spring
पूरी तरह मन लगाकर engrossed, deeply concentrated
आंधी (स्त्री०), अंधड़ (पु०) storm
गहरा, गाढ़ा deep, thick
अकेलापन (पु०) aloneness
साथी (पु०) equal participant

इत्यादि, आदि etcetera
बड़े-बड़े great, highly placed

शब्द**अर्थ**

रचना (स्त्री०)

लेख (पु०), साहित्य article, literature

भूमिका (स्त्री०)

अग्रलेख introduction

आशय (पु०)

(i) मतलब (पु०) purpose

(ii) उद्देश्य (पु०) meaning

स्वीकृति (स्त्री०)

मंजूरी, मान लेना acceptance

अनुरोध करना (अक० क्रि०)

अनुनय करना to request

पैरा (5)

विषयेतर (विशे०)

विषयांतर, मूल विषय से हटकर या अलग deviating from the topic or subject matter

आभार व्यक्त करना (सक० क्रि०)

कृतज्ञता ज्ञापन करना to express gratitude

वांछित (विशे०)

इच्छित, चाहा हुआ desired

सौंप देना (सक० क्रि०)

दे देना to hand over, to entrust

उदारतापूर्वक (क्रि० वि०)

खुले दिल से generously, open heartedly

पैरा (6)

सान्निध्य (पु०)

निकटता, साथ होने का भाव nearness, proximity

घनिष्ठ (विशे०)

गाढ़ा, गहरा thick, deep intimate

रोचक (विशे०)

रुचिकर interesting

बेजोड़ (विशे०)

जैसा दूसरा न हो unequalled, unique उस प्रकार का और कोई न हो unparalleled

अंतरंग (विशे०)

अंदर का, हृदय का inner, intimate

झाँकी (स्त्री०)

दृश्य (पु०) scene, tableau

साक्षात्कार (पु०)

परिचर्चा interview

नीड़ (पु०)

घोंसला nest

पैरा (7)

मुद्दा (पु०)

विषय topic, subject

शब्द

पर्याप्त (क्रि० वि०)
जिज्ञासा (स्त्री०)
व्याख्या (स्त्री०)
व्याख्यात्मक (पु०)
मंतव्य (पु०)
अविकल रूप में (विशे०)

अर्थ

काफी enough
जानने की इच्छा curiosity
स्पष्टीकरण, किसी विषय को समझाकर कहना explanation
स्पष्ट / साफ-साफ करने वाला explicit
इच्छित उद्देश्य (पु०) purpose
मूल अर्थ में

पैरा (8)

क्षमता (स्त्री०)
वक्तव्य (पु०)
मौन (विशे०)
समाधान (क्रि० सक०)

शक्ति (स्त्री०), योग्यता (स्त्री०) capability, capacity
कथन (पु०) statement
चुप, शांत silent
सुलझाना to solve (a problem)
शांत करना to satiate (a doubt)

पैरा (9)

संपर्क (पु०)
परिवेश

परस्पर मिलना contact, liaison
वातावरण (पु०) atmosphere

पैरा (10)

चर्चा (स्त्री०)
उत्तरोत्तर (क्रि० वि०)
बौद्धिकता (स्त्री०)
आत्मविभोर (विशे०)
द्योतक (पु०)
उथल-पुथल (पु०)

बहस (स्त्री०), तर्क (पु०), बातचीत (स्त्री०) discussion
एक के बाद एक gradually
बुद्धि से संबंधित intellectuality
अपने आप में खो जाना lost in oneself
संकेत करने वाला, बताने वाला indicator
उल्टा-पुल्टा upheaval

पैरा (11)

भाव जगत (पु०)
लयमय (विशे०)

विचारों की दुनिया the world of feeling
धुन के साथ in tune

शब्द

विचलित (विशे०)

विक्षुब्ध (विशे०)

व्याकुल (विशे०)

अर्थ

moved, disturbed, perturbed

व्याकुल disturbed

आकुल, व्यथित mentally disturbed

पैरा (12)

तीव्र (विशे०)

तीव्रतम (विशे०)

आवेश (पु०)

भावविह्वल

तेज sharp

सबसे अधिक तेज the sharpest

जोश zeal, heat of the moment

भावाभिभूत overwhelmed with feelings

पैरा (13)

अरसा बीत गया (वाक्यांश)

उलाहना (पु०)

काफी समय निकल गया

ताना (पु०) taunt

पैरा (14)

प्रमाद (पु०)

प्रमादवश (क्रि०वि०)

गलती error

गलती से

पैरा (15)

तत्कालीन (वि०)

मनोभूमि (स्त्री०) मनः+भूमि

उस समय का there, then

मन के अंदर

पैरा (16)

तटस्थ (विशे०)

पक्षधर (विशे०)

आक्षेप (पु०)

बेबाक (विशे०)

ईर्ष्या (स्त्री०)

किसी की ओर न होना, किसी एक का पक्ष न लेना neutral

किसी एक की ओर होना on the side of someone

दोष charge

बिना लाग-लपेट के, स्पष्ट, साफ-साफ

जलन, डाह jealousy

शब्द**अर्थ**

पैरा (17)

इशारा करना (सक० कि०)

पक्षपात (पु०)

विभूति (स्त्री०)

जिक्र करना (सक० क्रि०)

संकेत करना to indicate, to show

partiality

ऐश्वर्य, गुण, अच्छाई

के बारे में कहना / बताना to mention

पैरा (18)

संयम (पु०)

अपने आप को रोकना restraint

पैरा (19)

ना-नुकुर (क्रि०वि०)

अविस्मरणीय (विशे०)

नहीं करना, मना करना refuse hesitatingly

जिसे भुलाया न जा सके unforgettable

पैरा (20)

कार्यकाल (पु०)

कार्य की अवधि / कार्य का समय tenure, period

पैरा (21)

तय होना (अक० क्रि०)

उदार (विशे०)

निश्चित हो जाना, पक्का हो जाना

liberal, generous

पैरा (22)

मनोवैज्ञानिक (विशे०)

मन को जानने वाला psychologist

पैरा (23)

कालांतर

बेताब (विशे०)

बेताबी (स्त्री०)

भारी मन से (वाक्यांश)

समय का अंतर lapse of time

उतावला hasty

उतावलापन (पु०) haste

दुखी होकर with a heavy heart

2.3 पर्यायवाची शब्द

शब्द	पर्याय
जवान	युवा
जीवन	जिंदगी
रात	रात्रि, निशा, रजनी
सत्य	सच
काला	कृष्ण
अधिक	ज्यादा, बहुत
डूबना	बूझना
निकट	पास, नजदीक
बढ़िया	उम्दा, अच्छा
वांछित	इच्छित, चाहा हुआ
उचित	ठीक, अच्छा
प्रसन्न	खुश
पर्याप्त	काफी

शब्द	पर्याय
विश्वास	भरोसा
अग्र	आगे
आवश्यक	जरूरी
सौभाग्य	खुशकिस्मती
रुचि	लगाव
पूर्ण	पूरा
बाह्य	बाहरी
पक्ष	(की) ओर
गमन	जाना
सामान्य	साधारण
नियति	भाग्य, किस्मत
उद्यान	बाद, बगीचा

2.4 विलोम शब्द

शब्द	विलोम शब्द
जवान	बूढ़ा
जीवन	मृत्यु, मौत, निधन
रात / रात्रि	दिन, दिवा
सच	झूठ
काला	सफेद, श्वेत
ज्यादा	कम
डूबना	उतराना, तैरना
पास	दूर
बढ़िया	घटिया
वांछित	अवांछित
उचित	अनुचित
प्रसन्न	अप्रसन्न, नाखुश
पर्याप्त	अपर्याप्त

शब्द	विलोम शब्द
सार्थक	निरर्थक
विश्वास	अविश्वास
अग्र	पश्च, पीछे, बाद में
आवश्यक	अनावश्यक
जरूरी	गैरजरूरी
सौभाग्य	दुर्भाग्य, बदकिस्मती
रुचि	अरुचि
स्वाभाविक	अस्वाभाविक
पूर्ण	अपूर्ण, अधूरा
बाह्य, बाहरी	भीतरी, आंतरिक
पक्ष	विपक्ष
सामान्य	असामान्य

2.5 संबद्ध शब्द

रंग	रंगरेज	रंगीन	रंगत
colour	one who colours cloth	colourful	colouring
समय	सामयिक	असामयिक	समसामयिक
time	timely	untimely	contemporary
युवा	युवक	यौवन	युवती
youth	youth	young age	young woman
तूफान	तूफानी		
storm	stormy		
एक	एकाकी	एकाकीपन	
one	alone	lonesomeness / loneliness	
संपादक	संपादन	संपादकीय	
editor	editing	editorial	
रचना	रचनाकार	रचयिता	
composition	one who composes	writer	
उदार	उदारता	उदारतापूर्वक	
generous	generosity	generously	
रुचि	रुचिकर	रोचक	
interest	interesting	interesting	
बुद्धि	बुद्धिमान	बौद्धिक	बौद्धिकता
intelligence	intelligent	intellectual	intellectuality
गहरा	गहराई	-	-
deep	depth	-	-
पक्ष	विपक्ष	पक्षपात	निष्पक्ष
side	opposition	partiality	impartial
परीक्षा	परीक्षक	परीक्षार्थी	
examination	examiner	examinee	
रक्षा	रक्षक	सुरक्षा	
defence	one who defends / protector	protection	

विश्वास	विश्वसनीयता	विश्वसनीय	
faith, reliance	reliability	reliable	
पठन	पाठन	पठनीय	पाठक
reading	teaching	worth reading	reader
प्रकृति	प्राकृतिक	अप्राकृतिक	
nature	natural	unnatural	

2.6 साक्षात्कार : सरल व्याख्या

‘साक्षात्कार’ करते समय डॉ० रांग्रा जी द्वारा बच्चन जी से किए गए पहले प्रश्न को सरल शब्दों में हम यों कहेंगे –

प्रश्न-1 : आप मानते रहे हैं कि कविता आत्मनिर्भर होती है। उसके लिए किसी प्रकार की भूमिका की आवश्यकता नहीं है। आपने पहले किसी काव्यकृति की भूमिका नहीं लिखी। परंतु पिछले कुछ वर्षों में आपकी उन्हीं रचनाओं के बाद के संस्करणों में विशद भूमिका लिखी गई। क्या आप यह सोचने लगे हैं कि आपकी कृतियों के भाव पाठकों तक अभीप्सित रूप में नहीं पहुँच पाए और अपना मंतव्य व्यक्त करने हेतु आपने भूमिका देकर अपनी कृतियाँ प्रकाशित कराई ? (बच्चन जी का उत्तर निम्नलिखित शब्दों में बताया जा सकता है।)

उत्तर : मैं अभी भी मानता हूँ कि कविता में इतनी क्षमता अवश्य होती है कि वह पाठकों से सीधा संबंध स्थापित कर सकती है। इसके लिए ‘भूमिका’ के रूप में किसी बिचौलिए की आवश्यकता नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि बाद के संस्करणों में व्याख्यात्मक भूमिकाएँ क्यों ? मेरा उत्तर है कि पाठकों द्वारा लिखे पत्रों में जो जिज्ञासाएँ उन्होंने मुझे पत्र लिखकर बताई हैं उनका समुचित समाधान करना, उनका निराकरण करना। अधिकांश पाठक कविता का सीधे रसास्वाद कर लेते हैं पर सभी पाठकों की ग्रहण शक्ति एक-सी नहीं होती।

साथ ही पहले पाठकों और मेरे बीच संपर्क के अवसर अधिक थे जो बाद में नहीं रहे। ऐसी स्थिति में भूमिका के माध्यम से पाठकों और मेरा संपर्क हो पाता है।

प्रश्न-2 : गीत आपके काव्य का मूलाधार रहा है। ‘मधुबाला’, ‘मधुशाला’ और ‘मधुकलश’ में गीतों का उल्लास है, ‘निशा-निमंत्रण’, ‘एकांत संगीत’ और ‘आकुल अंतर’ पाठकों को अवसाद से भर देता है। गीत आपके जहन से दूर होता प्रतीत होता है। सोचता हूँ, आपकी अनुभूति का दायरा छोटा हो गया है इसलिए अब गीत प्रस्फुटित नहीं हो रहे हैं। आपने ‘आकुल अंतर’ में कहा है कि “गीत कविवर का उपहार नहीं बल्कि उसकी आकुलता है।” आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर : गीत का जन्म भाव जगत से होता है। भावनाएँ जब तीव्र होती हैं तब वाणी में लय आ जाती है। तीव्र भावनाओं को झेलने में लय सहायक होती है। अभिव्यक्ति गीत का रूप ले लेती है। उम्र या अवस्था के साथ भावों का आवेश घटता है अतएव जीवन क्रम के अनुकूल भावों की तीव्रता कुंठित होती जाती है और मेरे साथ भी यही हुआ।

प्रश्न-3 : कविता जैसे विश्वसनीय माध्यम को दृढ़ता से अपनाने के बाद आपने आत्मकथा जैसे गद्य लेखन को क्यों अपनाया?

उत्तर : कविता का उद्देश्य है व्यक्तिगत भावनाओं को इतना छानकर प्रस्तुत करना कि वह कविता में व्यक्तिगत न प्रतीत होकर मानवमात्र की बातें प्रतीत हों।

यदि मैं कविता में व्यक्तिगत बातें लिखता तो वह कविता लोगों को 'अपील' नहीं करती। उसमें वह प्रभावोत्पादकता नहीं रहती।

सर्व सामान्य को भी जीवन में संघर्ष करना पड़ता है - वह भी अपने सुख-दुख की बातें अभिव्यक्त करता है - वह उसका वैयक्तिक भाव है, पर जब कवि वही बात अभिव्यक्त करता है तो स्वयं को मानव का माध्यम बनाकर अभिव्यक्त करता है। इसलिए कवि की अभिव्यक्ति कविता बनकर प्रभावोत्पादक हो जाती है। व्यक्तिगत न होकर सबकी बात हुए बिना कविता बन ही नहीं सकती।

जब मुझे व्यक्तिगत अर्थात् अपनी बात कहने की इच्छा हुई तब मैंने गद्य को माध्यम बनाया। मेरी आत्मकथा पढ़ने के बाद कुछ पत्र आए जिसमें पाठकों ने यह कहा कि आपकी कविता की पृष्ठभूमि की जानकारी आपकी आत्मकथा से हुई।

कविता में जब कवि का व्यक्तित्व बोलने लगता है तो उसकी कविता को पूरी तरह समझने के लिए उसके निजी जीवन की जानकारी प्राप्त करनी होती है। आत्मकथा इस दिशा में सहायक होती है।

प्रश्न-4 : आत्मकथा में कई प्रसंग बड़े ही स्पष्ट शब्दों में वर्णित हैं - कुछ लोगों का यह मानना है कि तेजी जी (बच्चन जी की पत्नी) के साथ आत्मकथा में पक्षपात हुआ है। संभवतः ये लोग तेजी जी के प्रति ईर्ष्यालु हैं। क्या आपका भी यही ख्याल है?

उत्तर : यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि मनुष्य-जीवन इतना अपूर्ण है कि अपूर्णता के प्रति हम शीघ्र ही विश्वास कर लेते हैं। एक उदाहरण दूँ -

- यदि मैं अपनी कमजोरियों और बुराइयों का जिक्र करूँ तो आप जल्दी से मान लेंगे।
- यदि दूसरा कोई मेरी बुराई करे तब भी आप जल्दी मान लेंगे।
- यदि कोई मेरी तारीफ करे तो लोग सोचने लगेंगे कि यह बच्चन जी का चमचा है या उनका नजदीकी आदमी होने के कारण पक्षपात कर रहा है।

हम यह भी संपूर्णता से क्यों मानें कि जीवन में कमजोरियाँ ही कमजोरियाँ हैं, अधूरापन ही अधूरापन है। कई ऐसे व्यक्तित्व के लोग हैं जिनके संपर्क में आने से जीवन का भव्यरूप सामने आता है। यदि कमजोरियों को दर्शाने की आजादी है तो परिपूर्णता या भव्यता को छिपाने की क्या आवश्यकता है?

मेरे जीवन में जो मोड़ आया वह तेजी जी के आने के बाद आया है। तेजी जी के बारे में मैंने जो लिखा है वह बड़े ही संयम से लिखा है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उनके प्रति मैंने पूर्ण न्याय नहीं किया है।

पाठ-15 : संस्मरण और रेखाचित्र
(तृतीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

भाग-क : संस्मरण

1.0	संस्मरण	82
1.1	आधार पाठ : क्रांति की प्रतिमूर्ति : दुर्गा भाभी	82
1.2	शब्दावली	87
1.3	समानार्थी / पर्यायवाची शब्द	90
1.4	विलोम शब्द	90
1.5	अनेकार्थी शब्द	91
1.6	मुहावरे और कहावतें	92

भाग-ख : रेखाचित्र

2.0	रेखाचित्र	92
2.1	आधार पाठ : निक्की, रोजी और रानी	92
2.2	शब्दावली	97
2.3	समानार्थी / पर्यायवाची शब्द	101
2.4	विलोम शब्द	102
2.5	कुछ उद्धरणों की व्याख्या	103

भाग-क : संस्मरण

1.0 संस्मरण

गद्य की आधुनिक विधाओं में संस्मरण विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत पाठ में आप सुधीर विद्यार्थी द्वारा दुर्गा भाभी पर लिखा संस्मरण पढ़ेंगे।

1.1 आधार पाठ

क्रांति की प्रतिमूर्ति : दुर्गा भाभी

- सुधीर विद्यार्थी

- (1) लखनऊ में पुराने किले पर स्थित मांटेसरी इंटर कॉलेज का अर्थ हमारे लिए पहले-सा नहीं रहा। अभी सात-आठ वर्ष पूर्व तक दुर्गा भाभी के वे कमरे जैसे हमारे आश्रय-स्थल बने हुए थे। हम लखनऊ जाते, तो वहीं ठहरते। एक आकर्षण यह भी था कि वहाँ अक्सर किसी पुराने क्रांतिकारी से भेंट हो जाती और तब हमारा पूरा दिन क्रांति-युग की कहानियों की चर्चा में व्यतीत हो जाता। भाभी अकेली होतीं, तो मैं उनसे ही बतियाता रहता और कई जरूरी काम मुझसे छूट जाते।
- (2) भाभी इन दिनों अपने पुत्र के पास गाजियाबाद चली गई हैं और कॉलेज के उनके निवास में उनके सपनों का 'शहीद स्मारक एवं स्वतंत्रता संग्राम शोध संस्थान' बन गया है, जिसका संचालन पुराने क्रांतिकारी शिव वर्मा कर रहे हैं, लेकिन लखनऊ जाने और पुराने किले के उस कॉलेज में पहुँचने का वह आकर्षण, अब हमारे लिए समाप्त हो गया है। वहाँ जाता हूँ, तो हर पल भाभी की याद आती है। लगता है जैसे कॉलेज की हर दीवार, हर क्यारी और हर फूल-पत्ती पर भाभी का नाम लिखा हो। भाभी की अनुपस्थिति में मेरे लिए वहाँ ठहरना किसी संकट से कम नहीं है। क्या भाभी भी मेरी तरह गाजियाबाद में सारी सुविधाओं और आराम से रहते हुए, अपने कॉलेज की स्मृतियों को सीने में छिपाए नहीं बैठी होंगी? कैसे एक-एक ईंट जोड़कर उन्होंने इस शिक्षा-संस्थान की नींव डाली थी। लखनऊ वे सन् 1940 में आ गई थीं। मॉडल हाउस में जहाँ श्रीयुत मोहनलाल गौतम रहते थे, उस मकान के बीच का हिस्सा उन्होंने किराए पर ले लिया था और केंट रोड पर पाँच बच्चों को लेकर लखनऊ मांटेसरी की स्थापना कर दी थी। धीरे-धीरे स्कूल बढ़ने लगा और जल्दी ही पास की एक बिल्डिंग में स्थान मिल गया। यह स्कूल आज लखनऊ मांटेसरी इंटर कॉलेज के नाम से जाना जाता है। जीवन की संध्या बेला में भाभी अपने इस विद्यालय को योग्य हाथों में सौंपकर उसके भविष्य के प्रति कितनी आश्वस्त हो गई हैं।
- (3) करीब पंद्रह वर्ष पहले इसी कॉलेज के ऑगन में बैठकर भाभी एकाएक मुझसे बोली थीं "यह जो शहीदों की बलिदान अर्धशताब्दी मेरी जिंदगी में आ गई, ये बहुत कष्टदायक रही।" फिर तुरंत ही संभलकर बोलीं—“उनकी मृत्यु तो बहुत अच्छी हुई। वैसी किसे नसीब होगी। अब मेरी एक ही आकांक्षा बाकी है—ये जो हमारे पाँच-छह बड़े-बड़े कमरे हैं न, मैं इन्हें शहीद संग्रहालय का रूप देना चाहती हूँ। मेरी योजना है कि स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित सभी शहीदों और क्रांतिकारियों की बड़ी-बड़ी पेंटिंग्स यहाँ लगा दी जाएँ और उनसे संबंधित समस्त साहित्य भी रहे।”
- (4) फिर कुछ ठहरकर वे अपनी कॉलेज पत्रिका का क्रांतिकथा अंक और दूसरी कुछ चीजें लाकर मुझे थमा देती हैं। कहती हैं—“मैंने ढेरों अखबारों की कतरनें और दूसरी दुर्लभ वस्तुएँ जुटाई हैं। तुम

उन्हें कुछ दिन बैठकर ठीक कर डालो, तो उपयोग हो सकता है। मैं शहीदों और क्रांतिकारियों पर समस्त साहित्य भी यहाँ सुरक्षित कर देना चाहती हूँ, ताकि भविष्य में इतिहास लेखकों और शोध-छात्रों को कोई असुविधा न हो। यह मेरी आकांक्षा है...।”

- (5) अपनी अनेक व्यस्तताओं और परेशानियों के चलते मैं भाभी के इस कार्य में चाहते हुए भी कोई मदद नहीं कर पाया। पर शिव दा, भाभी के सपने को साकार करने के लिए कहाँ-कहाँ नहीं घूमे। बंगाल गए, दिल्ली भागे। हर जगह से सहायता लेकर उन्होंने शहीदों की स्मृतियों को सँजोकर नई पीढ़ी के लिए संस्थान को खड़ा कर दिया। अपनी दोनों संस्थाओं को बढ़ता-फैलता देखकर भाभी के चेहरे पर संतोष की कितनी गहरी रेखाएँ खिंच जाती थीं, इसे मैंने बहुत नजदीक से देखा है।
- (6) जिसने अपनी पूरी जिंदगी देश-सेवा में अर्पित कर दी हो, उसके आदर्शों का मूल्यांकन करना आसान है क्या ? आप मिलें तो मालूम होगा कि इस वृद्धा की आत्मा समाज को कुछ देने के लिए आज भी कितनी बेचैन है। यही बेचैनी भाभी की जिंदगी है और पागलपन भी। कभी देश के लिए इसी तरह पागल होकर उन्होंने अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया था। शिव दा बताते हैं कि जब दुर्गा भाभी के पति भगवतीचरण बोहरा 1930 में रावी तट पर बम विस्फोट में शहीद हो गए, तो भाभी ने डबडबाई आँखों को चुपचाप पोंछ डाला था। उस दिन भैया चंद्रशेखर आजाद ने धैर्य बँधाते हुए कहा था—“भाभी, तुमने देश के लिए अपना सर्वस्व दे दिया है। तुम्हारे प्रति हम अपने कर्तव्य को कभी नहीं भूलेंगे।”
- (7) भैया आजाद का स्वर सुनकर भाभी के होठों पर दृढ़ संकल्प की एक रेखा खिंच गई थी उस दिन। वे उठ बैठीं। बोलीं—“पति नहीं रहे, लेकिन दल का काम चलेगा, रुकेगा नहीं। मैं करूँगी।” और भाभी दूने वेग से क्रांति की राह पर चल पड़ीं। उनका पुत्र शची तब तीन वर्ष का था, पर उन्होंने उसकी परवाह नहीं की। वे बढ़ती गईं, जिस राह पर जाना था उन्हें। रास्ते में दो पल बैठकर कभी सुस्ताया नहीं। छाँव देखकर कहीं ठहरी नहीं। चलती रहीं—निरंतर। जैसे चलना ही उनके लिए जीवन का ध्येय बन गया हो। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को जेल से छुड़ाने के लिए आजाद और उनके साथी जब चले, तो भाभी ने आजाद से आग्रह किया—“संघर्ष में मुझे भी चलने दीजिए। यह हक सर्वप्रथम मेरा है।”
- (8) आजाद ने इसकी स्वीकृति नहीं दी। यह योजना कामयाब भी नहीं हो पाई। कहा जाता है कि भगतसिंह ने स्वयं इसके लिए मना कर दिया था।
भाभी जेल में भगतसिंह से मिलीं। फिर लाहौर से दिल्ली पहुँचीं। गांधी जी वहीं थे। यह कराची कांग्रेस से पहले की बात है। भगतसिंह की रिहाई के सवाल को लेकर भाभी गांधी जी के पास गईं। रात थी। कोई साढ़े ग्यारह का वक्त था। बैठक चल रही थी। नेहरू जी वहीं घूम रहे थे। वे सुशीला दीदी और भाभी को लेकर अंदर गए। गांधी जी ने देखा तो कहा—“तुम आ गई हो। अपने को पुलिस में दे दो। मैं छुड़ा लूँगा।”
- (9) गांधी जी समझे कि वे संकट से मुक्ति पाने आई हैं। भाभी तुरंत बोलीं—“मैं इसलिए नहीं आई हूँ। दरअसल, मैं चाहती हूँ कि जहाँ आप अन्य राजनीतिक कैदियों को छुड़ाने की बात कर रहे हैं, वहाँ भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को छुड़ाने की शर्त वाइसराय के सामने रखें।”
- (10) गांधी जी इसके लिए सहमत नहीं थे। भाभी ने सारी स्थिति समझ ली और उन्हें प्रणाम करके

वापस चली आई। फिर वे शची को लेकर मुंबई पहुँचीं। वहाँ क्रांतिकारी पृथ्वीसिंह आजाद और सुखदेव राज के साथ लेमिंगटन रोड पर गवर्नर पर गोलियाँ चलाईं। पुलिस कोई भेद नहीं पा सकी। ड्राइवर के बयानों से पुलिस को पता लगा कि गोली चलाने वालों में एक लंबे बालों वाला कोई लड़का था। भाभी के बाल लंबे थे ही। कद छोटा-सा। किसी को अनुमान न था कि इस कांड के पीछे कोई स्त्री भी हो सकती है। खोजबीन में लंबे बालों को रखने के शौकीन कुछ युवक पकड़कर पीटे गए। उसके बाद पता नहीं भाभी को कैसे फरार घोषित कर दिया गया। वारंट में भाभी का नाम 'शारदा बेन' लिखा था और उनके पुत्र शची का 'हरीश'। भाभी के लाहौर के तीन मकान जब्त हो गए थे। इलाहाबाद के भी दो। भगवती चरण के वारंट पर पहले ही सब कुछ कुर्क हो चुका था। स्वसुर ने जो चालीस हजार रुपए दिए थे, उनमें से कुछ क्रांतिकारी कार्यों पर व्यय हो गए थे। बाकी जिस परिचित सज्जन के यहाँ रखे थे वे मिले ही नहीं।

- (11) कितना कुछ सहा उन दिनों भाभी ने। बताती हैं कि उन्हीं दिनों राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने उनसे बहुत स्नेहपूर्वक कहा था—“बेटी, मेरे यहाँ रहो।” भाभी उनके पास 5-6 महीने ठहरीं। फिर चली आई। अपने को गिरफ्तार कराया। बयान देने के लिए उन पर बहुत जोर डाला गया। लेकिन भाभी झुकने वाली नहीं थीं, हार मान गए पुलिस वाले। कितना साहस था उनमें।

आज भाभी को देखता हूँ तो बार-बार होंठों पर आ जाता है—भाभी एक अनवरत यात्रा हैं।

“कब तक चलोगी भाभी?”

कहती हैं—“बस, अब अंत ही समझो। किसी भी दिन हीरामन उड़ सकता है। मैं मर जाऊँ तो कैप्टन रामसिंह (आजाद हिंद फौज) का बैंड बुलवा लेना। आशिक का जनाजा जरा धूम से निकले।”

- (12) मैं भाभी का क्षीण होता शरीर देखने लगता हूँ—सांडर्स वध के बाद सरदार भगतसिंह को लाहौर से बचाकर निकाल ले जाने का श्रेय भाभी को ही है, जिन्होंने उस नाजुक घड़ी में मेम साहब बनकर साहब (भगतसिंह) को सुरक्षित कलकत्ता पहुँचाया था। और इन्हीं भाभी ने अपने रक्त से तिलक कर भगतसिंह को अंतिम विदाई दी थी। लाहौर षड्यंत्र केस में गिरफ्तार क्रांतिकारियों के लिए चंदा माँगने जाती महिलाओं में भाभी भी शामिल रहती थीं। जो धन मिलता उससे भगतसिंह और क्रांतिकारियों के लिए सामान आदि खरीदा जाता।
- (13) आजाद भारत में भाभी को उपेक्षा और आदर दोनों मिले। सरकारों ने उन्हें पैसों से तोलना चाहा। कई वर्ष पहले पंजाब में उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री दरबारा सिंह ने उन्हें 51 हजार रुपए भेंट किए। भाभी ने वे रुपए वापस कर दिए। कहा—“जब हम आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ या उपलब्धि की अपेक्षा नहीं थी। केवल देश की स्वतंत्रता ही हमारा ध्येय था। उस ध्येय पथ पर हमारे कितने ही साथी अपना सर्वस्व निछावर कर गए—शहीद हो गए। मैं चाहती हूँ कि मुझे जो 51 हजार रुपए दिए गए हैं, उस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बना दिया जाए, जिसमें क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास का अध्ययन और अध्यापन हो, क्योंकि देश की नई पीढ़ी को इसकी बहुत आवश्यकता है।”
- (14) मुझे याद आता है सन् 1937 का जमाना, जब कुछ क्रांतिकारी साथियों ने गाजियाबाद तार भेजकर भाभी से चुनाव लड़ने की प्रार्थना की थी। भाभी ने तार से उत्तर दिया—“चुनाव में मेरी

कोई दिलचस्पी नहीं है। अतः लड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।”

- (15) मुल्क के स्वाधीन होने के बाद की राजनीति भाभी को कभी रास नहीं आई। अनेक शीर्ष नेताओं से निकट संपर्क होने के बाद भी वे संसदीय राजनीति से दूर ही बनी रहीं। शायद इसलिए अपने जीवन का शेष हिस्सा नई पीढ़ी के निर्माण के लिए अपने विद्यालय को उन्होंने समर्पित कर दिया। एक दिन भाभी के जन्मदिन पर हम अचानक लखनऊ पहुँचे, तो उस दिन भाभी अपनी बातचीत में देश की युवा पीढ़ी की समस्याओं पर ही चर्चा करती रहीं। प्रकाशो भाभी (प्रसिद्ध क्रांतिकारी और लेखक यशपाल की पत्नी श्रीमती प्रकाशवती) जब उनके लिए कुछ भेंट लेकर आईं, तब भी। शिव दा और जयदेव कपूर जी वहीं थे। मैंने शिव दा पर भाभी की बिखरी स्मृतियों को जोड़कर एक लेख तैयार किया, जो अभिनंदन ग्रंथ में जाना था। भाभी को बताया तो बहुत खुश हुईं। सबके सामने पढ़ाकर सुना और बोलीं—“आज मेरे जन्म दिन पर मेरे लिए यह सर्वोत्तम उपहार है तुम्हारा।” फिर उठकर भीतर गईं और अपनी दो पुरानी तस्वीरें मुझे लाकर दीं, जिनके लिए मैं बहुत दिनों से अनुरोध कर रहा था।
- (16) भाभी उसके बाद अपना विद्यालय छोड़कर गाजियाबाद चली गईं। जयदेव जी मिलते तो कहते—“भाभी के लिए अपने कॉलेज से दूर रह पाना बहुत कठिन होगा।” मैं भी भाभी की तकलीफ को समझते हुए “हाँ” कहकर चुप हो जाता। मैं जानता हूँ कि भाभी ने जिंदगी के कितने वर्ष अकेले गुजार दिए, पर कॉलेज छोड़कर कभी वे कहीं गईं नहीं। अकेलापन सालता था उन्हें। रात के वक्त वह अहसास और भी सघन हो जाता था। वे किताबें और अलमारी उलटने-पलटने लगतीं। फिर थक जाने पर ही उन्हें नींद आती। कोई पहुँच जाता तो सुख-दुख की चर्चा कर लेतीं। ऐसे क्षणों में उनके पास पहुँचकर बातें करने में मुझे कई बार सुख मिला है, तो कई बार दर्द की गलियों में भी उन्होंने मुझे घुमाया है। ऊपर से बेफिक्र लगने वाली भाभी के अंदर की पीड़ा को मैंने महसूस किया है। मुझे याद है कि मैंने एक बार किसी अखबार में भाभी के कुछ अनुभवों को लिखकर छपवा दिया था। बाद में मुझे अपनी इस भूल का अहसास हुआ। मैं जानता था कि पिछला सब कुछ स्मरण कराना भाभी को एक तकलीफदेह प्रक्रिया से गुजारना है। लेख पढ़कर उन्होंने मुझे एक पत्र में लिखा — “तुमने अपने शब्दों में मुझे जिस ऊँचाई पर पहुँचा दिया है, दरअसल मैं उसके काबिल नहीं हूँ।...तुम्हें इस अपराध के लिए क्षमा नहीं कर सकती।”
- (17) उसके बाद लखनऊ में भाभी से भेंट हुई, तो हँसकर कहने लगीं — “मैं तुमसे कोई बात नहीं करूँगी। भई, तुम्हारे सामने कुछ बोलने का मतलब, उसे अखबार में छपवा देना है। तुम लेखकों के पेट में कोई बात पचती तो है नहीं।”
- (18) मैं जानता हूँ कि पहली बार जब मैंने लिखने के उद्देश्य से भाभी से कुछ जानना चाहा था, तो वे बोली थीं—“भगवतीचरण (पति) के संबंध में छोड़कर बाकी सब कुछ पूछ सकते हो। उनकी चर्चा चलने पर मैं कई दिन सामान्य नहीं रह पाती।” पर जब बातचीत चलती है, तो भाभी भगवती भाई के अनेक मार्मिक संस्मरण मुझे सुना देती हैं। कहती हैं—“एक दिन चंद्रशेखर आजाद दिल्ली में भगवतीचरण से मिलने आए थे। सामना होते ही दो असाधारण काया एक-दूसरे के हृदय से लिपट गईं। कई क्षण तक दोनों मूक रहे। सिर्फ आँसुओं की चंद बूँदें उनकी आँखों से ढली थीं। और उसके बाद वे खिलखिलाकर हँस पड़े। उस हँसी का क्या रहस्य था, किसी ने न समझा। पार्टी का काम और संगठन बड़े जोश और जीवट से होने लगा। बड़ी-बड़ी आशाएँ और उमंगें दिलों में हिलोरें लेने लगीं। किंतु यह सब कितना क्षणिक और अस्थायी था। ठीक एक वर्ष

बाद भगतसिंह को जेल से निकालने की योजना में हम सब लोग लाहौर में जाकर इकट्ठे हुए। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को छुड़ाने के लिए जब बम बने थे, उनमें से एक का परीक्षण करके देखना था। दोपहरी थी। तेज धूप और तपन। रावी तट पर वे (भगवतीचरण), सुखदेव राज और विश्वनाथ वैशंपायन बढ़ते जा रहे थे। परीक्षण के लिए जब घने जंगल में एक स्थान पर रुके, तो सबसे पहले सुखदेव राज ने बम फेंककर देखना चाहा। बम हाथ में लेने पर पता चला कि उसकी पिन ठीक नहीं बैठी है। फिर वैशंपायन ने स्वयं उसको फेंकने का आग्रह किया, लेकिन वे किसी तरह नहीं माने। कहने लगे—तुम लोग पीछे हट जाओ, मैं फेंकता हूँ और जैसे ही अपने दोनों साथियों को पीछे कर उन्होंने बम फेंकना चाहा कि पिन निकलते ही बम फट गया।

- (19) “एक भयंकर आवाज और चतुर्दिक धुएँ के बाद वे (भगवतीचरण) क्षत-विक्षत हो वहीं गिर गए। और फिर नहीं उठे। उनका एक हाथ कलाई से कट गया था और दूसरे हाथ की उँगलियाँ ही उड़ गई थीं। पेट में भारी जख्म हो गया। आँतें बाहर लटक रही थीं। यह विवरण मुझे बच्चन (वैशंपायन) ने बताया था। मरते समय भी उनके होंठों पर मुस्कुराहट थी। कोई चिंता थी तो यही कि दल का काम रुके नहीं। उनका यही संदेश था। सुखदेव राज घायल हो चुके थे। वैशंपायन नीरव अश्रुपात कर रहे थे। उनसे भगवती भाई ने कहा था—अपनी भाभी का साथ देना...।”
- (20) “और फिर उस दिन शाम को वह दीपक (भगवतीचरण) अपने समस्त अरमानों को लिए हुए सदा के लिए बुझ गया। चार बजे शाम को सुखदेव राज लौटे थे। ताँगे से उतरते समय लँगड़ाकर चल रहे थे। उनका पैर आगे से जख्मी था। जूता कट गया था। सुखदेव राज को लिटा दिया गया। उजाला होने से पहले ही आजाद, धनवंतरि आदि रावी तट पर गए। नदी में इतना पानी नहीं था कि शव-प्रवाह हो पाए, इसलिए वहीं जंगल में गड़ढा खोदकर शहीद का शव दफना दिया गया। बाद में पुलिस ने वह जगह खोजी और अस्थियाँ बीनकर अदालत भेजीं...।”
- इतना कहकर भाभी चुप हो जाती हैं। मैं भी कुछ पूछने की हिम्मत नहीं कर पाता। चुपचाप देखता रह जाता हूँ उन्हें।

टिप्पणी : खेद है, सन् 2001 में क्रांति की प्रतिमूर्ति दुर्गा भाभी का निधन हो गया, उनके प्रति हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग¹ लेने वालों में तथा देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले² क्रांतिकारियों में श्रीमती दुर्गा भाभी तथा उनके पति श्री भगवतीचरण बोहरा भी थे।

अंग्रेज शासकों पर बम फेंकने के लिए तैयार किए गए एक बम के परीक्षण के समय भगवतीचरण आहत हुए³ और उनकी मृत्यु हुई। तब उनका पुत्र मात्र तीन वर्ष का था। श्रीमती दुर्गा ने हिम्मत नहीं हारी बल्कि वह अधिक उत्साह और दृढ़ निश्चय से अपने मिशन में लग गईं। श्रीमती दुर्गा को अपने पति की शहादत⁴ का फख्र⁵ था और उनकी मृत्यु के बाद अपने पति के व्रत को आगे बढ़ाने का उन्होंने बीड़ा उठाया। अंग्रेज शासकों ने उनके लाहौर के तीन मकान जब्त कर लिए⁶। इलाहाबाद के भी दो मकान पहले ही जब्त किए जा चुके थे।

विद्यार्थी जी के इस संस्मरण⁷ ने उन क्रांतिकारियों की याद ताजा कर दी जिन्हें लोग प्रायः भूल चुके थे। अगणित वीर स्वतंत्रता की लड़ाई में हँसते-हँसते शहीद हो गए। कई खुशी-खुशी फाँसी के फंदे पर झूल गए। कड़्यों ने अपनी जमीन जायदाद, घर-परिवार, सुख-शांति सब की तिलांजलि दे दी।

टिप्पणी-शब्दार्थ

1. सक्रिय भाग active part, 2. सब कुछ न्यौछावर करना sacrifice everything, 3. आहत हुए was hurt 4. शहादत martyrdom, 5. फख्र था was proud of (martyrdom of her husband), 6. मकान जब्त कर लिए गए houses were confiscated, 7. संस्मरण memoirs, 8. तिलांजलि दे दी sacrificed, willingly gave away

1.2 शब्दावली (Vocabulary)

शब्द	अर्थ
पैरा (1)	
क्रांति (स्त्री.)	इन्कलाब revolution
प्रतिमूर्ति (स्त्री.)	प्रतिमा image, idol
आश्रय स्थल (पु.)	ठहरने का स्थान, सहारा देने वाली जगह shelter place
पैरा (2)	
शहीद (पु.)	देश के लिए मरने वाला martyr
स्मारक (पु.)	किसी की स्मृति / याद में बनाया गया स्थान memorial
शोध (पु.)	अनुसंधान, खोज research
संस्थान (पु.)	institute
संचालन (पु.)	चलाना to conduct
क्यारी (स्त्री.)	पौधों को लगाने के लिए सीध में खोदी जमीन का हिस्सा
नींव डालना (सक. क्रिया)	आरंभ करना to lay the foundation
पैरा (3)	
नसीब (पु.)	किस्मत (स्त्री.), भाग्य (पु.) fate
आकांक्षा (स्त्री.)	इच्छा (स्त्री.) desire, aspiration
संग्रहालय	जहाँ दुर्लभ वस्तुएँ संभालकर रखी जाती हैं museum

शब्द**अर्थ**

पैरा (4)

कतरन (स्त्री.)

दुर्लभ (विशे.)

कटे-छँटे टुकड़े cutting

मुश्किल से मिलने वाली (वस्तु) rare

पैरा (5)

व्यस्त (विशे.)

पीढ़ी (स्त्री.)

काम में लगा हुआ busy

पुश्त (स्त्री.) generation

पैरा (6)

अर्पित करना (सक. क्रि.)

आदर्श (पु.)

मूल्यांकन (पु.)

दाँव पर लगाना (सक. क्रि.)

लगा देना to offer

अच्छी बातें ideal

परखना evaluation, judgement

बाजी लगाना to stake

पैरा (7)

दृढ़ संकल्प (पु.)

सुस्ताना (अ. क्रि.)

ध्येय (पु.)

पक्का इरादा firm determination

आराम करना, रुकना, थकावट मिटाने के लिए बैठना take rest

उद्देश्य, लक्ष्य (पु.) air, target

पैरा (8)

रिहाई (स्त्री.)

छूटना, मुक्त होना release

पैरा (9)

शर्त (स्त्री.)

condition

पैरा (10)

सहमत (विशे.)

जब्त (विशे.)

राजी (विशे.) agree

अपने कब्जे में करना confiscated

शब्द**अर्थ**

कुर्क (पु.)

जब्त

कद (पु.)

height

पैरा (11)

बयान (पु.)

स्वीकारोक्ति statement

अनवरत (विशे.)

बिना रुके, लगातार continuously

आशिक (पु.)

प्यार करने वाला a lover

जनाजा (पु.)

शव-यात्रा (स्त्री.)

पैरा (12)

क्षीण (विशे.)

कमजोर weak

षड्यंत्र (पु.)

साजिश conspiracy

पैरा (13)

उपेक्षा (स्त्री.)

अवहेलना neglect

उपलब्धि (स्त्री.)

प्राप्ति (स्त्री.) attainment, achievement

समारोह (पु.)

उत्सव (पु.) function

पैरा (14, 15)

रास आना (क्रि.)

पसंद आना, to like

शीर्ष (विशे.)

चोटी (स्त्री.), सबसे ऊपर head

दिलचस्पी (स्त्री.)

रुचि (स्त्री.) interest

पैरा (16)

सालना (अक. क्रि.)

कष्ट देना (सक. क्रि.) to cause pain

अहसास (पु.)

अनुभूति (स्त्री.) feeling, emotional

प्रक्रिया (स्त्री.)

कार्य करने का तरीका process

शब्द**अर्थ**

पैरा (17, 18)

मार्मिक (विशे.)

हृदय को छू लेने वाला touching

सामना होना (अक. क्रि.)

आमने-सामने आना coming face to face

जीवट (विशे.)

हिम्मतवाला daring

पैरा (19)

चतुर्दिक (विशे.)

चारों दिशाएँ all the four directions

क्षत-विक्षत

गंभीर चोटों से फटा wounded gravely

जख्म (पु.)

घाव wound

आँतें (स्त्री.)

अँतड़ियाँ intestines

पैरा (20)

खेद है (पदबंध)

दुख है, अफसोस है it is sad

1.3 समानार्थी / पर्यायवाची शब्द

शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द	शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द
पुराना	पुरातन, प्राचीन	नजदीक	निकट, पास
पहले	पूर्व	आसान	सरल
आकर्षण	खिंचाव	प्रथम	पहला
समाप्त	खत्म	सवाल	प्रश्न
उपस्थित	हाज़िर	सहमत	राजी
सुविधा	सहूलियत	आदर	इज्जत
योग्य	लायक, काबिल	संस्मरण	यादें
प्रार्थना	विनती		

1.4 विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
पुराना / प्राचीन	नया / नवीन	पहले	बाद में
आकर्षण	विकर्षण	समाप्त	प्रारंभ

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उपस्थिति / हाज़िरी	अनुपस्थिति / गैरहाज़िरी	सुविधा	असुविधा
योग्य / लायक	अयोग्य, नालायक	जन्म	मृत्यु
दुर्लभ	सुलभ	सुरक्षित	असुरक्षित
संतोष	असंतोष	निकट, पास	दूर
सरल	कठिन	प्रथम	अंतिम
प्रश्न / सवाल	उत्तर / जवाब	सहमत	असहमत
आदर, मान	निरादर, अपमान	आशा	निराशा
आश्रित	निराश्रित	स्मरण	विस्मरण

1.5 अनेकार्थी शब्द

- (i) सवाल (question) परीक्षा में कई सवाल पूछे गए।
सवाल मेरे वहाँ जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता।
I don't feel the need of / not going there.
- (ii) आराम (rest) भोजन करने के बाद मैं थोड़ी देर आराम करता हूँ।
आराम (cured) I take rest for a while after meals.
उसे बीमारी से आराम मिला।
She / he got rid of her / his ailment.
- (iii) चंदा (donation) वे लोग चंदा माँगने आए थे।
चंदा (moon) चंदा की चाँदनी बड़ी सुहावनी लग रही थी।
- (iv) चुनाव (election) संसद का चुनाव अगले वर्ष होगा।
चुनाव (selection) पुलिस की भर्ती में 10 लोगों का चुनाव किया गया।
- (v) लक्ष्य (aim) क्रांतिकारियों का लक्ष्य अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना था।
लक्ष्य (target) अर्जुन ने मछली की आँख को लक्ष्य बनाकर तीर चलाया था।
- (vi) पत्र (letter) मेरा पिछला पत्र आपको अवश्य मिला होगा।
पत्र (leaf), पत्ते शिव जी की बेल-पत्र से पूजा की जाती है।
- (vii) गोली (bullet) गोली लगने से उसकी मृत्यु हो गई।
गोली (tablet, pills) नींद की गोली खाकर वह सो गया।
- (viii) मतलब = अर्थ (meaning) मैंने आपके कहने का मतलब नहीं समझा।
मतलब = उद्देश्य (purpose) राधारमण से मिलने के मतलब से मैं उनके घर गया।

- (ix) अर्थ = मतलब इस कविता का अर्थ लिखिए।
 अर्थ = धन-दौलत भारत की अर्थ-व्यवस्था मजबूत है।

1.6 मुहावरे और कहावतें

- (i) एक-एक ईंट जोड़कर = थोड़ा-थोड़ा करके।
 (ii) सब कुछ दाँव पर लगा देना = अपना सब कुछ न्यौछावर कर देना।
 (iii) किसी भी दिन हीरामन उड़ सकता है = किसी भी दिन मौत / मृत्यु आ सकती है।
 (iv) सर्वस्व निछावर कर जाना = सब कुछ त्याग देना।
 (v) रास नहीं आना = जरा भी पसंद नहीं आना।
 (vi) पेट में कोई बात नहीं पचना = किसी बात को बताए बिना चैन नहीं आना।

भाग-ख : रेखाचित्र

2.0 रेखाचित्र

प्रस्तुत पाठ में आप महादेवी वर्मा द्वारा लिखा गया रेखाचित्र 'निककी, रोज़ी और रानी' पढ़ेंगे।

2.1 आधार पाठ

निककी, रोज़ी और रानी

—महादेवी वर्मा

- (1) मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण ममत्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में, तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छपे-से हैं। निककी नेवला, रोज़ी कुतिया और रानी घोड़ी।
- (2) रोज़ी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह, मेरे पाँचवें जन्म-दिन पर, पिता जी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप में भेंट कर दी गई। स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते। रोज़ी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेलकूद में साथ देती। वस्तुतः मेरे पशु-प्रेम का आरंभ रोज़ी के साहचर्य से ही माना जा सकता है, जो 13 वर्ष की लंबी अवधि तक अविच्छिन्न रहा।
- (3) रोज़ी सफेद थी, किंतु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का अग्रान्श कत्थई रंग का होने के कारण उसमें कत्थई किनारी वाली सफेद साड़ी और धवल रंगीनी का आभास मिलता था। वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी और कुछ प्रकृति से और कुछ हमारे साहचर्य से श्वान दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था। हम सबने तो उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे।

- (4) उस समय पिता जी इंदौर के डेली कॉलेज (जो राजकुमारों का विद्यालय था) के वाइस प्रिंसिपल थे और हम सब छावनी में रहते थे जहाँ दूर तक कोई बस्ती नहीं थी। हमें पढ़ाने वाले शिक्षक प्रातः और संध्या समय आते थे। इस प्रकार दोपहर का समय हमारे लिए अवकाश का समय था, जिसे हम अति व्यस्तता में बिताते थे।
- (5) घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय आम के वृक्षों से घिरा एक सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में 8-9 फुट और खुली धूप में 4-5 फुट के लगभग गहरा था। कोई-कोई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी, नीची और सूखे पोखर पर झूलती-सी थीं। सूखी पत्तियों ने झर-झरकर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था। हम तीनों डाल पर बैठकर झूलते रहते या राबिंसन क्रूसो के समान अपने समतल समुद्र के गहरे टापू की सीमाएँ नापते रहते। घूमने के क्रम में यदि हमें मकोई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली-फली मिल जाती, तो नंदन वन की प्रतीति होने लगती।
- (6) हमारे इस भ्रमण में रोज़ी निरंतर साथ देती। जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती, जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती। गरमी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबियाँ हवा के झोंकों से नीचे गिरती रहतीं और उनके गिरने के स्वर के साथ रोज़ी सूखे पोखर में कूदती और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे खोज लाती। कच्ची केरी की चोपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता, परंतु वह इस खोज कार्य से विरत न होती।
- (7) ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे, तब एक आम गिरने का शब्द हुआ और रोज़ी नीचे कूदी। कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह में एक नवजात शिशु को दबाए हुए ऊपर आ रही है। पत्तियों में से छोटा मुँह निकालकर उसने जैसे ही बाहर विस्मित दृष्टि डाली वैसे ही अपने आपको रोज़ी के छोटे और अँधेरे मुख-विवर में पाया। निरंतर बिना दाँत चुभाए कच्ची अंबिया लाते-लाते रोज़ी इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई।
- (8) आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था, पर आकृति में स्पष्ट अंतर था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म-नर्म पंजे, गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्हीं सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा। रोज़ी ने उसे हौले से पकड़ा था पर बचने के संघर्ष में उसके कुछ खरोंच लग ही गई थी। चोट से अधिक भय से वह निश्चेष्ट था। उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि घोंसले, चिकने पत्थर, जंगल कनेर के फूल आदि का अपना विचित्र संग्रहालय छोड़कर उसे लिए हुए घर की ओर भागे। उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए, परंतु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला। उन्होंने जीव-जंतुओं को न सताने के संबंध में लंबा उपदेश देने के उपरांत उसे उसके माता-पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया।
- (9) उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा। प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने

खिलौनों के छोटे बक्स को खाली कर उसमें रुई और रेशमी रुमाल बिछाया। फिर बहुत अनुनय-विनय कर और उसके सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी कर लिया। इस प्रकार लघु परिवार में एक लघुतम सदस्य सम्मिलित हुआ।

- (10) जब रामा की सतर्क देखरेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया, तब हम रामा को दिए वचन भूलकर फिर पूर्ववत अराजकतावादी बन गए।
- (11) माँ ने उसका नाम रखा नकुल जो उसकी जातिवाचक संज्ञा का तत्सम रूप था, किंतु न जाने संक्षिप्तीकरण की किस प्रवृत्ति के कारण हम उसे निक्की पुकारने लगे।
- (12) निक्की मेरे पास ही रहता था। निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ झूलता रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिपकर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता। रोज़ी का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था परंतु निक्की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता। एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले साँप को देख लिया और कूदकर उसके पास पहुँच गया। हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की दोनों पिछले पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप हवा में आधा उठकर फुँफकार रहा है।
- (13) निक्की को साँप ने मार डाला समझकर हम सब चीखने-पुकारने और साँप को पत्थर मारने लगे। यदि हमारा कोलाहल सुनकर रामा न आ जाता तो परिणाम कुछ दुखद भी हो सकता था।
- (14) उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिशत भर का निक्की कई फुट लंबे साँप से लड़ सकता है। उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी। निक्की, साँप के सब ओर इतनी तेजी से घूम रहा था कि वह एक भूरे और घूमते हुए धब्बे की तरह लग रहा था। साँप फन पटक रहा था, फुँफकार रहा था, उसे अपनी कुंडली में लपेट लेने के लिए आगे-पीछे हट-बढ़ रहा था, परंतु बिजली की तरह तड़प उठने वाले निक्की को पकड़ने में असमर्थ था। वह तेजी से उछल-उछलकर साँप के फन के नीचे पैने दाँतों से आघात कर रहा था।
- (15) रामा के कारण इस असम युद्ध का अंत देखने के लिए तो हम बाहर खड़े न रह सके, परंतु जब निक्की खिड़की पर आकर बैठा तब हमने झाँककर साँप को कई खंडों में कटा देखा। निक्की के मुँह में विष, न लगा हो इस भय से उसके मुँह को पानी में डुबा-डुबाकर धोया और फिर दूध दिया।
- (16) साँप जैसे विषधर को खंड-खंड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है। जीव-जगत में जो निर्विष है वह विष से मर जाता है और जिसमें अधिक मारक विष है वह कम मारक विष वाले को परास्त कर देता है पर नेवला इसका अपवाद है। वह विषरहित होने पर भी न सर्प के विष से मरता है और न संघर्ष में विषधर से परास्त होता है।
- (17) प्रतिदिन मुझे पहुँचाने और लेने रामा आता था और वह पालक के नाते निक्की के प्रति बहुत सदाय था, अतः मार्ग भर निक्की मेरी गोद में बैठकर आता था और मिशन के फाटक की लता

में या बाड़े में घूम-घूमकर मेरी पढ़ाई के घंटे बिताता था। छुट्टी होने पर मेरे फाटक पर पहुँचते ही उसका कूदकर मेरे कंधे पर बैठ जाना इतना नियमित और निश्चित था कि उसमें कुछ मिनटों का हेर-फेर भी कभी नहीं हुआ।

- (18) इसके उपरांत हमारे परिवार में एक सबसे बड़ा जीव सम्मिलित हुआ। रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टुओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया) पर घूमते देखते थे।
- (19) एक दिन हम तीनों ने बाबू जी को मौखिक स्मृति-पत्र (मेमोरेंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।
- (20) बाबू जी ने हँसते हुए पूछा - सफेद टट्टू पर बैठोगे ? कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा-सा चॉकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अतः बाहर से मादा टट्टू को लाने ले जाने के लिए दीवार में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की उसकी देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईंस रखा गया।
- (21) वह (ताजरानी / मादा टट्टू) इतनी सुंदर थी कि अब उसकी छवि आँखों में बसी है। हल्का चॉकलेटी रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी काली, स्वच्छ और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथुने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी आँठों वाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी।
- (22) बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था, अतः उसकी दीवार में एक खुली अलमारी और कई ताख थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित कर दिया।
- (23) रानी की गरदन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।
- (24) फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरे वाली ऐसी जीन बनवाई गई जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।
- (25) अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सबके सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे। यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य

चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक ही परिवार के हो जाते हैं।

- (26) निक्की रानी की पूँछ से झूलने लगता था, रोज़ी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हों।
- (27) एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेरमुँह वाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किस प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।
- (28) फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछताछ की तब खोज आरंभ हुई। पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।
- (29) रानी अपने कानों को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबू जी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।
- (30) एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सवेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना-चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।
- (31) अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। यह छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको सिर पर बैठाकर दौड़ाने वाली रानी का दाना-चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेते रहते हैं।
- (32) भाई ने कहा—रानी का पेट चीरकर हम कम से कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें—तब बच्चे घोड़ों पर वे बच्चे बहिन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा पर जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सुआ रामा अपनी कोठरी में रखता था जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।
- (33) फिर अचानक हमारे अराजक राज्य पर क्रांति का बवंडर बह गया और हमें समझदारों के देश में निर्वासित होना पड़ा। अवकाश के दिनों में जब हम घर लौटे तब निक्की मर चुका था, रानी और उसका बच्चा पवन किसी को दे दिए गए थे। केवल दुर्बल, अकेली और खोई-सी रोज़ी हमारे पैरों से लिपटकर कूँ-कूँ करके रोने लगी।

2.2 शब्दावली (Vocabulary)

शब्द	अर्थ
पैरा (1)	
अतीत (पु.)	बीता हुआ समय past time
ममत्व (पु.)	माँ का प्यार, ममता affection
समष्टि	संसार, जगत
स्मृति (स्त्री.)	याद reminiscence, remembrance
पैरा (2)	
उपहार (पु.)	भेंट (पु.) a present
खटोला (पु.)	छोटी चारपाई small cot
वस्तुतः	ठीक-ठीक, सचमुच में in fact
साहचर्य (पु.)	साथ company
अवधि (स्त्री.)	समय period, tenure
अविच्छिन्न (विशे.)	न टूटा हुआ, लगातार continuous
पैरा (3)	
धवल (विशे.)	सफेद, श्वेत white
कत्था (पु.)	a brownish substance used with betel leaves
अग्र+अंश=अग्रांश	आगे का हिस्सा, सामने का भाग the front part / portion
वात्सल्य (पु.)	बच्चों से प्रेम
पैरा (4)	
छावनी (स्त्री.)	लश्कर cantonment area
बस्ती	मोहल्ला locality
पैरा (5)	
विश्रामालय (पु.)	आराम करने का स्थान resting-place, rest-house
पोखर (पु.)	तालाब tank water reservoir

शब्द**अर्थ**

कगार (पु.)

किनारा brink, bank

मकोई

एक कँटीला पौधा

करोँदा

एक काँटेदार पौधा जिसमें छोटे खट्टे फल होते हैं।

पैरा (6)

भ्रमण (पु.)

घूमना, tour, travel

निरंतर (क्रि. वि.)

लगातार, बराबर regularly, continuously

आतुर (विशे.)

व्यग्र eager

परिक्रमा (स्त्री.)

चारों ओर चक्कर लगाना to take round

विरक्त

बिना लगाव के detached

चोपी (स्त्री.)

आम की घुंडी में से निकलने वाला रस gum of a raw mango

पैरा (7)

स्वच्छंद (विशे.)

बेरोकटोक unrestricted

विचरण करना (पु.)

घूमना wandering

उपरांत (क्रि. वि.)

बाद में later

विवर (पु.)

बिल, cave, hole, opening

पैरा (8)

आकृति (स्त्री.)

चेहरा (पु.) face, feature

खरोंच (स्त्री.)

चोट की लकीर या चिह्न scratch

कनेर (पु.)

एक प्रकार का फूल वाला पौधा a kind of a plant

पैरा (10)

सतर्क (विशे.)

सावधान careful, cautious

पुष्ट (विशे.)

मोटा, ताकतवर fat, well nourished

पूर्ववत् (क्रि. वि.)

पहले की तरह as before

अराजकता

शासनतंत्र का अभाव anarchy

शब्द	अर्थ
पैरा (11)	
संक्षिप्त (विशे.)	छोटा small, short
पैरा (12)	
गतिविधि (स्त्री.)	क्रियाकलाप activity (action)
पैरा (13)	
कोलाहल (पु.)	हल्ला-गुल्ला, शोर-शराबा noise
पैरा (14)	
बालिशत (पु.)	आधे फुट के करीब लंबाई
आघात करना (क्रि. सक.)	चोट पहुँचाना to hurt, to attack
पैरा (15)	
असम (विशे.)	जो बराबर न हो
(अ+सम)	(not equal)
पैरा (16)	
खंड-खंड (विशे.)	टुकड़े-टुकड़े broken into pieces
नितांत (क्रि. वि.)	पूरी तरह से completely
निर्विष (विशे.)	बिना जहर के
परास्त करना (सक. क्रि.)	हराना to defeat
विषधर (पु.)	साँप snake
पैरा (17)	
पालक (पु.)	पालने वाला guardian
सदय (विशे.)	दया सहित, दयालु (kind)

शब्द	अर्थ
पैरा (18)	
उपरांत (क्रि. वि.)	बाद में
रियासत (स्त्री)	अंग्रेजों द्वारा बनाया गया छोटा राज्य old princely state
टट्टू	छोटे कद का घोड़ा pony / poney
पैरा (19)	
मौखिक (विशे.)	मुँह से बताया गया oral
स्मृति-पत्र	memorandum
पैरा (20)	
बरामदा (पु.)	घर के मुख्य द्वार के आगे बना हुआ स्थान जिस पर छत भी हो veranda, verandah
साईस (पु.)	घोड़े की देखरेख करने वाला
पैरा (21)	
छवि (स्त्री.)	सुंदर रूप, सौंदर्य beauty
अयाल (पु.)	घोड़े या सिंह के गले का बाल mane
पैरा (22)	
ताख (पु.)	दीवार में खोदकर बनाया गया सामान रखने का स्थान
स्वेच्छया (स्त्री.)	खुद की इच्छा से, अपनी इच्छा से
विस्थापित (विशे.)	अपनी जगह से हटाए गए displaced
शरणार्थी (पु.)	अपने देश से दूसरे देश में राजनैतिक कारणों से भागे लोग refugee, displaced
पैरा (23)	
मैत्री (स्त्री.)	मित्रता, दोस्ती friendship
अस्थिर (विशे.)	जो स्थिर न हो unstable
हिनहिनाना (अक. क्रि.)	घोड़े की आवाज

शब्द**अर्थ**

पैरा (24)

जीन (स्त्री.)

संतुलन (पु.)

घोड़े पर बैठने के लिए चमड़े की सीट

अपने आप को संभालना balance

पैरा (29)

खुर (पु.)

पशुओं के पैरों का निचला भाग, जो जमीन पर पड़ता है hoof

पैरा (30)

स्मरणीय (विशे.)

निरुपाय

घोषणा करना

याद रखने लायक memorable

बिना उपाय के without any way / solution

ऐलान करना to announce

पैरा (33)

बवंडर (पु.)

निर्वासित होना (क्रि.)

आँधी (स्त्री.) storm

निकाला जाना to be banished

2.3 समानार्थी / पर्यायवाची शब्द

शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द	शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द
ममत्व	ममता	विविध	अनेक, कई
जीव	प्राणी	मानव	मनुष्य
स्मृति	याद	उपहार	भेंट
प्रेम	प्यार, मोहब्बत, इश्क	आरंभ	शुरू
अवधि	समय	मध्य	बीच
सफेद	श्वेत, धवल	शिक्षक	अध्यापक
संध्या	शाम	अवकाश	छुट्टी
ग्रीष्म	गरमी	हवा	वायु, समीर, पवन
प्रिय	प्यारा	पोखर	तालाब
निरंतर	लगातार	आदेश	आज्ञा

शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द	शब्द	पर्यायवाची / समानार्थी शब्द
स्वर	आवाज, ध्वनि	डाल	शाखा
नन्हो	छोटा	उत्कोच	घूस
शंका	शक, संदेह	विरुद्ध	खिलाफ
लोभ	लालच	दृष्टि	नजर
निरीक्षण	जाँच	स्पष्ट	साफ
विस्मित	चकित	अनुमान	अंदाजा
अँधेरा	अंधकार	लघु	छोटा
भय	डर	विवश	लाचार
उत्तेजना	आवेश	सुयोग	अवसर
योग्य	काबिल, सक्षम, समर्थ	स्मरण	याद
लड़ाई	युद्ध	अर्थ	मतलब / धन
विशेष	खास	हेर-फेर	परिवर्तन / रद्दोबदल
समान	बराबर	मित्रता	दोस्ती, मैत्री
सदा	हमेशा, सदैव	करुणा	दया
प्रतिदिन	हर रोज	स्वच्छ	साफ
आतंकित	भयभीत, डरा हुआ	कार्यालय	दफ्तर
कहानी	किस्सा, कथा	दुर्बलता	कमजोरी
दृष्टि	नजर	गंध	बास
सामान्य	साधारण	क्रोध	गुस्सा

2.4 विलोम शब्द

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
उदय	अस्त	प्रेम	घृणा
आरंभ	अंत	दुर्लभ	सुलभ
समान	असमान	कच्चा	पक्का
सुरक्षित	असुरक्षित	स्पष्ट	अस्पष्ट
जीवित	मृत	ज्ञात	अज्ञात
इच्छा	अनिच्छा	सफल	असफल

स्वस्थ	अस्वस्थ	समझदार	नासमझ
नियमित	अनियमित	परिवर्तित	अपरिवर्तित
मित्रता	शत्रुता	संभव	असंभव
सूखा	गीला	अँधेरा	उजाला
कोमल	कठोर		

2.5 कुछ उद्धरणों की व्याख्या

उद्धरण-I

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण ममत्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छपे से हैं। (पैराग्राफ 1)

कोहरा = धुंधलापन, fog, hasy

ममत्व = ममता, प्यार affection

उदय होना = प्रकट होना

मानव समष्टि = मनुष्य लोगों का समाज human corporate

व्याख्या

महादेवी वर्मा कहती हैं कि मेरे बचपन की यादें अस्पष्ट हैं, धुंधली हैं, पर उन्हें याद करने पर जो सामने आता है वे घटनाएँ तीन रोचक यादों से जुड़ी हैं। वे घटक मानव से नहीं मानवेतर (other than human beings) प्राणियों से जुड़ी हुई स्मृति की वे रेखाएँ हैं जो मिटाई नहीं जा सकें। वे यादें मेरे मन में पूरी तरह बैठ गई हैं।

उद्धरण-II

कुछ हमारे साहचर्य से श्वान दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था। (पैराग्राफ 3)

व्याख्या

रोज़ी कुतिया छुटपन से घर के बच्चों के साथ रहती, खेलती थी। ऐसा लगता था कि उसमें नकल करने का अच्छा गुण था। अतएव उसमें ऐसी विशेषताएँ आ गई थीं जो प्रायः कुत्तों में नहीं पाई जातीं। इन विशेष गुणों के कारण रोज़ी को बच्चों की तरह ही प्यार मिलने लगा था।

उद्धरण-III

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं। (पैराग्राफ 25)

व्याख्या

पहले के कई प्रसंगों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों में नियमानुकूल और अनुशासन के अनुसार चलने की प्रवृत्ति नहीं थी और ताजरांनी घोड़ी भी इनके व्यवहार से प्रभावित हो जाती। मनोवैज्ञानिक तथ्य को उजागर करते हुए लेखिका कहती है कि बच्चों में सामान्य चेतना का ही अस्तित्व रहता है। उच्चस्तरीय बोध के स्तर नहीं होते। ऐसी स्थिति में बच्चों को मानव, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे सब एक परिवार के प्रतीत होते हैं। वे इन सबमें अधिक अंतर नहीं करते।

पाठ-16 : भारतीय संस्कृति
(तृतीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	भारतीय संस्कृति	106
	– वेद	106
	– वेदांग	106
	– स्मृति ग्रंथ	107
	– दर्शन ग्रंथ	107
	– महाकाव्य	107
	– पुराण	108
1.1	संस्कृति	108
1.2	संस्कृति और सभ्यता	109
1.3	भारतीय संस्कृति के मूल तत्व	111
1.4	हिंदू संस्कार और आश्रम व्यवस्था	114
1.5	भारत की विविधता के बीच एकता	118
1.6	भारतीय संस्कृति का सामाजिक स्वरूप	121
	– ऋग्वेदकालीन सामाजिक व्यवस्था	121
	– मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था	122
	– आधुनिककालीन सामाजिक व्यवस्था	123

1.0 भारतीय संस्कृति

भारत, एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। भारत के उत्तर में हिमालय, हिंदूकुश और कराकोरम की पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। दक्षिण में हिंद महासागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है। भारत की संस्कृति बहुत प्राचीन है। विश्व के सबसे प्राचीन साहित्य वेदों की रचना भारत में हुई है।

वेद

‘वेद’ का अर्थ है ‘ज्ञान’। वेदों में सभी प्रकार के ज्ञान की बातें समाहित हैं। वेदों की रचना चिंतन-मनन करने वाले ऋषि-मुनियों ने की थी। ऐसा माना जाता है कि वेदों के रचनाकार महर्षि व्यास हैं। वेदों को ‘श्रुति’ भी कहते हैं। ‘श्रुति’ का अर्थ है सुना हुआ। वेदों की ऋचाएँ सुनकर कंठस्थ की जाती थीं और परंपरा से शिष्यों को याद कराई जाती थीं। बाद में इन्हें लिपिबद्ध किया गया।

वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद सबसे प्राचीन है। ‘ऋक्’ का अर्थ है - छंद, श्लोक, पदबद्ध स्तुति। ऋग्वेद में देवों की स्तुति वाले श्लोकों की प्रधानता है। ऋग्वेद में दस मंडल हैं, 1029 सूक्त हैं और 10550 ऋचाएँ हैं। जैसा कि पहले बताया गया है कि इन ऋचाओं की रचना विभिन्न कालों में कई ऋषियों द्वारा की गई।

यजुर्वेद में यज्ञ तथा हवन के नियम और विधि-विधान हैं। नियमों को समझाने के लिए गद्य का प्रयोग वांछनीय होता है। अतएव यजुर्वेद प्रायः गद्य में है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद की भी कई ऋचाएँ इसमें संकलित हैं। इस ग्रंथ से आर्यों के सामाजिक जीवन का पता चलता है। वर्णाश्रम आदि की जानकारी भी इससे मिलती है। यज्ञ में पढ़े जाने वाले मंत्रों को ‘यजुस्’ कहते हैं। यजुर्वेद का संबंध कर्मकांड के नियमों से है।

सामवेद के मंत्र गेय (गाने योग्य) हैं। यज्ञ, हवन, अनुष्ठानादि के समय ये मंत्र लय, ताल से उच्चरित होते थे। सामवेद में मूलतः 99 मंत्र हैं। शेष अन्य ऋचाएँ ऋग्वेद से ली गई हैं।

अथर्ववेद में भी ऋग्वेद और सामवेद से मंत्र लिए गए हैं। भाषा और विषय-वस्तु के आधार पर ऐसा लगता है कि अथर्ववेद की रचना काफी बाद में हुई। इसमें संकलित विषय हैं - जादू-टोना, तंत्र-मंत्र राक्षस-पिशाच की शक्तियाँ आदि। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति मिलती है।

वेदांग : प्रत्येक वेद के चार अंग हैं। (1) संहिताएँ (2) ब्राह्मण (3) आरण्यक तथा (4) उपनिषद्।

संहिता वेदों के सबसे प्राचीन अंग हैं। ये पद्य में हैं। संहिता का अर्थ है ‘संग्रह’ या ‘संकलन’। ऋग्वेद की संहिता में उपासना, पूजा, प्रशस्ति की ऋचाओं का प्राचुर्य है। यजुर्वेद की संहिता में यज्ञादि से संबंधित मंत्र हैं।

ब्राह्मण ग्रंथों में ऋचाओं की व्याख्या समाहित है। टीका या व्याख्या की भाषा गद्य ही होती है। अतएव ब्राह्मण ग्रंथ गद्यात्मक हैं।

आरण्यक ब्राह्मण ग्रंथों के अंश हैं। इनमें अनुष्ठानों, कर्मकांडों तथा दार्शनिक सिद्धांतों का समावेश है। आरण्यक का अध्ययन-मनन अरण्य में ही किए जाने का प्रावधान है। अरण्य का अर्थ है - वन - जंगल।

उपनिषदों में आध्यात्मिक विषयों की चर्चा है। आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म, सृष्टि आदि के गूढ़

रहस्यों की विवेचना की गई है। इनमें ज्ञान तत्व की प्रधानता है। चिंतन-मनन का महत्व दर्शाया गया है।

वेदों के शास्त्रीय अध्ययन तथा उनको समुचित रूप से समझने के लिए छह विषयों का प्रतिपादन किया गया है। ये विषय हैं -

शिक्षा - जिसके अध्ययन से वर्णों, शब्दों के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है।

छंद - इसमें पद्यों के लक्षणों एवं विशेष अर्थ का विवेचन किया गया है।

निरुक्त - इसमें वेदों के शब्दों की व्याख्यात्मक रचना का विवेचन है।

व्याकरण - इसमें वेद की भाषा का व्याकरणिक निरूपण मिलता है।

कल्प - इसमें धार्मिक कर्मकांडों का वर्णन है।

ज्योतिष - नक्षत्रों, ग्रहों और सौर मंडल के बारे में संपूर्ण जानकारी दी गई है।

स्मृति ग्रंथ

सामाजिक जीवन में सर्वमान्य सिद्धांतों के रूप में कुछ नियमावली बनाई गई। आधुनिक संदर्भों में ये एक प्रकार से कानून हैं। इनमें मनु द्वारा लिखित 'मनुस्मृति' सबसे प्रमुख है। यह ग्रंथ हिंदुओं की सामाजिक व्यवस्था का निरूपण करता है। याज्ञवल्क्य रचित 'याज्ञवल्क्य स्मृति', नारद रचित 'नारद स्मृति' और बृहस्पति द्वारा रचित 'बृहस्पति स्मृति' भी उल्लेखनीय हैं।

दर्शन ग्रंथ

'दर्शन' का अर्थ है - 'सम्यक रूप से देखना'। इसके अंतर्गत विवेचना करना, मूल्यांकन करना, उपयुक्त व्याख्या करना आदि संबद्ध क्रियाएँ भी समाहित हैं। उत्सुकता, उत्कंठा-ज्ञानने की प्रबल इच्छा, सोच-विचार, मनन-चिंतन, बौद्धिक अन्वेषण दर्शन की परिधि में आते हैं। आर्यों के आध्यात्मिक चिंतन का आधार ये दर्शन ग्रंथ ही हैं। मनीषी चिंतकों ने अपने विचार अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किए हैं।

दर्शन ग्रंथों में छह ग्रंथ उपलब्ध हैं। वे हैं -

- (1) कपिल का सांख्य दर्शन
- (2) गौतम का न्याय दर्शन
- (3) कणाद का वैशेषिक दर्शन
- (4) पंतजलि का योग दर्शन
- (5) जैमिनी का पूर्व मीमांसा दर्शन
- (6) व्यास का वेदांत दर्शन

महाकाव्य

रामायण और महाभारत भारत के सांस्कृतिक जीवन से संबंधित महाकाव्य हैं। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का वर्णन है। जबकि महाभारत में कौरवों और पांडवों के युग का जीवन दर्शन प्रकट होता है। इन महाकाव्यों की रचना ई.पू. 700 से 200 के बीच मानी गई है।

त्रेता और द्वापर इन दोनों युगों में सामाजिक, लौकिक और आध्यात्मिक सोच में बड़ा ही अंतर

आ गया था। त्रेता युग में मर्यादा इतनी थी कि राम भरत के पक्ष में और भरत राम के पक्ष में राज्य का त्याग करने को तत्पर थे। परंतु द्वापर युग में दो चचेरे भाइयों में इतनी कटुता आ गई थी कि कौरव पांडवों को सुई की नोक के बराबर भूमि बिना युद्ध के देने को तैयार नहीं थे। पारिवारिक युद्ध में अपार नरसंहार हुआ। महाभारत के मुख्य पात्रों में कृष्ण का नाम सर्वोपरि है।

पुराण

पुराण अठारह हैं। इन पुराणों में देवी-देवताओं के विलक्षण पराक्रम और भक्तवत्सलता की गाथाएँ हैं। इनमें राजा-महाराजाओं के शौर्य, प्रतिभा, गुण-ग्राहकता संबंधी आख्यान व दृष्टांत भी हैं। इनमें से कुछ प्रमुख पुराण हैं -

भागवत पुराण

विष्णु पुराण

शिव पुराण

स्कंद पुराण आदि

1.1 संस्कृति

संस्कृति एक अत्यंत व्यापक शब्द है। इसको परिभाषित करना कठिन है। इसकी परिधि में मानव समाज के समग्र कार्यकलाप चाहे वे भौतिक धरातल पर हों या आध्यात्मिक चिंतन के स्तर पर हों, समाहित हो जाते हैं। किसी समाज में व्याप्त रीति-रिवाज, आचार-विचार, आपसी व्यवहार, नैतिक आचरण, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, संगीत, जीव-प्रकृति, सृष्टि, आत्मा-परमात्मा के विषय में धारणाएँ एवं मान्यताएँ आदि संस्कृति के अंतर्गत आती हैं। संस्कृति में परिवर्धन एवं परिवर्तन भी अबाध रूप से होते रहते हैं। यह परिवर्तन इतनी धीमी गति से होता है कि यह सामान्यतः एक पीढ़ी के लोगों को दिखाई नहीं देता है। कालांतर में दो अवधि के सांस्कृतिक कार्यकलापों की तुलना करने पर अंतर परिलक्षित होता है।

‘संस्कृति’ का अंग्रेजी पर्याय ‘Culture’ शब्द का आज के संदर्भ में इतना परिवर्तन हो गया है कि इसके मूल अर्थ को आज हम अपनाने में हिचकिचाएँगे। कल्चर Culture शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के cultura कल्चुरा शब्द से हुई है जिसका अर्थ था कृषि व पशुपालन की व्यावसायिक कुशलता। ‘कृषि व पशुपालन कौशल’ के आधार पर ‘agriculture’ शब्द बना। अर्थ विस्तार से culture का आज अर्थ है -

“The training and refinement of mind, tastes and manners, the condition of thus being trained and refined; the intellectual side of civilization; acquainting ourselves with the best that has been known and said in the world.” - Oxford English Dictionary

अंग्रेजी शब्द culture की व्याख्या इस प्रकार है -

“A culture is the configuration of learned behavior and results of behavior whose component elements are shared and transmitted by members of a particular society.”

The cultural background of personality - Ralf Linton

छांदोग्योपनिषद् 8-4-1 में संस्कृति की परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में दी गई है -

किसी भी देश या समाज के विभिन्न जीवन व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों में मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान करने वाले तत्वों की समष्टि ही 'संस्कृति' है।

डॉ. मजुमदार के अनुसार 'संस्कृति' सामाजिक उपलब्धि ही नहीं वरन नैतिक, आध्यात्मिक तथा मानसिक उपलब्धि भी है।

हिंदी में 'संस्कृति' शब्द में वह व्यापकता है जिसकी इससे अपेक्षा की जाती है। इसी के संदर्भ में 'संस्कृत' और 'संस्कार' शब्दों का उल्लेख भी आवश्यक है। ये तीनों शब्द आपस में संबद्ध हैं और 'सम' उपसर्ग एवं 'कृ' धातु से निःसृत हैं। संस्कृत के विद्वान आष्टे ने संस्कृत-अंग्रेजी कोश में इसके कई अर्थ दिए हैं।

संदर्भ हेतु संस्कृति के कुछ चुने अर्थ निम्नलिखित हैं :-

- (1) आभूषित करना, महिमामंडित करना, सज्जित करना to adorn, to grace, to decorate
- (2) परिष्कृत करना, चमकाना to refine, to polish
- (3) मंत्रोच्चारण द्वारा पवित्र करना to consecrate by repeating mantras
- (4) अच्छा और सम्यक रूप से बनाना / संवारना to construct well or thoroughly

'संस्कृत' का अर्थ है परिमार्जित, शुद्ध किया गया, परिष्कृत। 'संस्कार' शब्द की चर्चा भी यहाँ प्रासंगिक होगी। ऋषि-मुनियों और मनीषियों ने उदात्त मानव जीवन के लिए कुछ क्रियाकलापों की संकल्पना की जिन्हें 'संस्कार' कहते हैं। संस्कार वे प्रक्रियाएँ हैं जो मानव को पवित्र, निर्मल और दोषहीन बनाती हैं। जिनके कारण मानव जीवन सुखद बनता है। इन संस्कारों की संख्या 16 है। जैसे- नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह आदि।

1.2 संस्कृति और सभ्यता

किसी देश की संस्कृति की पहचान उसके धर्म, उसकी दार्शनिक चिंतनधारा, उसके भौतिक जीवन की सुख-सुविधाओं के उपादान, उसके साहित्य, उसकी कला आदि के माध्यम से होती है। भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता है उसका आध्यात्मिकता के प्रति शाश्वत रुझान। रुझान ही क्यों उत्कट लगाव, आस्था और अटूट विश्वास। भारतीय मनीषियों ने कहा था जो कुछ हमें प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है उससे परे, उससे ऊपर, उसका नियंता, उसका सूत्रधार कोई अदृश्य शक्ति है।

यवन, शक, कुशाण, हूण यहाँ आए और यहीं बस गए। उन्होंने यहाँ की संस्कृति अपना ली। वे सब यहीं के हो गए। उनका कोई अलग अस्तित्व नहीं रहा, वे भारतीय हो गए।

हिंदू धर्म में अनेक मत, संप्रदाय बने, पनपे, आपसी विरोध भी हुआ। चूंकि सभी धर्म संप्रदायों की मूल प्रेरणा आध्यात्मिकता रही, वे साथ-साथ चलते रहे। वैष्णव, शैव, शाक्त आदि सब समानांतर रूप से चलते, बढ़ते, पनपते रहे।

मुसलमानों का सूफी दर्शन भी भारत में अध्यात्म और रहस्यवाद की संस्कृति है।

पौराणिक युगीन भारतीय मनीषियों के अनुसार अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष से संबंधित मानव के

क्रिया-कलाप 'संस्कृति' की परिधि में आते हैं। इससे यह ध्वनित होता है कि मानव के आचार-विचार, पारिवारिक एवं सामाजिक, आपसी व्यवहार, रहन-सहन, व्यावसायिक, आर्थिक-धार्मिक कार्यकलाप, लौकिक एवं पार-लौकिक चिंतन-मनन तथा अनुपालन आदि संपूर्ण कार्य शैली समष्टि रूप से संस्कृति कहलाएगी।

नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार - "जाति या राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके (मानव के) मन, रुचि, आचार-विचार की सूचक रहती हैं, संस्कृति के अंतर्गत आती हैं।"

संस्कृति की उपर्युक्त परिभाषा और पौराणिक मत के परिप्रेक्ष्य में यह जानना भी आवश्यक है कि सभ्यता क्या है?

"सभ्यता किसी संस्कृति की बाहरी, चरम, कृत्रिम अवस्था का नाम है।" - डॉ. देवराज

कई पाश्चात्य विद्वान जैसे दवानवी, टेलर, हर्सकोविट्ज सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पर्याय मानते हैं। हर्सकोविट्ज कहते हैं कि संस्कृति के लिए पहला बहुप्रचलित शब्द है परंपरा और दूसरा है सभ्यता। पर मैकाइवर कहते हैं कि मनुष्य जो कुछ भी करता है उसे हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं - एक वर्ग के क्रिया कलाप हैं सभ्यता और दूसरे वर्ग के क्रिया कलाप हैं संस्कृति।

हमारी सामाजिक व्यवस्था, कृषि, तकनीक, यातायात, संचार औद्योगिक-व्यावसायिक विकास भौतिक धरातल की वस्तुएँ सभ्यता की प्रतीक हैं।

अर्थात् भौतिक प्रगति, किसी काल की संप्राप्ति, सुख-साधन की वस्तुएँ आदि सभ्यता की द्योतक हैं।

सभ्यता और संस्कृति में अंतर

सभ्यता का स्वरूप मूर्त (tangible) अर्थात् देखा जाने योग्य, स्पर्शनीय और भौतिक रूप से भोग्य होता है।

संस्कृति का स्वरूप अमूर्त (intangible) अर्थात् अनुभवगम्य और चिंत्य होता है।

वैसे सभ्यता संस्कृति में समाविष्ट रहती है।

श्री व्ही.डी. सावरकर के अनुसार

Civilisation is the expression of the mind of man.

- (Hindutva P-59)

अर्थात् सभ्यता मानव मन की अभिव्यक्ति है।

Culture is the complex whole which includes knowledge, beliefs, art, morals, laws, customs and other capacities and habits acquired by man as member of the society.

- Whitehead

संस्कृति एक सम्मिश्र समष्टि है जिसमें ज्ञान, विश्वास एवं आस्था, कला, नैतिकता, विधि, रीति-रिवाज तथा समाज के सदस्य की हैसियत से अर्जित क्षमताएँ और कार्यशैली समाविष्ट रहती हैं।

अब संक्षेप में कहने के लिए डॉ. ईश्वरी प्रसाद एवं शैलेंद्र वर्मा के समीक्षात्मक ग्रंथ 'प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति धर्म तथा दर्शन' से निम्नलिखित वाक्य उद्धृत करते हैं :-

‘सभ्यता भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु प्रयास करके जीवन के उपकरणों की प्राप्ति करना है तथा संस्कृति का संबंध मनुष्य के आध्यात्मिक, मानसिक तथा चिंतन जगत से है।’

उपर्युक्त कथन से सभ्यता और संस्कृति का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

1.3 भारतीय संस्कृति के मूल तत्व

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। वेद विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ हैं। इतिहासकार भारत, यूनान, रोम, मिस्र, चीन, बेबीलोनिया संस्कृतियों को समकालीन मानते हैं। विश्व की अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ लुप्त हो गईं पर भारतीय संस्कृति अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद अभी तक अपना अस्तित्व बनाए हुए है। न केवल इतना बल्कि इसने अन्य अनेक संस्कृतियों के मूल तत्वों का उदारतापूर्वक अपने आपमें समावेश भी कर लिया है। इसीलिए तो कहा गया है कि - ‘कुछ बात है ऐसी कि हस्ती मिटती नहीं हमारी.....’

भारत में अनेक विदेशी आक्रमण हुए किंतु आक्रमणकारी भारत में ही बस गए। वे भारतीय ही हो गए। उन्होंने अपने जीवन में भारतीय संस्कृति के कतिपय तत्वों को अपनाया, भारतीय संस्कृति ने उनकी संस्कृतियों के कुछ तत्वों को आत्मसात कर लिया और अपनी उदारता का परिचय दिया। यही हमारी सामासिक (Composite) संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति की अनेक विशेषताओं में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :-

- (क) प्राचीनता
- (ख) जीवंतता / निरंतरता
- (ग) विश्व-बंधुत्व, समभाव, धार्मिक सहिष्णुता, सहृदयता, उदारता
- (घ) आध्यात्मिकता, लौकिकता के साथ सामंजस्य
- (ङ) विविधता में एकता
- (च) समन्वय की भावना
- (छ) निष्काम कर्म की भावना
- (ज) उदात्त जीवन-दर्शन

(क) प्राचीनता

‘वेद’ विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ हैं। ‘वेद’ का अर्थ है ज्ञान। वेद वस्तुतः भारतीय ज्ञान, मनन और आध्यात्मिक चिंतन की उच्चतम कृति हैं। ये ही भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं।

पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि ईसा के पाँच-छह हजार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी में अति उच्चकोटि की सभ्यता थी। मोहन जोदड़ो में इमारतों की एक-दूसरे पर सात परतें निकलीं। सबसे निचली परत का समय 3250 ई. पूर्व का माना गया है तथा सबसे ऊपरी तह का समय 2750 ई. पूर्व माना जाता है।

मध्यप्रदेश के भीमबेटका में प्राप्त शैल चित्र तथा नृवंशीय पुरातत्वीय प्रमाण मिले हैं जो सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत में उच्च कोटि की सभ्यता थी।

(ख) जीवंतता / निरंतरता

आज हम देखते हैं कि रोम, यूनान, बेबीलोन, मिस्र आदि सुसंस्कृत देशों की संस्कृतियाँ लुप्तप्राय हैं। उनका स्वरूप प्रायः पूरी तरह खो गया है। परंतु भारत की प्राचीनतम संस्कृति अपने मूल रूप में अभी भी विद्यमान है।

भारत पर अनेक विदेशी जातियों के आक्रमण हुए। उन्होंने भारत पर आधिपत्य जमाया, सदियों यहाँ राज भी किया पर आश्चर्य है कि उनकी संस्कृतियाँ भारत की संस्कृति को मिटा नहीं पाईं। भारत की संस्कृति में उनकी संस्कृतियाँ विलीन हो गईं। भारत ने उन्हें आत्मसात कर लिया।

वेद, उपनिषद, पुराण, आध्यात्मिक चिंतन, पूजा कर्म, आश्रम व्यवस्था, नैतिक मूल्य अभी भी अपना पूर्व अस्तित्व एवं महत्व बनाए हुए हैं। प्राचीन गौरवशाली परंपरा अविच्छिन्न रूप से आज तक चली आ रही है।

(ग) विश्व-बंधुत्व, समभाव, धार्मिक सहिष्णुता, सहृदयता, उदारता

भारत का निम्नलिखित मंगल श्लोक विश्व के सभी व्यक्तियों के लिए सुख, स्वास्थ्य की उत्कट कामना को दर्शाता है :-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखं भागभवेत्॥

(विश्व के सभी लोग सुखी हों, स्वस्थ और निरोगी हों, सभी का कल्याण हो, किसी को किसी प्रकार का दुःख न हो।)

शिकागो में स्वामी विवेकानंद ने पार्लियामेंट ऑन रिलीजस (विश्व धर्म संसद) में जब श्रोताओं को 'अमेरिका निवासी बहनों और भाइयों' कहकर संबोधित किया तो लोग इस आत्मीय संबोधन से विभोर हो उठकर खड़े हो गए और सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा; दो मिनट तक तालियाँ बजती ही रहीं। स्वयं स्वामी जी इससे एक क्षण आश्चर्यचकित हो गए। सभी प्रतिनिधियों ने 'देवियों और सज्जनों' कहकर संबोधित किया था। स्वामी जी के इस नए आत्मीयतापूर्ण संबोधन ने लोगों का दिल जीत लिया और विद्वत्तापूर्ण भाषण के कारण स्वामी जी सबसे अधिक प्रिय प्रतिनिधि बन गए।

समूचे विश्व को परिवार मानने का विचार 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सिद्धांत अन्यत्र कहाँ है?

भारत ने कभी भी बलपूर्वक अपने धर्म का प्रचार नहीं किया। देवप्रिय अशोक ने अपने पुत्र और पुत्री को बौद्ध धर्म के मूल तत्त्व-अहिंसा, शांति, सत्य, दया, क्षमा, उदारता का संदेश लेकर अन्य देशों में भेजा और धर्म का प्रचार किया।

सम्राट कनिष्क ने अपने सिक्कों पर ईरानी, यूनानी, बौद्ध, हिंदू देवी-देवताओं के चित्र अंकित करवाए थे। यह है भारत की उदार-हृदयता की मिसाल।

सब धर्मों को समान महत्व देने वाले भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को अपनी आस्था और अपने विश्वास के अनुसार अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता और मौलिक अधिकारों का प्रावधान है। धार्मिक सहिष्णुता हमें विरासत में मिली है।

आज धर्म (religion) में उपासना-पद्धति, पूजा-पाठ, कर्मकांड, धार्मिक अनुष्ठान आदि समाहित हैं। भारतीय शास्त्रों में धर्म कर्तव्य का पर्याय है। आज भी कभी कभार यह सुनने में आएगा - 'तुम्हारी

सहायता करना मेरा धर्म है।' सदाचार, नैतिक आदर्श, सत्कर्म, क्षमा, दया आदि भी धर्म की परीधि में आते हैं। भारतीय संस्कृति में इनका अवमूल्यन अभी भी नहीं हुआ है। सदाचार, सच्चरित्रता, निहित व्यापक जीवन-पद्धति धर्म की कोटि में आती है।

(घ) आध्यात्मिकता, लौकिकता के साथ सामंजस्य

भारतीय दर्शन में शरीर को नश्वर और आत्मा को अमर बताया गया है। 'ईश्वर की ओर उन्मुख होकर, मनुष्य का कर्तव्य करते रहो' का उपदेश दिया जाता रहा है। जिस तरह जल में कमल रहता है पर उससे निर्लिप्त रहता है उसी तरह मनुष्य को जगत में भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए निर्लिप्त हो, आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में प्रयत्नरत रहना चाहिए। यह है भारत का जीवन दर्शन।

वैसे भारतीय संस्कृति में 'अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष' को जीवन का उद्देश्य माना गया है। अर्थ-धन-संपत्ति की प्राप्ति एवं उसका उचित उपयोग कर उससे भोग की वस्तुओं को प्राप्त करना, सुख-सुविधाओं का उपभोग करना जीवन के सुख का आधार है।

काम का अर्थ है - 'इच्छा'। अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना भी मानव का उद्देश्य है। यही अपनी इच्छा-पूर्ति का उद्देश्य मनुष्य को सतत कार्यरत रखता है।

इनसे ऊपर धर्म है। महर्षि कणाद ने धर्म की व्याख्या की है। उनके अनुसार जिस कार्य से इस लोक में अभ्युदय अर्थात् उत्थान हो और परलोक में मोक्ष (salvation) मिले वह धर्म है।

मनुस्मृति में धर्म के निम्नलिखित दस लक्षण गिनाए गए हैं। ये हैं - दृढ़ता, क्षमा, मन का निग्रह, अस्तेय (चोरी न करना), पवित्रता, इंद्रियों पर नियंत्रण, बुद्धि को शास्त्रों के अध्ययन से बढ़ाना, विद्या प्राप्ति, सत्य का पालन-अनुसरण, क्रोध न करना।

मोक्ष का अर्थ है आत्मा को परमात्मा में मिलाना - उसमें लीन हो जाना, पुनर्जन्म के चक्कर से मुक्ति पा लेना। यह अंतिम लक्ष्य होता है जिसके लिए धर्म का, वर्ण-धर्म का, आश्रम धर्म का पालन करते हुए - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए मनुष्य की आत्मा ईश्वर में लीन होती है।

अर्थ और काम लौकिक तथा धर्म और मोक्ष पारलौकिक कर्म हैं। यह लौकिक और पारलौकिक तत्वों का समन्वय भारतीय चिंतन पद्धति की विशेषता है।

(ङ) विविधता में एकता

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने एक बार कहा था भारत जातियों और भाषाओं का अजायबघर है। उनका अपना अनुभव था कि भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु, तरह-तरह के पेड़-पौधे, अलग-अलग खान-पान, कई प्रकार की वेश-भूषा, अलग-अलग रीति-रिवाज, कई धर्म-संप्रदाय और विभिन्न भाषाएँ हैं। इसमें पूरी सच्चाई है कि भारत में बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी, कुषाण-यहीं के हो गए। भारत में आर्य, द्रविड़, मंगोल, यहाँ की जनजातियाँ, सिख, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, कई धर्म संप्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं। भारत के संविधान के अनुसार सबको समान अधिकार हैं - इन सबमें भाई-चारा है, सामंजस्य है, एकता है, इसे ही हम विविधता में एकता कहते हैं।

(च) समन्वय की भावना

प्रो. हुमायूँ कबीर ने कहा है - “भारतीय संस्कृति की कहानी, एकता, समन्वय, समाधानों एवं प्राचीन परंपराओं के पूर्ण संयोग की उन्नति की कहानी है।”

विभिन्न धर्म यथा हिंदु, जैन, बौद्ध, सिक्ख के अतिरिक्त मुसलिम, ईसाई, पारसी आदि मतानुयायी मिले, रीति-रिवाजों के होते हुए एक-दूसरे धर्म के लोगों के धार्मिक सामाजिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। यह सभी लोगों को निकट लाता है, विभिन्न संप्रदाय के लोगों में भ्रातृत्व की भावना पनपती है।

धर्म की व्याख्या करते समय कहा गया है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जीवन के लक्ष्य हैं जिनमें अर्थ और काम भौतिक लौकिक जीवन के ध्येय हैं और धर्म और मोक्ष इस लोक के जीवन के बाद के समय के।

महाभारत में यह कहा गया है कि जीवन में अर्थ (धन, संपत्ति) और काम का इस प्रकार उपयोग करो कि धर्म का उल्लंघन न हो।

यह एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण है जिसमें लौकिक और पारलौकिक दोनों के समन्वय का दर्शन एक सूत्र में पिरोया गया है।

(छ) निष्काम कर्म की भावना

योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता में कर्म का महत्व दर्शाते हुए कहा है -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि ॥

(तेरा कर्म करने मात्र पर अधिकार है फल में नहीं। कर्मों के फल की इच्छा न कर और तेरी कर्म न करने में प्रीति न हो अर्थात् तुझमें अकर्मण्यता न आने पाए।)

कर्म करना हर मनुष्य के लिए आवश्यक है। बिना कर्म के कोई व्यक्ति रह भी नहीं सकता और कर्म का फल मिलता ही है। फल किस ओर से आ रहा है। इसका अंदाजा नहीं हो पाता। वह आता अवश्य है। भारत में भाग्यवादी विचार धारा का विरोध होता रहा है। वह व्यक्ति को अकर्मण्य बना देती है। इसलिए कहा है कि भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ नहीं होता। सिंह यदि भाग्य के भरोसे बैठा रहे तो उसका भोजन बनने मृग उसके मुँह में नहीं जाएगा। इसलिए हमेशा कर्तव्यरत रहना चाहिए। कर्म से विमुख होकर व्यक्ति न तो आगे ही बढ़ सकता है और न सुख ही पा सकता है।

1.4 हिंदू संस्कार और आश्रम व्यवस्था

भारत एक विशाल देश है। इसमें विभिन्न, धर्मों, संप्रदायों, मतों के लोग अपने-अपने धर्मों, रीति-रिवाजों, संस्कारों को अपनाए हुए एक साथ भाई-भाई की तरह रहते हैं एक का दूसरे के धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रमों में कोई हस्तक्षेप नहीं। इसके विपरीत वे एक-दूसरे के धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

हिंदुओं के सोलह संस्कार हैं। जिनमें से प्रमुख संस्कार निम्नलिखित हैं :-

(क) जातकर्म संस्कार

- (ख) नामकरण संस्कार
- (ग) अन्नप्राशन संस्कार
- (घ) मुंडन संस्कार
- (ङ) यज्ञोपवीत संस्कार
- (च) विवाह / पाणिग्रहण संस्कार
- (छ) अंत्येष्टि संस्कार

(क) जातकर्म संस्कार

जब बच्चे के जन्म हेतु स्त्री को प्रसव पीड़ा प्रारंभ होती है उस समय उसका पति या कोई अन्य प्रौढ़ व्यक्ति वहाँ पास ही उपलब्ध रहता है। यह जानना आवश्यक है कि बच्चे का जन्म किस समय हुआ ताकि नक्षत्रों के योग का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके। इसी आधार पर बच्चे की जन्म-कुंडली बनाई जाती है जिसमें ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति दर्शाई जाती है। इसके आधार पर बच्चे के भविष्य के बारे में जानकारी दी जाती है। विद्याध्ययन और शादी-ब्याह के समय कुंडली की आवश्यकता होती है। प्रसव के दिन से दस दिन तक घर को अशुद्ध माना जाता है - दसवें दिन घर के कपड़े धोए जाते हैं। बारहवें दिन पुरोहित मंत्रोच्चार के साथ पूजा कराता है; पति-पत्नी के हाथ में पवित्र जल देता है। इस जल में से वे कुछ पीते हैं और कुछ अपने सिर पर डालते हैं। इसी जल को घर में छिड़ककर घर को पवित्र किया जाता है। पंडित / पुरोहित को अन्न, फल, मिष्ठान्न और दक्षिणा देकर विदा किया जाता है तथा सगे-संबंधियों को भोज दिया जाता है।

(ख) नामकरण संस्कार

बच्चे के जन्म के बारहवें दिन बच्चे का नामकरण किया जाता है। उस दिन सगे-संबंधी इष्ट-मित्रों को इस शुभ कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया जाता है। पंडित पूजा-पाठ कराते हैं तथा कुंडली के ग्रह-नक्षत्रों के अध्ययन के बाद नाम में आने वाला पहला अक्षर सुझाते हैं। उसी से प्रारंभ होने वाले कई नामों में से एक लड़के (या लड़की) का नाम रख लिया जाता है - यही नाम शिक्षा, विवाह, नौकरी आदि के लिए प्रयुक्त होता है।

पूजा के बाद पंडितों को दान-दक्षिणा दी जाती है व भोज कराया जाता है। तत्पश्चात् घर में आए इष्ट-मित्रों सगे-संबंधियों को भोजन कराया जाता है।

(ग) अन्नप्राशन संस्कार

बच्चा प्रायः छह माह तक माँ का दूध पीता है। इसके पश्चात् उसे थोड़ा-थोड़ा अन्न देना प्रारंभ करते हैं। इस कार्य के पूर्व एक संस्कार किया जाता है जिसे अन्न-प्राशन कहते हैं। इस दिन इष्ट मित्रों को इस शुभ कार्य में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित किया जाता है।

उस दिन पुरोहित नवग्रहों की पूजा कराता है और हवन कराता है। कुलदेवता के लिए कई तरह के मिष्ठान्न बनाए जाते हैं। इस विशेष अवसर पर खीर अवश्य बनती है। इष्टदेव से प्रार्थना की जाती है कि बच्चे का उचित विकास हो, वह शक्तिशाली बने और दीर्घायु हो। देवताओं को नैवेद्य देने के पश्चात् उस नैवेद्य में से थोड़ी-सी खीर बच्चे को चटाई जाती है। महिलाएँ मंगल-गीत गाती हैं। इष्ट-मित्रों और सगे-संबंधियों को भोज दिया जाता है।

(घ) मुंडन संस्कार

तीन वर्ष की उम्र के बाद बच्चे का मुंडन संस्कार किया जाता है।

माँ-बाप बच्चे को बाहर आँगन में या मंडप में लाते हैं। विवाहित महिलाएँ बच्चे को उबटन लगाकर गरम पानी से स्नान कराती हैं। शरीर पर चंदन लगाती हैं। उसे नए कपड़े और छोटे-छोटे गहने पहनाती हैं।

पुरोहित से संकल्प कराते हैं पूजा-पाठ हवन कराते हैं। फिर एक चोटी छोड़कर सिर के बाल का मुंडन होता है। मुंडन के दौरान महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं।

बच्चे को फिर स्नान कराया जाता है; नए कपड़े पहनाए जाते हैं। मुंडन प्रायः बच्चे को उसकी बुआ की गोद में बैठाकर कराया जाता है। बुआ जी को कपड़े और कोई भेंट दी जाती है और सबको भोजन कराया जाता है।

(ङ) यज्ञोपवीत / जनेऊ या उपनयन संस्कार

यज्ञोपवीत संस्कार लड़के की प्रायः पाँच वर्ष की आयु से नौ वर्ष की आयु के बीच होता है। यज्ञोपवीत या जनेऊ तीन धागों से बना होता है। उसमें से हर धागा तीन-तीन धागों से बटा होता है। इस तरह जनेऊ में नौ धागे रहते हैं। यह बाएँ कंधे पर दाहिने हाथ के माध्यम से सामने पेट और पीछे पीठ पर झूलता है और आड़े डाले रहने के कारण गिरता नहीं।

शौच कर्म के समय इसे कान में लपेटा जाता है और हाथ-पैर धोने के बाद कान से उतारा जाता है। 'उपनयन' का अर्थ है अतिरिक्त आँखें। वे हैं ज्ञान की आँखें। यह ज्ञान या पढ़ने के अधिकार का द्योतक है। इस आयु से बालक ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करता है - गुरुकुल में रहकर संयमी जीवन बिताते हुए शास्त्रों का अध्ययन करता है, स्वाध्यायी, स्वावलंबी बनकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वतः करने की योग्यता प्राप्त करता है।

विवाहित महिलाएँ लड़के को उबटन लगाकर स्नान कराती हैं और वह नए कपड़े पहनता है।

पुरोहित विघ्नेश्वर तथा इष्टदेव की पूजा कराते हैं। फिर लड़के का मुंडन कराते हैं। लड़के के पुनःस्नान के पश्चात् पंडित जी पूजा कराकर उसे जनेऊ पहनाते हैं। इसके बाद कार्यक्रम का समापन सामूहिक भोजन से होता है।

(च) विवाह / पाणिग्रहण संस्कार

विवाह ही गृहस्थ जीवन / आश्रम का प्रवेश द्वार है। विवाह बड़ा ही पवित्र बंधन माना जाता है।

आजकल विवाह-योग्य कन्या का पिता या बड़ा भाई लड़के वालों के यहाँ आकर कन्या के विवाह का प्रस्ताव रखता है। आवश्यक गृहस्थी की चीजों के बारे में तय करता है। वर-कन्या को अपने-अपने घर में तेल-हल्दी चढ़ाई जाती है। वर पक्ष के लोग बड़ी धूमधाम से सगे संबंधियों इष्ट-मित्रों को लेकर बाजे-गाजे के साथ कन्या पक्ष के घर बाराती बनकर आते हैं। बारातियों की बड़ी आवभगत की जाती है। हर बाराती को माला पहनाई जाती है, उन पर इत्र छिड़का जाता है। दोनों पक्षों के प्रौढ़ आपसी परिचय करते-करते गले मिलते हैं। आगे विवाह का कार्य कन्यावालों के मंडप में होता है।

दोनों पक्षों में शादी के पूर्व की तैयारी बड़ी विशद होती है। कन्या के घर एक आम और जामुन

के पत्तों और टहनियों से छाया हुआ बाँस का मंडप बनाया जाता है। शादी का सामान रखा जाता है। माता-पिता अपनी लड़की का कन्यादान करते हैं। कन्या का हाथ वर के हाथ में देकर संकल्प किया जाता है। यही कन्यादान है।

पूर्व-निर्धारित शुभ मुहूर्त में पुरोहित द्वारा वर-कन्या से पूजा कार्य संपन्न कराने के बाद भाँवर (फेरे) का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। यही सर्वाधिक महत्व का कार्यक्रम है जिसके बिना विवाह अधूरा माना जाता है। सात फेरों के बाद ही विवाह की रस्म पूरी होती है। इसी बीच वर-वधू शपथ लेते हैं कि वे एक-दूसरे के प्रति निष्ठा और विश्वास आजन्म बनाए रखेंगे। इसी बीच नाते रिश्तेदार, इष्ट-मित्र अपनी-अपनी ओर से कन्या को दहेज में कुछ न कुछ वस्तु अवश्य देते हैं।

भोज के बाद लड़की को वर के घर विदा करते हैं। वर के घर पर भी कई रस्में हैं जिन्हें पूरा किया जाता है। जैसे-वधू का गृह प्रवेश, कंगन को खोलना इत्यादि। यहाँ भी खूब धूमधाम रहती है। लड़की की विदा वेला में वधू पक्ष की ओर से बारातियों को भी कुछ न कुछ भेंट में दिया जाता है।

(छ) अंत्येष्टि संस्कार

व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात, उसके सगे-संबंधी, इष्ट-मित्र, पड़ोसी एकत्र होकर विधि पूर्वक उसके शव का अंतिम संस्कार कर देते हैं।

आश्रम व्यवस्था

आर्यों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक और बड़ा ही स्वस्थ और उच्च था। वे जीवन को जीवन की तरह जीना चाहते थे, यही नहीं वे जीवन जीना जानते भी थे। उनके इस प्रयत्न का प्रमाण है उनकी आश्रम व्यवस्था। प्राचीनकाल में मनुष्य स्वस्थ रहता था और यह आम बात थी कि वह शतायु (100 वर्ष) होता था। इस 100 वर्ष के समय को स्वस्थ, सुव्यवस्थित, सुनियंत्रित और सुचारु रूप से जीने के लिए चार आश्रमों में बाँटा गया था।

(क) ब्रह्मचर्य आश्रम

जीवन का प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम था। जीवन का यह समय गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, स्वाध्याय करना तथा स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनने का था। इस समय व्यक्ति का उद्देश्य होता था अपने जीवन को ऊँचाइयों तक ले जाना ताकि वह समाज का एक समझदार, साझेदार, उत्तरदायी सदस्य बन सके।

यह ब्रह्मचर्य आश्रम लड़के के उपनयन संस्कार के साथ प्रायः आठ नौ वर्ष की आयु से प्रारंभ होता था। उपनयन का अर्थ है - आँखें, वेद-शास्त्रों से ज्ञान प्राप्त करने का समय, खुली आँखों से प्रकृति को देखकर सीखने का समय, गुरुओं और सहपाठियों से सीखने का समय। इस आश्रम की सीख और संप्राप्ति भावी जीवन के लिए पुख्ता नींव तैयार करती थी।

वेद-शास्त्र, विभिन्न दर्शन, राज्य-शासन, न्याय-पद्धति, शास्त्र-विद्या, ध्यान-मनन, योगाभ्यास प्रायः सभी तरह की विद्या पढ़ाई, लिखाई, सिखाई जाती थी। ब्रह्मचर्य आश्रम का जीवन, पूर्ण संयम का, पूर्ण इंद्रिय निग्रह का, सदाचार का, आज्ञाकारिता का, धर्म के नियमों के पूर्ण पालन का, सहपाठियों से सद्व्यवहार, सहायता, सहयोग, समानता, सामंजस्य का, गुरुजनों तथा आगंतुकों की सेवा का काल था।

(ख) गृहस्थ आश्रम

पाणिग्रहण संस्कार के साथ गृहस्थ जीवन का प्रारंभ होता था। व्यक्ति अपने परिवार-पुत्र, माता-पिता, सगे-संबंधी, हितैषियों, इष्ट मित्रों, समाज के अन्य सदस्यों, शासन के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता था।

स्त्री की रक्षा, संतान प्राप्ति, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनका लालन-पालन, देवों पितरों की पूजा, धार्मिक कृत्य आदि गृहस्थ के कर्तव्यों के दायरे में आते थे। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, कीट-पतंग, कुत्ते-बिल्ली, गाय-बैल, घोड़े सभी उसकी निगरानी और पालन-पोषण की परिधि में आते थे।

सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम सर्वाधिक महत्व का होता था।

(ग) वानप्रस्थ आश्रम

गृहस्थ आश्रम की अवधि की समाप्ति के साथ ही वानप्रस्थ आश्रम का काल प्रारंभ होता था। यह मनुष्य के जीवन का तीसरा सोपान था। यह काल मनुष्य के गृहस्थ कार्यों से अवकाश लेकर गृह-परिवार का मोह त्यागकर वन में एकांत जीवन बिताने का था। उसकी पत्नी भी सहचरी की तरह साथ रह सकती थी। आवश्यकता और अनुकूलता के अनुसार वह थोड़ी संपत्ति भी रख सकता था। जिसका प्रयोग अपने तथा जन सामान्य के कल्याण के लिए करता था।

गृहस्थ जीवन के परिवार, समाज, देश, स्ववृत्ति की जिम्मेदारियों से मुक्त वानप्रस्थ आश्रम में मनुष्य आशा, मोह, लिप्सा, वासना से दूर आराधना-पूजा, ध्यान-मनन में समय का सदुपयोग कर अपने मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता था।

(घ) संन्यास आश्रम

वानप्रस्थ आश्रम की अवधि के बाद व्यक्ति संन्यास आश्रम में प्रवेश करता था। यह वह स्थिति थी जहाँ राग-द्वेष, माया-मोह, अपने-पराए का भेद नहीं रहता था और व्यक्ति कठोर तप-साधना में लीन मोक्ष के लिए उद्देश्यरत हो जाता था। इस अवधि में वह मानव-समाज ही नहीं वरन प्राणिमात्र की सेवा में लग जाता था।

1.5 भारत की विविधता के बीच एकता

भारत एक विशाल उप महाद्वीप है। ऐसी स्थिति में इसमें विविधता का होना अवश्यभावी है। इस विविधता के कई आयाम हैं :-

- (1) भौगोलिक विविधता : जमीन, जलवायु, पेड़-पौधे, वन-पहाड़, उपज (अनाज) आदि की विविधता के बावजूद एकता की तस्वीर उभरती है।
- (2) धार्मिक विविधता : हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी धर्मावलंबी अपने-अपने धर्मों का पालन अपने-अपने दायरों में रहकर करते हैं और आपसी सामंजस्य बनाए रखते हैं।
- (3) भाषाई विविधता : भारत में बाईस राष्ट्र भाषाओं तथा विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के बावजूद भाषाई एकता है। हिंदी सारे भारत में 'लिंग्वाफ्रैंका' (संपर्क की भाषा) के रूप में सदियों से है।

- (4) जाति-प्रजाति की विविधता : कभी स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली आर्य, द्रविड़, मंगोल, आदिवासी जातियाँ अलग नामों के होते हुए भी पूर्णतः भारतीय हैं।
- (5) सांस्कृतिक विविधता : यहाँ के निवासियों के रीति-रिवाज, जाति-प्रथा, तीज-त्यौहार, पूजा-प्रार्थना पद्धति, विवाह पद्धतियाँ, आस्था, खान-पान, वेशभूषा, अनुष्ठान, धर्म, कला इत्यादि में अलग-अलग होते हुए भी उभरा हुआ समन्वित स्वरूप दिखाई देता है।

भौगोलिक विविधता में एकता

भौगोलिक दृष्टि से भारत में ऊँचे-ऊँचे पहाड़, बड़ी-बड़ी नदियाँ, पठार, अनेकानेक प्रकार के घने जंगल, जड़ी-बूटियाँ, विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, जलवायु की विषमता—कहीं अधिक गर्मी, कहीं अधिक सर्दी, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि, तरह-तरह की विविधता की सीमा नहीं है।

हिमालय विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत है। ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा, यमुना, कावेरी जैसी नदियाँ हैं। चेरापूँजी में सबसे अधिक वर्षा लगभग 500 इंच जब कि थार मरु में केवल 5 इंच वर्षा होती है। भारत के मौसम में छह ऋतुएँ होती हैं - वर्षा, ग्रीष्म, वसंत, शरद, शिशिर और हेमंत।

इन विविधताओं के बीच भारत में एकता है - प्राकृतिक सीमाओं से बंधा भारत, अमृत की तरह जल देने वाली जीवनदायिनी नदियाँ, उनके प्रति लोगों की श्रद्धा, विभिन्न धर्मावलंबियों के अलग-अलग स्थलों पर बने तीर्थस्थल, सबमें जन्मभूमि के प्रति अगाध प्रेम, एक स्थल से दूसरे स्थल पर जाने की सुविधा तथा संवैधानिक समानता लोगों को एक सूत्र में बाँधती है।

भारतीय संविधान में भारतवासियों को मूलभूत अधिकार दिए गए हैं, जिनमें से प्रमुख हैं -

- (1) समता का अधिकार
- (2) शोषण के विरुद्ध अधिकार
- (3) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
- (4) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
- (5) सांस्कृतिक स्वतंत्रता का अधिकार
- (6) संवैधानिक उपचारों का अधिकार आदि

धार्मिक विविधता में एकता

भारत भूमि कई धर्म संप्रदायों की जननी है। हिंदू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई और पारसी धर्म को मानने वाले यहाँ रहते हैं।

ये सभी धर्मावलंबी जानते हैं कि भारत उनका देश है - सभी धर्मों के सिद्धांत प्रायः समान मूलभूत हैं - सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, ईमानदारी, नैतिकता।

सभी के अपने देव-ईश्वर, संत-फकीर, पूजास्थल, तीर्थस्थल हैं। सभी धर्मावलंबियों में धार्मिक सहिष्णुता विद्यमान है और ये सब एक साथ मिलकर रहते हैं - प्रायः लोग अन्य धर्मों के धार्मिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं और आनंद उठाते हैं। भारतीय दर्शन 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को सभी धर्म वाले हृदय से स्वीकारते हैं। यह अवधारणा भूमंडलीकरण से भी प्राचीन है।

भाषाई विविधता में एकता

एक अति विशाल क्षेत्र में फैले भारत में कई भाषाएँ, कई बोलियाँ प्राचीन काल से प्रचलित रही हैं। आज विकसित भाषाओं में से बाईस ऐसी भाषाएँ हैं जिन्हें राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। वे हैं - असमी, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बंगला, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिंधी, हिंदी, मैथिली, संथाली, डोगरी, बोडो जो भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित हैं।

विभिन्न भाषा-भाषी विभिन्न राज्यों में फैले हैं - सरकारी नौकरी हेतु, व्यापार, व्यवसाय हेतु, विद्याध्ययन हेतु। ये संपर्क से एक-दूसरे की भाषा समझने बोलने लगते हैं जिससे और आत्मीयता का विकास होता है।

चूँकि हिंदी सारे भारत की संपर्क भाषा है इसलिए विभिन्न भाषा-भाषियों की भाषिक दूरी भी खत्म हो गई है।

वेद-पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथ सभी की धरोहर हैं। कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, सुब्रह्मण्य भारती, प्रेमचंद, प्रसाद आदि सभी राज्यों में और सभी भाषा-भाषियों में समान रूप से प्रिय हैं। भारतीय भाषाओं का मूलधार संस्कार है और इन सभी समानताओं के साथ हिंदी सैकड़ों वर्षों से संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा की भूमिका निभाती आ रही है।

संविधान की अष्टम सूची में दर्शाई 22 राष्ट्रीय भाषाओं में अधिकांश उन राज्यों की राजभाषाएँ हैं जहाँ वे बोली जाती हैं। इससे प्रशासनिक सुविधा बढ़ी है।

जातीय-प्रजातीय विविधता और राष्ट्रीय एकता

जातियों-प्रजातियों का हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करें तो बड़ा ही विस्मयकारी और रोचक लगेगा। ऐसा माना जाता है कि आर्य यहाँ साढ़े-तीन, चार हजार वर्ष पूर्व आए। उससे पूर्व एक उच्च कोटि की सभ्यता पनप चुकी थी। मोहन-जोदड़ो, हड़प्पा आदि की सभ्यता जिसे सिंधु-घाटी की सभ्यता कहा जाता है शहरी सभ्यता थी। वास्तुकला, भवन-निर्माण तकनीक, शहरों के निर्माण की कार्यप्रणाली, जल आपूर्ति की व्यवस्था, जल-मल निष्कासन की तकनीक, सड़कें, आवागमन के साधन सभी के विषय में यहाँ के निवासियों को उच्चस्तरीय जानकारी थी।

विशेष बात यह है कि आज भारत में आर्य, द्रविड़, चीनी, मंगोल, कोल, भील इत्यादि जातियाँ-प्रजातियाँ हैं।

इस विभेद ने भारत को अलग करने के बजाए एक सूत्र में बाँध रखा है। ये जातियाँ-प्रजातियाँ केवल इतिहास में लिखित हैं। सभी जातियाँ-प्रजातियाँ भारतीय हैं, एक हैं, भारत का अभिन्न अंग हैं।

सांस्कृतिक विभिन्नता के बीच एकता

भारत में हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई रहते हैं। इनके रीति-रिवाज, व्रत-त्यौहार, पूजा-पद्धति, खान-पान, विवाह पद्धति, वेश-भूषा धार्मिक अनुष्ठान आदि सभी उनकी जातीय संस्कृतियों के अनुकूल हैं। अर्थात् अलग-अलग हैं।

हिंदुओं में कई मत मतांतर हैं - कई देवी-देवता हैं, दार्शनिक विचारधाराएँ हैं, द्वाैत, अद्वाैत, द्वाैताद्वाैत, विशिष्टाद्वाैत, सारे देश में जगह-जगह तीर्थस्थल हैं। मंदिरों में कहीं दुर्गा-काली, लक्ष्मी-

विष्णु, कहीं शिव-पार्वती, कहीं सीता-राम, कहीं राधा-कृष्ण, कहीं गणेश, कहीं हनुमान विराजमान हैं। लोग अपनी-अपनी आस्था के अनुसार मंदिरों में दर्शनार्थ जाते हैं।

मुसलमानों, ईसाइयों, पारसियों की आराधना पद्धति शादी-विवाह की रस्म, संस्कार, कर्म आदि अलग-अलग हैं।

इन सबके बीच वे सभी संस्कृतियाँ एक ही माला में पिरोई गई हैं। वे सब मानो एकाकार होकर भारतीय संस्कृति में समाहित हो गई हैं।

1.6 भारतीय संस्कृति का सामाजिक स्वरूप

आज की भारतीय संस्कृति का सामाजिक स्वरूप वस्तुतः भारत का सामाजिक स्वरूप है। प्रागैतिहासिक काल में आर्य आए, पारसी आए। हजारों वर्ष बाद मुस्लिम आए, फिर यूरोप से ईसाई धर्मावलंबी आए। वे अपने साथ अपनी-अपनी संस्कृतियाँ लाए। भारतीय समाज ने उनकी संस्कृतियों में से बहुत कुछ लेकर भी अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी।

ऋग्वेदकालीन सामाजिक व्यवस्था

ऋग्वेदकाल की संस्कृति और सभ्यता की जानकारी ऋग्वेद में वर्णित तथ्यों के आधार पर मिलती है।

ऋग्वैदिक युग में समाज की इकाई परिवार था। उस युग में सम्मिलित परिवार होता था। परिवार में व्यक्ति की पत्नी, पुत्र-पुत्रियाँ, पुत्र-वधुएँ तथा पौत्र, प्रपौत्र सभी एक साथ रहते थे। सर्वाधिक आयु का व्यक्ति परिवार का मुखिया होता था। जिसके आदेशों का पालन परिवार के अन्य सभी सदस्य करते थे। आदेश पालन न करने की स्थिति में 'मुखिया' उसे दंडित करता था। परिवार का मुखिया 'गृहपति' कहलाता था। मुखिया की पत्नी की भी परिवार में सर्वोच्च प्रतिष्ठा होती थी।

गृहपति अपने परिवार के सभी सदस्यों के हित में कार्य करता था। कहा भी गया है –

मुखिया मुख सो चाहिए
खान-पान में एक,
पाले-पोसे सकल अंग
तुलसी सहित विवेक।

अर्थात् मुखिया (head of the family) मुँह की तरह हो। मुँह खाता है परंतु उस भोजन से शरीर के सभी अंगों का उचित पालन-पोषण करता है।

ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि आर्य पंजाब में बसे थे। इसमें पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है। वेदों की रचना कई ऋषि-मुनियों ने की। शनैः-शनैः इनमें ऋचाएँ समाविष्ट होती गईं। इस समय के रचनाकारों में कई विदुषी महिलाएँ भी थीं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि महिलाओं को अध्ययन-अध्यापन, यज्ञ-पूजा, हवन कार्यों में पुरुषों के समान अधिकार थे। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, लोपामुद्रा, विश्वंभरा आदि विदुषी स्त्रियों के नाम आदरपूर्वक लिए जाते हैं। सामान्य सामाजिक व गृहस्थ जीवन में भी लड़कियों को ललित कलाओं, रणकौशल, आखेट, कुश्ती, घुड़दौड़ आदि की शिक्षा दी जाती थी। आर्य परिवार में पुत्र व पुत्री दोनों का उपनयन संस्कार होता था।

महिलाओं के समान अधिकार की चर्चा उठी है तो कुछ और तथ्यों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत

होता है – उस समय महिलाओं को अपना जीवन-साथी अर्थात् पति चुनने का अधिकार था, जिसने बाद में स्वयंवर का रूप लिया था। इससे यह तथ्य भी उभरकर आता है कि बाल-विवाह की बात सोची भी नहीं जाती थी। शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् परिपक्व अवस्था में आने पर ही स्वयंवर की बात सोची जा सकती है। सती प्रथा नहीं थी। इन सभी बातों से यह सिद्ध होता है कि महिलाओं का दर्जा पुरुषों के बराबर था। वे पति के साथ यज्ञ में भाग लेती थीं। युद्ध-क्षेत्रों में भी जाती थीं। मनोविनोद, आखेट आदि में भी साथ रहती थीं।

ऋग्वेद के प्रारंभिक नौ मंडलों में दो ही वर्ग के लोगों का उल्लेख मिलता है – आर्य और अनार्य। आर्य वे माने गए जिनका वर्ण गोरा और शरीर मजबूत, कद ऊँचा होता था। साँवले लोग अनार्य थे। वे साँवले और कद में प्रायः छोटे होते थे।

वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मंडलों में मिलता है। इन मंडलों की रचना अपेक्षाकृत काफी समय बाद हुई। यह वर्ण व्यवस्था व्यक्ति के कर्म विशेष पर आधारित थी जन्म पर नहीं। जिनकी रुचि विद्याध्ययन, पठन-पाठन, मनन-चिंतन, यज्ञ कर्मों में रहती और तदनुकूल कार्य करते, वे ब्राह्मण कहलाए।

युद्ध कला, शस्त्रास्त्रचालन, राष्ट्र और जन-धन की रक्षा हेतु शस्त्र उठाने वाले प्रायः प्रशासकीय कार्यों में संलग्न रहते वे 'क्षत्रिय' कहे जाते थे।

जो वाणिज्य-व्यवसाय, कृषि कार्य या पशुपालन में संलग्न रहते थे वे 'वैश्य' कहे जाते थे।

युद्ध में पराजित वर्ग में से कुछेक लोग जो आर्यों के सेवाकार्य में संलग्न रहते थे वे 'दास' या 'शूद्र' कहलाए।

आर्यों के बीच यह वर्ण व्यवस्था बड़ी ही शिथिल थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य अपना व्यवसाय बदलकर दूसरे वर्ण में सम्मिलित हो सकते थे।

सभ्यता को जब हम मानव का बाह्य गोचर भौतिक व्यवहार अथवा उपकरण मानते हैं तो इसके अंतर्गत उसका रहन-सहन, आवास, वस्त्र-आभूषण, खान-पान बाह्य आचरण, साज-सज्जा औद्योगिक विकास, राजनैतिक व्यवस्था आदि आते हैं। ये मानव संस्कृति के परिचायक ही हैं – संस्कृति के अंतर्गत मानव की आंतरिक अथवा मानसिक विचारधारा, चिंतन जिसकी परिणति साहित्य, ललित कला, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, आध्यात्मिक चिंतन में है, सभी समाविष्ट हैं।

मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था

इस युग में भारतीय समाज की संरचना में बदलाव आया। क्षत्रिय राजाओं का आधिपत्य छोटे-छोटे कई राज्यों में बना रहा। ब्राह्मणवाद समानांतर रूप से पनप रहा था। गुण-कर्म आश्रित वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति-प्रथा का विस्तार हुआ अर्थात् गुण-कर्म मूलक वर्ण व्यवस्था ने विकृत होकर जन्म-मूलक जाति व्यवस्था का रूप धारण कर लिया। जातियाँ तथा उपजातियाँ बनती गईं। कर्मकांड की व्यवस्था ने भारतीय समाज की संरचना को खंडित कर दिया।

महिलाओं की स्वतंत्रता छिन गई। गृहस्वामिनी के स्थान पर वह लगभग दासी बन गई। स्त्री-शिक्षा पर प्रतिबंध-सा लग गया। पर्दा प्रथा आई और सती प्रथा ने तो मानो नारी-समाज को नरक में ढकेल दिया।

निम्न कही जाने वाले जातियों के लोग अत्याचार, शोषण, बेकारी के शिकार थे। राजा निरंकुश अत्याचारी, विलासी हो गए थे। राजाओं में वैमनस्य, दंभ की पराकाष्ठा थी। आपस में लड़ना, दूसरों को नीचा दिखाना उनका स्वभाव बन गया था। जनता करों के बोझ से पिसी जा रही थी। पहले मुस्लिम और फिर अंग्रेज आए और यहाँ के शासक बन गए।

आधुनिककालीन सामाजिक व्यवस्था

भारतीय समाज में अंग्रेजों के आगमन के बाद कई परिवर्तन हुए। अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। अंग्रेज भारतीयों को इतना दबाना चाहते थे कि वे कभी सिर न उठा सकें और अंग्रेजी सत्ता को चुनौती न दे सकें।

अंग्रेजी शिक्षा ने दोहरा कार्य किया। एक ओर गुलाम मानसिकता लाने का प्रयत्न किया गया। अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार इस उद्देश्य से किया गया कि भारतीय लोग कार्यालय में बाबुओं का पद संभालें और अंग्रेज शासकों और शासित भारतीयों के बीच कड़ी (मध्यस्थ) की भूमिका निभाएँ।

दूसरा कार्य था – नव जागरण की प्रवृत्ति का विकास। कुछ लोगों ने जागरूकता फैलाने, भारतीयों की जड़ता मिटाने, समाज में फैली कुरीतियाँ मिटाने का बीड़ा उठाया। इस युग में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, बाल-विवाह जैसी कई कुरीतियों पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने विधवा-पुनर्विवाह की दिशा में कार्य किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खाँ, एनिबेसेंट ने समाज सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महात्मा गाँधी ने अछूतोद्धार, तथाकथित हरिजनों का मंदिरों में प्रवेश और समाज में उनको यथोचित स्थान दिलाने का प्रयत्न किया और उन्हें सफलता भी मिली।

अंग्रेजों ने अपने व्यापारिक लाभ के लिए यातायात तथा संचार साधनों का विस्तार किया, जिससे भारतीय समाज को भी लाभ हुआ।

आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीय सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास हुआ।

समाज में स्त्रियों का सशक्तीकरण हुआ जिससे पुरुषों के समान अधिकार, उच्चशिक्षा क्षेत्र में प्रवेश, ऊँचे पदों पर नियुक्ति, अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह आदि को बढ़ावा मिला। विशेषकर स्त्रियों और दलितों के सशक्तीकरण के लिए प्रयत्न किए गए। आज भारतीय समाज की धारा काफी बदल गई है, उसका स्वरूप बदल गया है।



**पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
केंद्रीय हिंदी निदेशालय**

उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली - 110066
दूरभाष : 011-26105211/44

**Department of Correspondence Course
Central Hindi Directorate**
Department of Higher Education
Ministry of Human Resource Development
West Block-7, Ramakrishnapuram
New Delhi - 110066
Phone: 011-26105211/44
Website: www.hindinideshalaya.nic.in



पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
Department of Correspondence Courses
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
CENTRAL HINDI DIRECTORATE



एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम
ADVANCE DIPLOMA COURSE IN HINDI

KIT-3 (तृतीय प्रश्न पत्र)
हिंदी गद्य तथा भारतीय संस्कृति

Response Sheet - 12-16
उत्तर पत्र - 12-16

R.S. received by the { Student on :
Directorate on :

प्राप्तांक Marks	12 / 20	13 / 20	14 / 20	15 / 20	16 / 20
---------------------	----	------------	----	------------	----	------------	----	------------	----	------------

PLEASE ALWAYS QUOTE YOUR ROLL NO. IN ALL CORRESPONDENCE WITH US

FILL UP THE FOLLOWING IN BLOCK LETTERS

Roll No.

--	--

Kum/Smt/Shri

Postal Address

.....
.....
.....

RETURN THE RESPONSE SHEET TO

The Deputy Director

Department of Correspondence Courses, Central Hindi Directorate
West Block-7, Ramakrishnapuram, New Delhi - 110066 INDIA

PLEASE READ YOUR LESSON UNITS CAREFULLY
BEFORE ANSWERING YOUR RESPONSE SHEETS

भाग-क : हिंदी गद्य का विकास

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :-

(1) आधुनिक काल से पूर्व उपलब्ध होने वाले गद्य साहित्य के रूपों के नाम लिखिए।

.....
.....

(2) दक्खिनी गद्य का विकास क्यों नहीं हो सका ?

.....
.....

(3) भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने साहित्य की किन-किन विधाओं में रचना की ?

.....
.....

(4) काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना कब हुई ?

.....
.....

(5) 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम संपादक का नाम लिखिए।

.....
.....

(6) हिंदी का 'उपन्यास सम्राट' किसे माना जाता है ?

.....
.....

(7) जयशंकर प्रसाद के दो नाटकों के नाम लिखिए।

.....
.....

प्रश्न-2 महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की साहित्य-रचना का क्या उद्देश्य था ?

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 निम्नलिखित रचनाकारों की दो-दो रचनाएँ लिखिए।

- | | | | |
|-----|------------------------|-------|-------|
| (1) | भारतेंदु हरिश्चंद्र | | |
| (2) | प्रेमचंद | | |
| (3) | रामचंद्र शुक्ल | | |
| (4) | जयशंकर प्रसाद | | |
| (5) | महावीर प्रसाद द्विवेदी | | |
| (6) | श्यामसुंदर दास | | |
| (7) | अज्ञेय | | |

प्रश्न-4 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

- (1) 'दादा कामरेड' उपन्यास के रचयिता हैं।
- (2) सदलमिश्र ने की रचना की।
- (3) फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास का नाम है।
- (4) प्रेमचंद लिखित प्रमुख उपन्यास है।
- (5) हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों का संग्रह है।

प्रश्न-5 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

भारतेंदु हरीश्चंद्र

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

महावीर प्रसाद द्विवेदी

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रेमचंद

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 छायावादोत्तर हिंदी गद्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 हिंदी उपन्यास साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भाग-ख : गद्य साहित्य की विधाएँ

प्रश्न-1 हिंदी में गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 (1) मुंशी प्रेमचंद के अनुसार कहानी की क्या परिभाषा है ?

.....

.....

.....

(2) कहानी की कथावस्तु के मुख्य स्रोत कौन-कौन से हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न-3 (1) नाटक को काव्य कला का सर्वश्रेष्ठ अंग क्यों माना गया है ?

.....

.....

.....

.....

(2) एकांकी नाटक की क्या विशेषताएँ होती हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 (1) निबंध के बारे में डॉ. श्यामसुंदर दास तथा बाबू गुलाबराय का मत लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) निबंध के प्रमुख तीन तत्व कौन से हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न-5 (1) जीवनी लिखते समय किन-किन महत्वपूर्ण तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(2) आत्मकथा और जीवनी में क्या अंतर है ?

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 (1) संस्मरण की विशेषता का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

(2) रेखाचित्र की विशेषता का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

(3) रिपोर्टाज विधा के बारे में चार-पाँच पंक्तियाँ लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 (1) साक्षात्कार की विशेषताओं का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

(2) यात्रा-वृत्तांत की विशेषताओं का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-8 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) नाटक का शास्त्रीय नाम है।

(2) एकांकी नाटक का कथानक होता है।

(3) निबंध का अर्थ है।

(4) जीवनी के द्वारा लिखी जाती है जबकी आत्मकथा बारे में लिखी जाती है।

(5) रेखाचित्र और संस्मरण दोनों में का योगदान है।

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

भाग-क : कहानी

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में दीजिए :-

(1) लाजवंती के आखिरी पुत्र का क्या नाम था ?

.....

(2) लाजवंती हेमराज को छिपाए-छिपाए क्यों रखती थी ?

.....

(3) हेमराज बाहर निकल जाता तो लाजवंती क्या करती ?

.....

(4) जब लाजवंती दूध दुह रही थी तब उसके पास कौन आया ?

.....

(5) लाजवंती ने मंदिर में क्या मानता मानी ?

.....

(6) तीर्थ-यात्रा पर न जाने पर गाँव के लोग लाजवंती के बारे में क्या कहने लगे ?

.....

(7) मूर्ति ने लाजवंती को गले लगाकर क्या कहा ?

.....

प्रश्न-2 नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :-

(1) लाजवंती हेमराज का अत्यधिक ध्यान क्यों रखती थी ?

.....

.....

.....

.....

(2) हरो के दुखी होने का क्या कारण था ?

.....

.....

.....
.....
(3) लाजवंती हरो को रुपए देकर क्यों प्रसन्न हो रही थी ?

.....
.....
.....
(4) लाजवंती ने स्वप्न में क्या देखा ?

प्रश्न-3 नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

जीवन	प्रकाश
साधारण	सुगंध
हानि	आशीर्वाद
आशा	आखिरी
सौभाग्य	स्वस्थ

प्रश्न-4 नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में इस तरह प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए :-

फूला न समाना, जीवन का सहारा, दिल बैठ जाना, नाक कटना, किसी के आगे हाथ फैलाना

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 'आशीर्वाद' कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 'आशीर्वाद' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

भाग-ख : निबंध

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर एक-एक वाक्य में दीजिए।

(1) देश प्रेम का दावा कौन नहीं कर सकता ?

.....

.....

(2) स्वतंत्र सत्ता से क्या अभिप्राय है ?

.....

.....

(3) देश प्रेम का आलंबन क्या है ?

.....
.....
(4) साहचर्य गत प्रेम क्या होता है ?

.....
.....
(5) सान्निध्य का अभ्यास पढ़ने का क्या परिणाम होता है ?

.....
.....
(6) परिचय किस 'भाव' का प्रवर्तक है ?

.....
.....
(7) साँची के स्तूप के नीचे क्या है ?

.....
.....
(8) लेखक को किसकी महक अच्छी लगी ?

.....
.....
(9) लेखक के लखनवी मित्र ने लेखक को क्या सलाह दी ?

प्रश्न-2 निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द (पर्यायवाची शब्द) लिखिए :-

स्वतंत्र	संसार
भीतर	अधिकार
आमदनी	संबंध

.....

.....

प्रश्न-5 'देश प्रेम' पाठ के आधार पर अपना मत देते हुए देश प्रेम पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

- 1. Improvements needed.
- 2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

भाग-क : एकांकी

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :-

- (1) 'दो कलाकार' नाटक में दोनों कलाकारों के नाम बताइए।

.....

- (2) चूड़ामणि प्रकाशक के पास क्यों गया था ?

.....

- (3) परमानंद ने कवि को रॉयल्टी न देने का क्या कारण बताया ?

.....

- (4) मार्तंड द्वारा बनाए चित्र की मूल कीमत कितनी थी ?

.....

- (5) रामनाथ उस तस्वीर की क्या कीमत देना चाहता था ?

.....

- (6) चित्रकार अपनी बनाई तस्वीर के बदले किसकी तस्वीर ले आया ?

.....

- (7) रामनाथ के पिता जी की तस्वीर कहाँ से बनकर आई थी ?

.....

(8) चूड़ामणि ने परमानंद को क्या धमकी दी ?

.....
.....

(9) बुलाकीदास कितने महीने का किराया माँग रहा था ?

.....
.....

(10) चित्रकार मार्तंड ने रामनाथ के पिता जी के चित्र से क्या हटा (काट) दिया था ?

.....
.....

(11) मार्तंड ने कितने रुपए लेकर रामनाथ के पिता जी के चित्र को ठीक किया ?

.....
.....

प्रश्न-2 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :-

(1) नाटक की मंच सज्जा (stage decoration) कैसी थी ?

.....
.....
.....
.....

(2) चित्रकार मार्तंड और कवि चूड़ामणि किस कारण आश्वस्त थे कि उन्हें पैसे अवश्य मिलेंगे?

.....
.....
.....
.....

- (3) चूड़ामणि और मार्तंड ने बुलाकीदास से छह महीने का किराया अदा करने के क्या तर्क दिए ? उत्तर अपने वाक्यों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 निम्नलिखित शब्दों / वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

- (1) बड़े ध्यान से (with rapt attention)
- (2) शाबाश (well done/bravo)
- (3) आश्चर्य से (surprisingly)
- (4) मेरी तो नाक कट गई (I was ashamed)
- (5) तुम मेरी जगह होते (if you were in my place)
- (6) कमरे के बीचों-बीच (in the middle of the room)
- (7) क्योंकि
- (8) इसलिए

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....
.....
.....

प्रश्न-4 नीचे दिए गए वाक्यों / वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :-

- (1) जो चित्र / तस्वीर बनाता है
- (2) जो कविताएँ लिखता है
- (3) जो गीत लिखता है
- (4) जिसके पास बहुत पैसे हों
- (5) जो पुस्तकें प्रकाशित करता है
- (6) जो चिट्ठियाँ लाता है
- (7) जो जेब / गिरह काटता है
- (8) जो किराए के मकान में रहता है

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए :-

- | | |
|------------------|------------------|
| (1) कला | (5) मूर्ति |
| (2) किराया | (6) गीत |
| (3) चित्र | (7) दान |
| (4) कवि | (8) अधिकार |

भाग-ख : साक्षात्कार

प्रश्न-1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर एक-एक वाक्य में दीजिए :-

- (1) बच्चन जी के जीवन में क्या वज्रपात हुआ ?
.....
.....

(2) पहली पत्नी के निधन पर कविता की कौन-सी पंक्ति सटीक (suitable) है ?

.....
.....

(3) बच्चन जी की रचनाओं के करीब कितने संस्करण प्रकाशित हुए ?

.....
.....

(4) लेखक को बच्चन जी को निकट से देखने-समझने का अवसर किस सन् में मिला ?

.....
.....

(5) लेखक किस पुस्तक का संपादन कर रहे थे ?

.....
.....

(6) उस पुस्तक में किन-किन लेखकों की कृतियाँ संकलित की जा रही थीं ?

.....
.....

(7) 'साहित्य : साधना और संघर्ष' की भूमिका किसने लिखी ?

.....
.....

(8) बच्चन जी ने "आत्मकथा लिखना कठिन कार्य है" क्यों कहा ?

.....
.....

प्रश्न-2 निम्नलिखित शब्दों / वाक्यांशों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

- (1) असामयिक निधन (immature death)
- (2) महसूस करना (to experience, to feel)
- (3) अनुरोध करना (to request)
- (4) मैं मानता हूँ (I admit/I accept)

-
- This image shows a full page of a handwriting practice worksheet. It consists of multiple sets of three horizontal dotted lines, providing a guide for letter height and placement. The lines are evenly spaced across the entire page, which is otherwise blank.

प्रश्न-3 नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

जीवन	:	आवश्यक	:
सत्य	:	रुचि	:
निकट	:	बाह्य	:
बढ़िया	:	वांछित	:
पर्याप्त	:	उचित	:

प्रश्न-4 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

जीवन	:	पक्ष	:
बढ़िया	:	सामान्य	:
उचित	:	रात्रि	:
सार्थक	:	सौभाग्य	:
अग्र	:	पूर्ण	:

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों में '...ता', '...पन', '...पा' '...बाज', '...त्व', '...आइ', '...ई', या '...क' प्रत्यय जोड़कर शब्द लिखिए :-

बूढ़ा	:	चाल	:
मित्र	:	मनुष्य	:
सच	:	तूफान	:
बच्चा	:	परीक्षा	:
गहरा	:	निदेश	:

प्रश्न-6 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पाठ में दी गई सूचनाओं के आधार पर लिखिए :-

- (1) बच्चन जी जब 'मधुशाला' को सस्वर सुनाते थे तो श्रोताओं की क्या प्रतिक्रिया होती थी?
-
-
-

-
-
- (2) 'साहित्य : साधना और संघर्ष' की भूमिका लिखने में बच्चन जी की क्या शर्त थी और पूर्ण होने तक उनकी क्या प्रतिक्रिया रही ? संक्षेप में लिखें।

-
-
-
-
-
-
-
-
- (3) काव्य संग्रहों के बाद के संस्करणों में भारी भरकम भूमिका जोड़ने का डॉ. बच्चन ने क्या औचित्य (appropriateness, propriety) बताया ?

-
-
-
-
- (4) गीतों से दूर हटते जाने की बात पूछने पर कविवर बच्चन जी ने क्या कारण बताया ?

.....

.....

.....

.....

.....

(5) मानव स्वभाव की किस कमजोरी पर बच्चन जी प्रकाश डालना चाहते थे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

भाग-क : संस्मरण

प्रश्न-1 नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में लिखिए :-

- (1) लेखक लखनऊ जाते थे तो कहाँ ठहरते थे ?
.....
- (2) मांटेसरी इंटर कॉलेज में ठहरने का क्या आकर्षण था ?
.....
- (3) शहीद स्मारक एवं स्वतंत्रता संग्राम शोध संस्थान का संचालन कौन कर रहे थे ?
.....
- (4) दुर्गा भाभी शहीद संग्रहालय में किनकी तस्वीरें लगवाना चाहती थीं ?
.....
- (5) दुर्गा भाभी के पति का क्या नाम था ?
.....
- (6) भगवतीचरण बोहरा की मृत्यु किस सन् में हुई ?
.....
- (7) भगवतीचरण जी की मृत्यु कैसे हुई ?
.....
- (8) भगतसिंह की रिहाई के सिलसिले में दुर्गा जी किनसे मिलीं ?
.....
- (9) गांधी जी ने दुर्गा जी को क्या सलाह दी ?
.....
- (10) वारंट में दुर्गा जी का क्या नाम था ?
.....
- (11) सांडर्स वध के बाद सरदार भगतसिंह को बचा ले आने का श्रेय किसे है ?
.....

(12) दुर्गा भाभी की मृत्यु किस सन् में हुई ?

.....

प्रश्न-2 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

मृत्यु	मान
सवाल	आश्रित
सहमत	टिकट
दुर्लभ	योग्य
पुराना	आसान

प्रश्न-3 निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :-

अनुपस्थिति	आसान
निकट	प्राचीन
सहमत	अर्थ
आदर	समाप्त
योग्य		

प्रश्न-4 निम्नलिखित शब्दों / वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करें :-

सात-आठ साल पूर्व, योग्य हाथों में सौंपकर, सपना साकार हो गया, चर्चा करना, सर्वस्व दाँव पर लगाना

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :-

- (1) शहीद संग्रहालय के विषय में दुर्गा भाभी की क्या आकांक्षा थी ?
-
-
-
-
- (2) दुर्गा भाभी और गांधी जी के बीच क्या चर्चा हुई थी ?
-
-
-
-
- (3) पंजाब सरकार द्वारा भेंट की गई रकम के संबंध में दुर्गा जी ने उसके व्यय (खर्च) की क्या व्यवस्था सुझाई ?
-
-
-
-
- (4) दुर्गा भाभी के पति भगवतीचरण की मृत्यु किस तरह हुई ?
-
-
-
-

(5) भगवतीचरण के पार्थिव शरीर (mortal remains) को कहाँ दफनाया गया और क्यों ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 अपने देश के किसी देशभक्त की जीवनी हिंदी में लगभग बीस-पच्चीस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भाग-ख : रेखाचित्र

प्रश्न-1 नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में लिखिए :-

(1) कौन से तीन जीव लेखिका की स्मृति में छपे हैं ?

.....

.....

(2) रोज़ी किसके द्वारा उपहार के रूप में भेंट की गई थी ?

.....

.....

(3) लेखिका और रोज़ी का संबंध कितने वर्षों तक बिना टूटे बना रहा ?

.....

.....

(4) लेखिका के पिता जी किस कॉलेज में अधिकारी थे ?

.....

.....

(5) रोज़ी आम के बदले किस जीव को मुँह में दबाए ले आई थी ?

.....

.....

(6) रामा ने निक्की के मुँह को बार-बार क्यों धोया ?

.....
.....

(7) टट्टू कहाँ बाँधा गया था ?

.....
.....

(8) टट्टू की देखरेख के लिए रखे गए साईस का क्या नाम था ?

.....
.....

(9) भाई के जन्मदिन पर नानी जी ने क्या उपहार दिया ?

.....
.....

(10) बच्चों ने कड़े किसके कानों में डाल दिए ?

.....
.....

प्रश्न-2 निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

आरंभ	आश्चर्य
संध्या	प्रसन्न
निरंतर	अनुमान
लोभ		

प्रश्न-3 निम्नलिखित शब्दों / वाक्यांशों को वाक्यों में प्रयोग करें :-

प्रतीक्षा करना, देखभाल, के उपरांत, सहानुभूति, यदि.....तो

.....
.....
.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए :-

(1) रोज़ी के शरीर की बनावट और उसकी दैनिकचर्या तथा आदतें कैसी थीं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(2) परिवार में नकुल (निक्की) का आगमन किस तरह हुआ तथा उसे किस तरह बड़ा और पुष्ट किया गया ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(3) ताजरानी टट्टू कहाँ बाँधा जाता था ? लेखिका के टट्टू से गिर पड़ने की घटना के बारे में लिखें ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- (4) जब बच्चे अवकाश के दौरान घर आए तो केवल रोज़ी ही क्यों मिली ? निक्की और रानी का क्या हुआ ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- (5) निक्की, रोज़ी और रानी में आपको सबसे अच्छा कौन लगा और क्यों ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- प्रश्न-5 अपनी पुरानी यादों के आधार पर किसी पालतू जानवर या किसी आँखों देखी घटना का दस-पंद्रह पंक्तियों में वर्णन कीजिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

[illegible]

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

(1) भारत वर्ष की भौगोलिक स्थिति का परिचय दीजिए।

.....
.....

(2) वेद कितने हैं ? उनके नाम लिखिए।

.....
.....

(3) अथर्ववेद के प्रमुख विषय कौन-कौन से हैं ?

.....
.....

(4) संस्कृति से क्या तात्पर्य है ?

.....
.....

(5) संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है ?

.....
.....

(6) पुराणों की संख्या कितनी है तथा पुराणों में किसका वर्णन किया गया है ?

.....
.....

(7) पाणिग्रहण संस्कार किसे कहा जाता है ?

.....
.....

(8) आर्यों का जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण था ?

.....

.....

(9) वानप्रस्थ आश्रम से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

(10) दक्षिण की चार भाषाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

प्रश्न-2 भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व की भावना पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-3 'निष्काम कर्म' से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-4 चार आश्रमों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 भारतीय संविधान में उल्लिखित मूल अधिकारों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- (1) भारतीय संस्कृति में आश्रमों की व्यवस्था है।
- (2) भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में से एक है।
- (3) मनु ने की रचना की थी ।
- (4) दर्शन का अर्थ है से देखना।
- (5) रामायण और प्राचीन महाकाव्य हैं।
- (6) वेदों का अर्थ है ।
- (7) सामवेद के मंत्र हैं।

प्रश्न-7 सही मेल कीजिए।

- | | |
|---------------|--------------------|
| (1) वेद | अठारह |
| दर्शन | चार |
| महाकाव्य | छह |
| पुराण | सोलह |
| संस्कार | दो |
| (2) कपिल मुनि | वेदांत दर्शन |
| गौतम | पूर्वमीमांसा दर्शन |
| कणाद | योग दर्शन |
| पतंजलि | न्याय दर्शन |
| जैमिनी | सांख्य दर्शन |
| व्यास | वैशेषिक दर्शन |

प्रश्न-8 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

हिंदुओं के प्रमुख संस्कार

.....

.....

.....

.....

वेद

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भारत की अनेकता में एकता

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.
2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)